मासिक

शिविरा

पत्रिका

वर्ष : 59 | अंक : 09 | मार्च, 2019 | पृष्ठ : 52 | मूल्य : ₹15

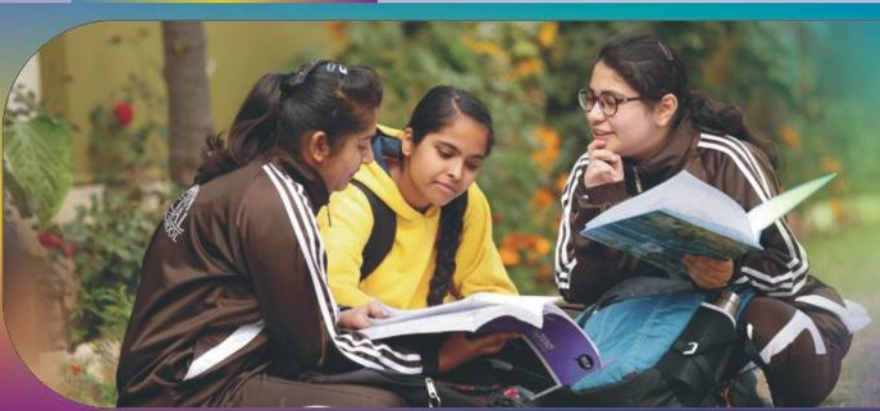

सत्यमेव जयते

श्री गोविन्द सिंह डोटासरा
राज्य मंत्री
शिक्षा (प्रारम्भिक एवं माध्यमिक) विभाग
(स्वतंत्र प्रभार)
पर्यटन एवं देवस्थान विभाग
राजस्थान सरकार

“माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान की प्रतिष्ठा पूरे देश में है। मुझे विश्वास है कि इस बार भी परीक्षाओं का प्रभावी एवं सफल आयोजन करवाकर हम अपनी श्रेष्ठता को दोहराएंगे। इसी माह में रंगों का मनभावन त्यौहार होली भी है। प्रेम, भाईचारे एवं उल्लास का त्यौहार होली हमारे जीवन में उत्साह एवं उमंग की वृद्धि करे।”

अपनों से अपनी बात

सबको मिलकर कार्य करना है

जिन योग्यताओं एवं क्षमताओं के बल पर व्यक्ति का जीवन सुखी एवं समृद्ध बनता है, उनमें सर्वोपरि स्थान शिक्षा का है। जीवन में प्रकाशधारा लाने का काम शिक्षा ही करती है। वह जड़ता और बन्धन की कार को तोड़कर स्वतंत्रता व सहजता का मार्ग प्रशस्त करती है। शिक्षा मुक्तिदायिनी एवं आनन्दप्रदायिनी होती है। इसलिए हमारे शास्त्रों में कहा गया है, 'सा विद्या या विमुक्तये।' व्यक्तित्व का विकास एवं निखार शिक्षा के दम पर ही होता है। दरअसल शिक्षा हमारे व्यक्तित्व का अनमोल आभूषण है। शिक्षा का दारोमदार शिक्षक एवं शिक्षालयों (विद्यालय-महाविद्यालय) पर टिका है। इनमें भी शिक्षकों का स्थान ऊँचा है। वे शिक्षा के दूत हैं। शिक्षकों की प्रतिबद्धता साधना एवं समर्पण में ही समाज का हित निहित है। शिक्षकों द्वारा निर्मित ऐसे उत्तम संस्कारी समाज मिलकर उत्तम राष्ट्र का निर्माण करते हैं।

सन् 1986 में तत्कालीन प्रधानमंत्री माननीय राजीव गाँधी जी ने एक नई शिक्षा नीति राष्ट्र को अर्पित की थी। शिक्षाविदों, शिक्षकों, समाजशास्त्रियों, विचारकों, अभिभावकों एवं आमजन की सलाह से बनी नई शिक्षा नीति 1986 में गुरुजन को लेकर कहा गया है 'किसी भी राष्ट्र का स्तर उसके शिक्षकों के स्तर से ऊँचा हो नहीं सकता।' यह कितनी बड़ी बता है। अतः शिक्षकों को अपनी विशिष्ट हैसियत को समझ कर कड़ी मेहनत करते हुए समाज के समक्ष नजीर प्रस्तुत करनी चाहिए। शिक्षकों का चरित्र अनुकरणीय होना चाहिए।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान की माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक (सैद्धान्तिक) परीक्षाएँ दिनांक 07 मार्च, 2019, गुरुवार से प्रारम्भ हो रही है। प्रदेश में आयोजित होने वाली विभिन्न परीक्षाओं में यह सबसे बड़ी परीक्षा है, गाँव-गाँव और ढाणी-ढाणी से हमारे बच्चे इन परीक्षाओं में बैठेंगे। परीक्षा वर्ष भर के अध्ययन-अध्यापन की कसौटी होती है। शिक्षण के माध्यम से शिक्षकों एवं अधिगम के माध्यम से विद्यार्थियों की मेहनत के परिचायक परीक्षा परिणाम होते हैं। अतः शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को ईमानदारी एवं तन्मयता के साथ परीक्षा यज्ञ में अपनी आहुति देनी चाहिए। इस कार्य में शिक्षा विभाग के साथ अभिभावकों एवं आम नागरिकों का सहयोग भी आवश्यक होता है। समाज के सहयोग से ही गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का स्वप्न साकार हो सकता है।

बोर्ड परीक्षाओं के सफल आयोजन के लिए मेरी अपील है किः-

1. विद्यार्थी परीक्षा के दिनों में तनावमुक्त रह कर दोहराने का कार्य करें। वे अपनी तैयारी में भरोसा रखकर पूर्ण आत्म-विश्वास के साथ परीक्षा में सम्मिलित होंवे। वे परीक्षा की पवित्रता को सुनिश्चित करें। नकल एवं अन्य गैर कानूनी हथकण्डे कतई न अपनाएँ।
2. संस्थाप्रधान एवं केन्द्राधीक्षकों को चाहिए कि वे विद्यालय में उपलब्ध संसाधनों का अधिकतम सदुपयोग करते हुए परीक्षाओं का सहज संचालन करें। ब्लॉक, जिला एवं मण्डल अधिकारी पूर्ण सचेष्ट रहकर मॉनिटरिंग करें।
3. परीक्षा संचालन की धुरी तो हमारे गुरूजन हैं। बोर्ड द्वारा जारी अनुदेशों के अनुसार परीक्षाओं के आयोजन करवाना उनका कर्त्तव्य ही नहीं बल्कि पदगत दायित्व है। अतः इन कर्त्तव्यों का पूर्ण निष्ठा एवं ईमानदारी के साथ निर्वहन करें।
4. अभिभावकों एवं आम नागरिकों का कर्त्तव्य है कि वे परीक्षा के दिनों में अपने परीक्षार्थी बालक-बालिकाओं को सहज वातावरण एवं विद्यालयों को अपेक्षित सहयोग प्रदान करें।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान की प्रतिष्ठा पूरे देश में है। मुझे विश्वास है कि इस बार भी परीक्षाओं का प्रभावी एवं सफल आयोजन करवाकर हम अपनी श्रेष्ठता को दोहराएंगे। इसी माह में रंगों का मनभावन त्यौहार होली भी है। प्रेम, भाईचारे एवं उल्लास का त्यौहार होली हमारे जीवन में उत्साह एवं उमंग की वृद्धि करे।

इसी माह में राजस्थान दिवस है। 70 वर्ष पूर्व 30 मार्च, 1949 के दिन राजस्थान की स्थापना हुई थी। यहाँ की कला एवं संस्कृति बेजोड़ है। वीरों की धरती है राजस्थान! राजस्थान प्रदेश की शिक्षा एवं संस्कृति के उत्थान की दिशा में हम सबको मिलकर कार्य करना है।

शुभकामनाओं के साथ...

(गोविन्द सिंह डोटासरा)

मासिक

शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते -श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।

In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 59 | अंक : 9 | फाल्गुन-चैत्र कृ. २०७५ | मार्च, 2019

प्रधान सम्पादक
नथमल डिडेल

वरिष्ठ सम्पादक
संतोष शर्मा

सम्पादक
मुकेश व्यास

सह सम्पादक
सीताराम गोदारा

प्रकाशन सहायक
नारायणदास जीनगर
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 15

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 75
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 150
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 200
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएँ।

पत्र व्यवहार हेतु पता
वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर-334 011
दूरभाष : 0151-2528875
फैक्स : 0151-2201861
E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in
shivirasecedubkn@gmail.com

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **-वरिष्ठ संपादक**

इस अंक में

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ
- दृढ़ संकल्पित होकर कार्य करें 5

आलेख
- श्रीरामकृष्ण परमहंस 6
अंशु प्रभा श्रीमाली
- आधुनिक युग की एकलव्य : काली बाई 8
प्रो. मिश्री लाल मांडोत
- खुशियों एवं रंगों का त्योंहार 9
अचलचन्द जैन
- महिला सशक्तीकरण के प्रमुख आयाम 10
रामचन्द्र स्वामी
- गुणवत्तापूर्ण शिक्षा 11
शशिकांत द्विवेदी 'आमेटा'
- बच्चों को शिष्टता का प्रशिक्षण दें 13
राजेन्द्र प्रसाद जोशी
- सफलता कदम चूमें आपके 17
विजयलक्ष्मी
- परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु सार्थक प्रयास 18
हरीश कुमार वर्मा
- सार्थक प्रयास 20
सांवरमल गहनोलिया
- शिशु मन पर प्रकृति का प्रभाव 21
सरोज राठौड़
- ढूंढ़ते रह जाओगे पीने का पानी 22
सत्यनारायण नागौरी
- साहित्य से शिक्षा की ओर अविस्मरणीय यात्राएँ 35
डॉ. हरीदास व्यास
- स्काउट गाइड प्रतियोगिता रैली, बीकानेर 37
विकास चन्द्र
- राज्य स्तरीय विज्ञान मेले में बाल वैज्ञानिकों ने दिखाया अपना कौशल 39
डॉ. महावीर कुमार शर्मा
- डिफेंस विद स्कूल 40
रजनीश दाधीच
- राष्ट्रीय मास्टर एथलेटिक्स चैम्पियनशिप में गोल्ड मैडल : **हरीराम मीणा** 41
- 7वीं राष्ट्र स्तरीय प्रदर्शनी एवं प्रोजेक्ट प्रतियोगिता : 2018-19 42
कमल कान्त स्वामी

मासिक गीत
- कारवाँ रोको नहीं : **(साभार)** 7

रपट
- प्राथमिक शिक्षा-सुदृढ़ राष्ट्र की नींव : शिक्षा मंत्री 14
नरेश कुमार बिसु
- विशिष्ट विद्यालयों के विकास हेतु प्रतिबद्ध : डोटासरा 16
अल्ताफ अहमद खान
- 'सखा संगम' का आयोजन : **सुनिता यादव** 42

स्तम्भ
- पाठकों की बात 4
- आदेश-परिपत्र 23-33
- पञ्चाङ्ग (मार्च, 2019) 34
- विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम 34
- शाला प्रांगण 47
- हमारे भामाशाह 50
- व्यंग्य चित्र-**रामबाबू माथुर** 21,38,40,41
- व्यंग्य चित्र-**एम. युसुफ शेख** 11, 22, 33

पुस्तक समीक्षा 43-46
- बड़ा अस्पताल और अन्य कहानियाँ
कहानीकार : डॉ. रवीन्द्र कुमार यादव
समीक्षक : **डॉ. नीरज दइया**
- वो कौन शख्स था जो भर गया मुझमें...
लेखिका : दीप्ति कुलश्रेष्ठ
समीक्षक : **ओम प्रकाश सारस्वत**
- गुल्लू री गुल्लक
उपन्यासकार : मधु आचार्य 'आशावादी'
समीक्षक : **नगेन्द्र नारायण किराड़ू**
- कद आवैला खरूंट
कवि : राजेन्द्र जोशी
समीक्षक : **सत्यदेव संवितेन्द्र**

मुख्य आवरण : नारायणदास जीनगर, बीकानेर

विभागीय वेबसाइट : **www.education.rajasthan.gov.in/secondary**

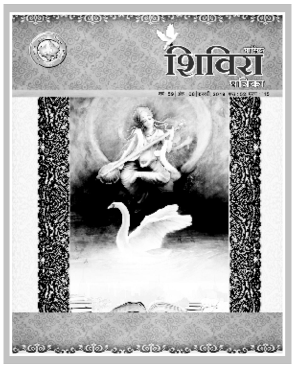

पाठकों की बात

- मैं शिविरा पत्रिका का नियमित पाठक होने के नाते अपने आपको अत्यंत सौभाग्यशाली समझता हूँ। शिविरा पत्रिका मात्र एक पत्रिका ही नहीं बल्कि एक सम्पूर्ण शिक्षक है। मानो एक शिक्षक के जीवन के समस्त रंगों को हाथ की लकीरों की भांति कागज पर उकेरा गया हो। पत्रिका के फरवरी अंक के मुख्य पृष्ठ पर माँ शारदे का अलौकिक चित्र माँ के साक्षात् दर्शनों का आभास करवाता है। आदरणीय शिक्षा मंत्री महोदय के शिक्षकों के प्रति सम्मानजनक गौरवमयी विचारों को पढ़कर शिक्षक होने पर गर्व की असीम अनुभूति होती है। आदरणीय निदेशक महोदय का शिक्षक समाज को विज्ञान के प्रति सजगता का संदेश वर्तमान युग में पूर्णतः प्रासंगिक है। अंक का एक-एक पृष्ठ नवीनता, वैभव एवं सार्थकता के परिपूर्ण है। शिविरा पत्रिका की सम्पूर्ण टीम को उनके कठिन परिश्रम, समर्पण तथा सृजनात्मकता के लिए बहुत-बहुत साधुवाद।

  -दीपक जोशी, बीकानेर

- शिविरा पत्रिका के फरवरी 2019 अंक का आकर्षक आवरण व कलेवर मन मोहित कर गया। सम्पूर्ण पत्रिका को बड़े चाव से पढ़ा। शंकर लाल माहेश्वरी का लेख 'विश्व विख्यात भारतीय वैज्ञानिक' बहुत ही ज्ञानोपयोगी रहा।

  महेश आचार्य, नागौर

- 'अपनों से अपनी बात' श्री गोविन्द सिंह डोटासरा का भव्य चित्र व शिविरा में प्रथम वार्तालाप करने को मिला। आप राज्य मंत्री है। शिक्षा विभाग की बागडोर संभाले है। उन्होंने स्वामी विवेकानन्द के शब्दों में शिक्षा की परिभाषा दी है। मनुष्यों में जो सम्पूर्णता गुप्त रूप से विद्यमान है, उसे प्रकट करना ही शिक्षा का कार्य है। आपकी पृष्ठभूमि व पारिवारिक वातावरण शैक्षिक रहा है। यह हमारे लिए प्रसन्नता का विषय है। मेरा पृष्ठ में निदेशक जी ने परीक्षा को शिक्षक की कसौटी बताया है जिस पर शिक्षक खरे उतरें, यह आशा की है। श्री ओमप्रकाश कसेरा निदेशक प्रारम्भिक शिक्षा का संक्षिप्त परिचय सचित्र मिला। वरिष्ठ संपादक जी को धन्यवाद। निदेशक महोदय का हार्दिक स्वागत। सभी सम्बद्ध आलेख रोचक हैं साहित्यिक ब्रह्मचर्य से परिपूर्ण रचनाएँ है। प्रेरक प्रसंग बहुत ही भाया। ऐसे प्रसंग हर अंक में हो, यह विनम्र निवेदन है। छत्रपति शिवाजी का आलेख अपने आप में सम्पूर्ण है। बहुत अच्छी व प्रेरक जीवन सम्बद्ध विषय सामग्री परीक्षोपयोगी है। रेडियो की पूरी जानकारी कस्वां जी ने प्रस्तुत की है। विश्वविख्यात भारतीय वैज्ञानिकों का वर्णन व उनकी देन बहुत ही महत्त्वपूर्ण लगी। बदलते परिवेश में शिक्षा शिक्षक व शिक्षार्थी शिविरा के पाठकों के लिए पठनीय है। स्वस्थ मानव शरीर के लिए सहजन कुपोषण का अंत करने वाला है। स्वास्थ्यवर्द्धन के लिए इसका प्रयोग अवश्य हो। प्रशिक्षण क्यों, किसे व कैसे? शैक्षिक पृष्ठभूमि है। पठनीय व उपादेय है। मोबाइल और इंटरनेट में उलझा बचपन संकेत कर रहा है कि बच्चों को इससे बचाना जरूरी है वरना शिक्षा जगत का बड़ा भारी नुकसान हो जाएगा। पुस्तक समीक्षा में श्री हुक्मी चंद लाम्बी वाला की पुस्तक की समीक्षक श्री रामजीलाल घोड़ेला द्वारा दी गई समीक्षा पढ़कर मूल पुस्तक पढ़ने की इच्छा हर पाठक में जाग्रत होगी।

  -टेकचंद शर्मा, झुंझुनूं

- शिविरा पत्रिका का फरवरी 2019 का अंक माँ सरस्वती के कलात्मक व सुन्दर रंग संयोजन के रूप में प्राप्त कर मन में प्रसन्नता हुई। नए शिक्षा मंत्री जी की अपनों से अपनी बात व दिशाकल्प के माध्यम से शिक्षक व परीक्षा को लेकर सार्थक व सकारात्मक प्रयासों के लिए आह्वान ध्यान देने योग्य है। डी.डी. गौतम ने प्रशिक्षण क्यों, किसे व कैसे व दिलीप परिहार के राजकीय विद्यालयों का बदलता स्वरूप आमजन का सहयोग व शिक्षकों के प्रयासों का सार्थक परिणाम प्रदर्शित करता है। शाला प्रांगण में समाचारों के साथ फोटो का आकार बड़ा किया गया जो ग्रुप फोटो के लिए सार्थक प्रयास है। शिक्षा जगत के अनेक समाचार जो अनुकरणीय व उत्साहवर्द्धक होते हैं उन्हें समाचार चतुर्दिक की तरह रि-प्रिन्ट (पुनः प्रकाशन) स्तम्भ के द्वारा शिविरा में स्थान दिया जाए तो शाला परिवार के लिए उपयोगी रहेगा। पुनः संग्रणीय अंक के लिए सम्पादक मंडल को बधाई एवं साधुवाद।

  -पूजा जीनगर, बीकानेर

▼ *चिन्तन*

सम्मानं नृगरिम्णः सा
ह्यनुशासनसंसृतिः।
अनुशासिताः समर्थाः
स्युरन्याश्चाप्यनुशासितान्।।

अर्थात्-अनुशासन पालना मानवी गरिमा का सम्मान है। जो अनुशासन पालते हैं, वे ही दूसरों को अपने अनुशासन में रख सकने में समर्थ होते हैं।

(प्रज्ञो.द्वि.मं.अ. 5-35)

सत्यमेव जयते

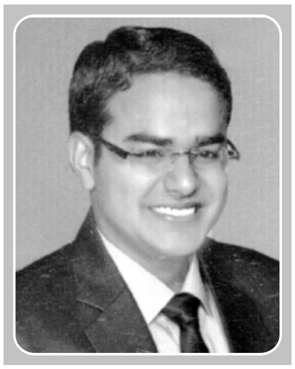

नथमल डिडेल
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

दृढ़ संकल्पित होकर कार्य करें

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता का उद्घोष करते हुए हमारी संस्कृति नारी शक्ति के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती है। महिलाओं के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए सम्पूर्ण विश्व 8 मार्च को 'विश्व महिला दिवस' मनाता है। बालिका शिक्षा के प्रति संवेदनशीलता और राज्य सरकार की कल्याणकारी योजनाओं से समाज में जागरूकता आ रही है। शिक्षा और रोजगार के बढ़ते अवसरों ने बालिकाओं और महिलाओं को सशक्त और आत्मनिर्भर बनाया है। विभिन्न क्षेत्रों के चुनौतीपूर्ण कार्यों में भी महिलाओं ने अपने कुशल नेतृत्व से नई दिशा प्रदान की है। हमारा राज्य अपना स्थापना दिवस 30 मार्च को मना रहा है, इस विशिष्ट अवसर पर हम दृढ़संकल्पित हों कि हम न केवल शिक्षा के क्षेत्र में अपितु हर क्षेत्र में चहुँमुखी प्रगति करते हुए अपने राज्य को राष्ट्र का सिरमौर बनाएँगे।

हमारा प्रयास रहा है कि राजकीय विद्यालयों में विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ उनकी नैसर्गिक प्रतिभा का भी उन्नयन हो, इस हेतु पिछले दिनों शनिवारीय बालसभाओं को विशिष्ट रूप दिया गया। सार्वजनिक/ खुले स्थान पर आयोजित हुई इन बालसभाओं में विद्यालय और स्थानीय समुदाय ने एक ही जाजम पर सहभागिता निभाई। संस्थाप्रधानों ने अपने विद्यालय के भौतिक सुधार और उत्कर्ष हेतु समुदाय के साथ समन्वय कर सहयोग लिया, वहीं विद्यार्थियों की प्रतिभा को भी अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम मिला। यह प्रेरणादायक रचनात्मकता निरन्तर बनी रहनी चाहिए।

संस्थाप्रधान अपने विद्यालय की 'विद्यालय विकास योजना' (SDP) बनाकर उसके क्रियान्वयन हेतु प्रभावी कदम उठाएँ। भामाशाहों/ कॉर्पोरेट्स का सहयोग लेकर विद्यालय विकास को नई दिशा दें। विद्यालयों में पर्यवेक्षण और संबलन का कार्य निर्बाध और प्रभावी रूप से चलता रहे। जिस विद्यालय का शैक्षिक वातावरण और परीक्षा परिणाम श्रेष्ठ रहता है, वहाँ का नामांकन लगातार बढ़ता है। सभी संस्थाप्रधान और शिक्षक आगामी सत्र हेतु अपने-अपने विद्यालयों को सही अर्थों में सर्वश्रेष्ठ, आदर्श और उत्कृष्ट विद्यालय बनाने हेतु दृढ़संकल्पित होकर कार्य करें।

मार्च माह में माध्यमिक और उच्च माध्यमिक कक्षाओं की बोर्ड परीक्षा है। परीक्षा, शिक्षकों और विद्यार्थियों के द्वारा सत्रपर्यन्त किए गए कठिन परिश्रम के मूल्यांकन का माध्यम है। हमारा प्रयास रहे कि परीक्षा में प्रत्येक विद्यार्थी भयमुक्त, तनावरहित रहकर सहजरूप से अपने ज्ञान का प्रकटीकरण कर सके। परीक्षा केन्द्र सकारात्मकता से परिपूर्ण रहें। हमारे प्रबन्धन में परीक्षा का महत्त्व और गरिमा सर्वोच्च प्राथमिकता में रहे।

सभी के उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना के साथ...

(नथमल डिडेल)

"परीक्षा, शिक्षकों और विद्यार्थियों के द्वारा सत्रपर्यन्त किए गए कठिन परिश्रम के मूल्यांकन का माध्यम है। हमारा प्रयास रहे कि परीक्षा में प्रत्येक विद्यार्थी भयमुक्त, तनावरहित रहकर सहजरूप से अपने ज्ञान का प्रकटीकरण कर सके। परीक्षा केन्द्र सकारात्मकता से परिपूर्ण रहें। हमारे प्रबन्धन में परीक्षा का महत्त्व और गरिमा सर्वोच्च प्राथमिकता में रहे।"

आध्यात्मिक ज्ञान का पर्याय

श्रीरामकृष्ण परमहंस

❒ अंशु प्रभा श्रीमाली

सम्पूर्ण विश्व में भारत भू-भाग अपनी विशिष्टताओं से सदैव अग्रणी रहा है। प्रकृति के रहस्यों को पहचानने का जितना कार्य यहाँ हुआ है अन्यत्र कहीं नहीं हुआ। इसी प्रकार प्राणी-जीवन में योगदान करने वाले तत्त्वों को हमारे ऋषियों ने जिस दृष्टि से देखा वह भी अद्‌भुत है। उनकी दृष्टि में वे सभी पूज्य हैं, आदरणीय हैं, यथा-पृथ्वी हमें धारण करती है अतः वह जननीरूपा मानी गई, सूर्य, चंद्र, वृक्षादि हमें जीवन व पुष्टता देते हैं अतः उन्हें भी पितृ एवं मातृ तुल्य माना गया। हमारी समस्त सृष्टि भी इन्हीं तत्त्वों की अमृत वृष्टि से दृष्टिगोचर हो रही है।

ऋषियों का यह भी चिन्तन का विषय रहा कि मानव-जीवन सद्‌गुणों से युक्त कैसे बने, उनके जीवन की शैली व चरित्र किस प्रकार उत्तम बने कि वह स्वयं का कल्याण कर सके।

ऋषियों के इसी चिन्तन का परिणाम था- वेदों की रचना! मानव ने जब-जब भी वेदों में उल्लिखित आदर्श जीवन के नियमों का पालन किया है, तब-तब उसका कल्याण ही हुआ है। इसके उदाहरण हमें समय-समय पर इस भूमि पर जन्में महापुरुषों के जीवन में मिलते हैं। इसका श्रेष्ठ उदाहरण आज से लगभग 185 वर्ष पूर्व बंगाल के हुगली जिले के अन्तर्गत कामारपूकुर ग्राम में जन्मे गदाधर चट्टोपाध्याय जो आगे चलकर 'श्री रामकृष्ण परमहंस' के नाम से प्रख्यात हुए, में परिलक्षित होता है।

भगवती काली के अनन्य साधक श्री रामकृष्ण देव ने अपने जीवन में उस वैदिक उपासना पद्धति का ही अनुसरण किया जिसकी पालना कर अनेक महापुरुषों ने अपने इहलौकिक व पारलौकिक जीवन को सार्थक बनाया। मानव की अन्तः प्रकृति जिन नियमों के अधीन चलती है उन नियमों के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त कर आध्यात्मिक साधना के द्वारा ही श्रीरामकृष्ण देव ने उन पर अधिकार-विस्तार करने के अधिकारी बन चुके थे। इसके लिए जीवन में पवित्रता-एकाग्रता का होना आवश्यक

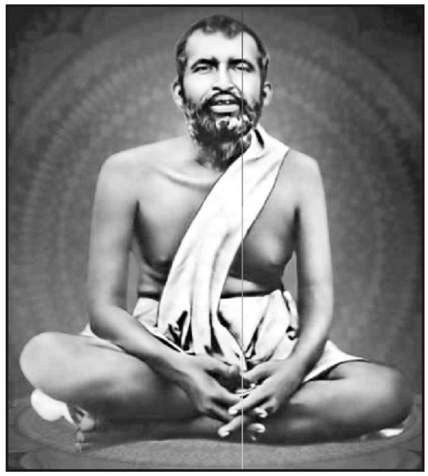

है, जो उनके व्यक्तित्व में परिलक्षित होती थी। उनका शरीर सदैव स्वस्थ, बुद्धि ज्ञान युक्त व आत्मा निर्मलता से परिपूर्ण रही।

श्री रामकृष्ण परमहंस का जीवन आध्यात्मिक ज्ञान से परिपूर्ण था। जब हम उनके सम्पूर्ण जीवन-काल में से निम्नांकित कतिपय प्रसंगों को पढ़ते हैं तो वे इस तथ्य की पुष्टि करने में पर्याप्त हैं।

प्रथम- जब उन्हें यह भान हुआ कि धन-रुपया, अहंकार को बढ़ाने वाला है, पापकर्म करवाता है। तब उन्होंने इसे मिट्टी मानकर त्याग दिया और उसके बाद उन्होंने जीवन भर इस ओर न देखा। यहाँ तक कि सोते समय उन्हें कांचन या धातु का स्पर्श हो जाता तो उन्हें असहनीय पीड़ा होती थी। यह त्याग, उनकी दृढ़ इच्छा शक्ति का प्रतीक था।

एक बार जब नरेन्द्र नाथ (स्वामी विवेकानन्द) को इस बात का पता चला तो उन्होंने यह जाँचने के लिए उनके बिछौने के नीचे एक चाँदी का रुपया रख दिया। श्री रामकृष्ण देव उस दिन कलकत्ते चले गए थे, जब वे लौटकर दक्षिणेश्वर आए और बैठने के लिए बिछौना छूते ही वे वेदना से व्याकुल हो गए। जब उन्हें पता चला कि ऐसा नरेन्द्रनाथ ने किया तो वे उन पर असंतुष्ट नहीं हुए। वे जानते थे कि शिष्य को गुरु की परीक्षा लेने का पूर्ण अधिकार है और नरेन्द्रनाथ तो निष्कपट और सत्यनिष्ठ है।

द्वितीय- जो लोग भगवान के लिए सब कुछ त्यागकर श्रीरामकृष्ण देव-संन्यासी संघ में सम्मिलित हुए थे, उन सभी बालक भक्तों से श्रीरामकृष्ण देव कहते थे कि उनका कहना ही वे सत्य मान न लें, स्वयं विचार से समझकर अपने जीवन में उस बात की सत्यता की उपलब्धि कर उन्हें वे ग्रहण करें। किसी की विचारधारा पर दबाव डालकर वे कुछ लाद नहीं देते थे और उनकी बात न मानी हो तो किसी पर वे असंतुष्ट भी नहीं होते थे। चिन्ता राज्य में वे सबको अबाध स्वतंत्रता देते थे। सबके ऊपर सीमा-रहित प्रेम से सबका हृदय पूर्ण कर रखते थे। उनके इस प्रेमपूर्ण स्वभाव के कारण ही अध्यात्म ज्ञान की प्राप्ति हेतु युवक दक्षिणेश्वर में खिंचे चले आते थे। अपने लिए कुछ भी न माँग कर सबको हृदय से प्यार करना ही मनुष्यत्व विकास का राजपथ है। वे कहा करते थे-

'छाड़ो विद्या जप यज्ञ बल, स्वार्थ हीन प्रेम जे सम्बल।
हे प्रेमिक, स्वार्थ मलीनता अग्निकुण्डे करो विसर्जन।
भिक्षुकेर कबे बलो सुख? कुपात्र हये किबा फल?
दाओ आर फिरे नाहि चाओ, थाके यदि हृदये सम्बल।'

अर्थात्- विद्या, जप, यज्ञ बल छोड़ दो, स्वार्थ हीन प्रेम ग्रहण करो। हे प्रेमिक, स्वार्थ मलिनता अग्निकुण्ड में झोंक दो। भिक्षुक को कब सुख है, बताओ। कृपा पात्र होकर रहने से क्या फल? यदि हृदय में सार तत्व हो तो उसे देते चलो, वापस लेने की इच्छा न रखो।

शिक्षक और शिक्षार्थी के मध्य यही प्रेमाभाव रहने से ही शिक्षा दान और शिक्षा ग्रहण दोनों ही अति सहज और सुन्दर रूप से होता है और वह आंतरिक तथा आनन्दप्रद भी होता है।

तृतीय-धर्म से युक्त उनकी उपासना का ही परिणाम था कि उन्होंने उस दिव्य मार्ग की ओर प्रस्थान किया, जहाँ उन्हें सृष्टिकर्त्ता अपने इष्ट के दिव्य-तेज के दर्शन प्राप्त हुए। कहते हैं कि जब मनुष्य की भक्ति चरम पर होती है तो वह सम्पूर्ण जगत में अपने आराध्य का ही दर्शन करता है। यही स्थिति श्री रामकृष्ण देव की थी।

वे संसार की समस्त स्त्रियों में अपनी आराध्या 'जगतजननी माँ काली' के ही दर्शन किया करते थे। उनके यह भाव दुर्गा सप्तशती के एकादश अध्याय में उल्लेखित पंक्ति-'स्त्रियः समस्ताः सकलाः जगत्सु' की सार्थकता की पुष्टि करने वाले थे।

एक बार जब उनकी पत्नी (श्री माँ शारदा) ने उनसे पूछा कि आप मुझे किस दृष्टि से देखते हैं? तब श्री रामकृष्ण देव ने तपाक से उत्तर दिया कि मैं आपको मेरी आराध्या 'माँ काली' व मेरी 'जननी' के स्वरूप में सदा ही देखता हूँ। उपासना में यह निष्ठा ही उनके 'परमहंस' होने को प्रमाणित करती है।

चतुर्थ- वे प्रकाण्ड पंडित न होने पर भी माँ काली की कृपा से उन्होंने वह दिव्य ज्ञान प्राप्त किया जो बड़े-बड़े तपस्वियों-साधकों के लिए भी दुर्लभ है। उन्होंने अपनी साधना के द्वारा ही सर्व धर्म के अन्तर्निहित सत्य का प्रत्यक्ष अनुभव किया। वे कहा करते थे कि मैं किसी भी पद्धति को अपनाकर उस परम शक्ति के दर्शन कर सकता हूँ। अर्थात् उन्होंने यह प्रमाणित किया कि धर्म चाहे भिन्न-भिन्न हो परन्तु सच्चिदानन्द परमेश्वर एक ही है। वही हमारे समस्त ज्ञान, शक्ति और आनन्द के मूल हैं। आंतरिक होकर जो जिस भाव से उन्हें पुकारता है, उसी भाव से उन्हें देख सकता है। चूँकि मूल में वे एक ही हैं। इस संदर्भ में उनका यह कथन था कि तकिए के गिलाफ लाल-पीले इत्यादि भिन्न-भिन्न रंगों के हो सकते हैं, परन्तु उनमें भरी हुई रुई समान है।

पंचम-श्री रामकृष्ण देव ने अपने दिव्य ज्ञान को निज के हितार्थ न रखकर उसे जन-जन के कल्याणार्थ लगाया व अपने सरल किन्तु उत्तम उपदेशों के माध्यम से व्यक्तियों में चेतना का विकास किया। धर्म के क्षेत्र में पाखण्ड-आडम्बर करने वाले तथाकथित ढोंगी-धर्माचार्यों को उन्होंने सन्मार्ग का अनुसरण करने के महत्त्व को बतलाया। वे कहा करते थे कि सच्चे ज्ञान को किसी प्रचार की आवश्यकता नहीं है, जैसे फूल खिलने पर भौंरे आप ही आप आ जाते हैं, वैसे ही ब्रह्मज्ञ के पास धर्म पिपासु लोग आकर्षित होकर स्वतः ही आया करते हैं।

षष्ट-उनके तपोबल का ही परिणाम था कि उन्होंने स्वामी विवेकानन्द को पहिचाना और उन्हें उनके जन्म लेने के उद्देश्य से अवगत करवाया। अपने परम प्रिय शिष्य को 'स्पर्श दीक्षा' के माध्यम से दीक्षित करके श्री रामकृष्ण देव ने 'दीक्षा' शब्द की सार्थकता (शिष्याय दिव्य ज्ञानं ददाति सर्वपापक्षयं च करोतीति) को पूर्ण करते हुए श्री नरेन्द्रनाथ को श्री विवेकानन्द का स्वरूप प्रदत्त किया। सद्गुरु से प्रदत्त बल के कारण ही स्वामी विवेकानन्द ने वर्षों से सुषुप्तावस्था में रह रहे वैदिक धर्म के पुनर्जागरण का कार्य किया और पूरे विश्व में इसकी श्रेष्ठता का परिचय करवाया। प्रत्येक भारतवासी को भारतीय होने पर गर्व करने का संदेश दिया।

श्री रामकृष्ण परमहंस जैसे महापुरुषों ने बार-बार इस धरा पर अवतरित होकर यही सिद्ध किया है कि वेदों में उल्लेखित ज्ञान के अनुशीलन से ही शीलयुक्त जीवन क्रम बनाया जा सकता है। यदि हम उस महान् विभूति के उपदेशों को भी अपने जीवन में आत्मसात् करते हैं तो हमारा जीवन सार्थक बन सकता है।

प्रधानाध्यापिका
राज.उ.प्रा. विद्यालय, पावा (पाली)
मो: 6377300618

मासिक गीत

कारवाँ रोको नहीं

कारवाँ रोको नहीं निर्माण का,
है सृजन की कामना, तो साथ दो!

धूल होने के लिए टकरा रहे जो,
उन पहाड़ों से कहो, वे राह छोड़ें,
चल पड़े हैं जो चरण विश्वास लेकर,
अब उन्हें वे मोड़ने की चाह छोड़ें,

तप पराजित कब हुआ इनसान का,
हो विजय की चाहना, तो साथ दो।
है सृजन की कामना, तो साथ दो!

हम चले, विपरीत आँधी में हमारे,
वक्ष से तूफान टकराता चला,
चल बवंडर बिजलियों के दौर से,
रोशनी के फूल बिखराता चला,

सब विरोधी शक्तियाँ आकर झुकीं,
हो चरण की साधना, तो साथ दो।
है सृजन की कामना, तो साथ दो!

ले रहा वैराग्य अब संहार, खुद,
ध्वंस का दिल बैठता जाता स्वयं,
मौत मुग्धा जिंदगी के नृत्य पर,
आदमी खुश नाचता, गाता स्वयं,

जन्म है नूतन विभा के प्राण का,
तुम नई संभावना का साथ दो।
है सृजन की कामना, तो साथ दो!

धन्य है विभु का सृजन, उसकी कला,
जो रचा इनसान को सुंदर बना,
आदमी तेरी कला कितनी गजब,
यों गढ़ा पाषाण जो ईश्वर बना,

रह न जाए प्राण ये निष्प्राण बन,
हो लगन की चेतना, तो साथ दो।
है सृजन की कामना, तो साथ दो!

(साभार : अखण्ड ज्योति)

विश्व महिला दिवस

आधुनिक युग की एकलव्य :काली बाई

❒ प्रो. मिश्री लाल मांडोत

राजस्थान की एक छोटी सी रियासत डूंगरपुर में रास्तापाल नामक गाँव में काली बाई नामक एक आदिवासी भील बालिका थी। 1940 ई. के दशक में सम्पूर्ण देश में एक ओर ब्रिटिश हुकूमत के विरुद्ध स्वतंत्रता आन्दोलन चल रहा था, वहीं दूसरी ओर नानाभाई खाँट भोगीलाल पांड्या के नेतृत्व में 'राजस्थान सेवा संघ द्वारा गाँव-गाँव में शिक्षा की प्रचार-प्रसार करने, पाठशालाएँ खुलवाने तथा आदिवासी भील बालकों को पढ़ने-पढ़ाने की ओर प्रेरित करने का महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहे थे। उनका यह कार्य किसी भी प्रकार से राजद्रोह अथवा राज्य विरोधी नहीं था। सेवा संघ के प्रयासों से अनेक गाँव और कस्बों में पाठशालाएँ खुल चुकी थीं। सेवा संघ द्वारा भील बाहुल्य वाले गाँव रास्तापाल में भी एक बेसिक पाठशाला का संचालन किया जा रहा था जिसकी संस्थापना नानाभाई खाँट ने की थी और सेंगाभाई इस पाठशाला के मुख्य अध्यापक थे। बारह वर्षीय आदिवासी भील बालिका काली बाई भी इसी पाठशाला में अध्ययन कर रही थी।

तत्कालीन डूंगरपुर रियासत के महारावल लक्ष्मणसिंह नहीं चाहते थे कि उनकी रियासत में शिक्षा का प्रचार-प्रसार हो। उनकी मान्यता थी कि उनकी रियासत में यदि भील और किसान शिक्षित हो गए तो वे नागरिक अधिकारों की मांग करना शुरू कर देंगे तथा किसी भी समय उनकी राजसत्ता को उखाड़कर फेंक देंगे। इसी विचारधारा के वशीभूत महारावल लक्ष्मणसिंह ने इन सभी पाठशालाओं को बंद कराने के आदेश अपनी पुलिस को जारी कर दिए थे।

राज्य सरकार के आदेशानुसार विगत 25 वर्षों से चलने वाले वागड़ छात्रावास से सभी भील और पटेल छात्रों को निकाल दिया गया। ये छात्र सेवा संघ द्वारा राज्य के बाहर पढ़ने के लिए नहीं भेज दिए जाएँ इसके लिए पुलिस को निगरानी रखने की हिदायत दी गई। सेवा संघ की पाठशालाओं एवं छात्रावास बंद करने तथा भील जनता को आतंकित करने के उद्देश्य से राज्य सरकार ने कठोर दमनचक्र चलाना आरंभ कर दिया। महारावल लक्ष्मणसिंह के निर्देश पर पुलिस एवं राज्याधिकारियों ने मिलकर सेवा संघ की पाठशालाओं को बंद कराने के लिए धावा बोलना शुरू कर दिया। स्कूल में पढ़ने वाले छात्रों और पढ़ाने वाले अध्यापकों को पीटना तथा उनका पक्ष लेने वालों के साथ भी ऐसा ही व्यवहार किया जाने लगा। इसी अभियान के क्रम में महारावल के आदेशानुसार 19 जून, 1947 ई. के दिन डूँगरपुर के एक मजिस्ट्रेट के साथ कुछ सिपाही जीप में बैठकर रास्तापाल की पाठशाला बन्द कराने पहुँचे। जीप की आवाज सुनते ही चारों ओर से भीड़ एकत्रित हो गई। रास्तापाल में यह पाठशाला नानाभाई खाँट के मकान में चलती थी। मजिस्ट्रेट, पुलिस के एस.पी. और सिपाही पाठशाला में घुस गए। इस समय तक छात्र पढ़ने नहीं आए थे। नानाभाई खाँट और स्कूल के अध्यापक सेंगाभाई परस्पर बातचीत कर रहे थे।

कमरे में प्रविष्ट होते ही मजिस्ट्रेट ने नानाभाई को आदेश दिया कि वह तत्काल स्कूल बंद करके चाबियाँ उन्हें सुपुर्द। कर दें। नानाभाई खाँट ने कहा कि स्कूल तो भोगीलाल पंड्या के आदेश से ही बन्द किया जा सकता है। मजिस्ट्रेट ने कहा कि में महारावल साहब का हुक्म लेकर आया हूँ कि इस पाठशाला को तुरन्त बन्द कर दिया जाए। नानाभाई खाँट ने महारावल के उस आदेश को मानने से इन्कार कर दिया, जिसके प्रत्युत्तर में पुलिस ने नानाभाई खाँट और सेंगाभाई पर अंधाधुंध लाठियाँ बरसाना शुरू कर दिया। उनसे बार-बार पूछा गया कि क्या वे स्कूल बंद करने को तैयार है? उत्तर में ना करने पर पुलिस ने उन्हें बन्दूक के कुंदों से मार-मारकर बुरी तरह घायल कर दिया। सैकड़ों स्त्री-पुरुष और बालक वहाँ उपस्थित थे, किन्तु पुलिस के आतंक से भयभीत होकर सभी मूकदर्शक बने हुए थे। पुलिस दोनों पर लाठी-डण्डे बरसाती हुई उन्हें अपने कैम्प की ओर ले जाने लगी। एक पुलिसकर्मी की बन्दूक का कुन्दा नानाभाई खाँट के किसी मर्मस्थल पर लग गया, जिसके कारण वे मार्ग में एक खेल में गिर गए तथा उनका वहीं प्राणान्त हो गया। सेंगाभाई भी बेहोश हो गए। पुलिस पूरी तरह अपना आतंक जमाने पर आमादा थी। इसी कारण उन्होंने सेंगाभाई की कमर को रस्सी से बांधी तथा इस रस्सी का दूसरा सिरा पुलिस की जीप से बांध दिया। जीप चलने लगी तथा रस्सी से बंधे हुए सेंगाभाई एक मृतक पशु के समान घसीटे जाने लगे। भील बालिका काली बाई इस समय अपने खेत में घास काट रही थी। भीड़ को देखकर वह भी दौड़ती हुई वहाँ आ गई। जब उसने देखा कि उसके मास्टरजी सेंगाभाई को पुलिस की जीप के पीछे बाँधकर घसीटा जा रहा है तो उससे नहीं रहा गया। वह चिल्लाने लगी- 'मेरे मास्टरजी को छोड़ दो। किन्तु सिपाहियों ने उस बालिका के चिल्लाने पर तनिक भी ध्यान नहीं दिया। काली बाई दौड़ती हुई जीप के निकट पहुँची और उसके हाथ में घास काटने की जो दराँती थी, उससे उस रस्सी को काट दिया जिसके द्वारा सेंगाभाई को बाँधकर घसीटा जा रहा था। पुलिस की जीप रुक गई और उन्होंने पुनः सेंगाभाई को रस्सी से बाँधने का प्रयास किया। किन्तु काली बाई उनके मार्ग में अवरोधक बनकर खड़ी हो गई। उसने साहसपूर्वक सेंगाभाई को पुनः रस्सी से बाँधने से पुलिस को रोक दिया। काली बाई की वीरता, दृढ़ता और अदम्य साहस को देखकर वहाँ उपस्थित लोगों में से कुछ आगे बढ़ आए तथा सेंगाभाई और कालीबाई के आसपास एकत्रित हो गए कालीबाई ने उपस्थित लोगों में से किसी से पानी मंगवाया तथा सेंगाभाई पर पानी छिड़ककर उन्हें होश में लाने का यत्न करने लगी। इसी मध्य पुलिसवाले काली बाई को रोकते और धमकाते रहे किन्तु काली बाई पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा और वह अपने अध्यापकजी की सेवा करती रही। अब तक घटना स्थल पर सैकड़ों लोग जमा हो चुके थे। पुलिस अपना आतंक जमाना चाहती थी। इसी कारण उन्होंने एकत्रित भीड़ कर अंधाधुंध

गोलियां चलाना शुरू कर दिया जिससे काली बाई सहित अनेक महिलाएँ घायल हो गई। यह स्थिति देखकर वहाँ उपस्थित जनसमुदाय में जोश आ गया और उन्होंने मारू ढोल बजाना शुरू कर दिया। 6 मारू ढोल आपात स्थिति का सूचक है। डूँगरपुर के राज्याधिकारी भीलों के इस संकेत को भली प्रकार समझते थे। इसी कारण सभी राज्याअधिकारी और पुलिसकर्मी अपने प्राण बचाने हेतु जीप में सवार होकर तुरन्त वहाँ से भाग छूटे तथा गुजरात की सीमा में प्रविष्ट हो जाने के बाद उन्होंने राहत की साँस ली।

मारू ढोल की आवाज सुनते ही आए हुए संकट का मुकाबला करने के लिए आदिवासी भील अपने-अपने हथियार लेकर घटनास्थल पर आ पहुँचे। मजिस्ट्रेट तथा पुलिसकर्मी तो पहले की भाग चुके थे। उपस्थित लोगों ने नानाभाई के शव, घायल सेंगाभाई, काली बाई एवं अन्य महिलाओं को खाटों पर उठाया तथा उनका यह काफिला 30 मील की यात्रा करते हुए डूंगरपुर की ओर चल पड़ा। गाँव-गाँव से हजारों लोग इस काफिले के साथ चल पड़े। सभी घायलों को डूंगरपुर के राजकीय चिकित्सालय में भर्ती करवाया गया। लगभग चालीस घंटे तक काली बाई बेहोशी की हालत में जीवन-मृत्यु से संघर्ष करते हुए चिरनिद्रा में विलीन हो गई। सेंगाभाई मौत के मुँह में जाने से बच गए।

अपने मास्टरजी को बचाने के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग करने वाली वीरांगना काली बाई की स्मृति में रास्तापाल में वहाँ की जनता ने एक बड़े सार्वजनिक पार्क का निर्माण कराया तथा उसमें नानाभाई खाँट और काली बाई की प्रतिमाएँ स्थापित की गई। यहाँ प्रतिवर्ष 19 जून को एक बड़ा मेला आयोजित किया जाता है जिसमें हजारों लोग एकत्रित होते हैं तथा नानाभाई और काली बाई के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। काली बाई के साहस, त्याग और बलिदान के लिए लोकगीत गाए जाते हैं, उनके उत्सर्ग को चित्रित करने वाले नाटक का मंचन किया जाता है, डूंगरपुर एवं आसपास के क्षेत्र के लोग काली बाई को आधुनिक युग की एकलव्य मानते हैं तथा उसके प्रति श्रद्धावनत होते हैं।

पूर्व प्राचार्य
1201, कलिंगा, नीलकण्ठ किंगडम
विद्या विहार (वेस्ट) मुम्बई-400086
मो: 9414416720

होली

खुशियों एवं रंगों का त्योंहार

❒ अचलचन्द जैन

भारतीय त्योंहारों में होली का विशेष महत्त्व है। होली ही एक मात्र ऐसा त्योंहार है, जब लोग अपने जीवन की सारी खुशियों को खुलकर प्रकट करते हैं। कोई रंग बिखेर कर खुश होता है, तो कोई नाचकर, तो कोई फाग के गीत गाकर खुशियाँ प्रकट करता है। होली का त्योंहार फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। माघ महीने की वसंत पंचमी से ही फूलों की होली खेलना शुरू हो जाता है। वसंत के आगमन से ही वातावरण में सुगन्धित बयार चलने लगती है। खेतों, खलिहानों और चौपालों पर चंग बजाते हुए लोगों की टोलियाँ होली के विभिन्न गीतों को गाते हुए लय-ताल पर नाचते हैं। 'लूर' और 'घूमर' लेती नारियाँ फाग के गीत गाकर खुशी के अनोखे आनन्द में डूब जाती हैं। चंग, ढोल और मंजीरों की ध्वनि पर कई लोग 'डांडिया' रास की तरह 'गैर' नाचते हैं। 'गैर' पुरुषों द्वारा किया जाने वाला एक पारंपरिक नृत्य है। पेड़-पौधे भी नव-पल्लवित होकर होली की खुशी में झूमते नजर आते हैं। कहते हैं कि जब ज़िन्दगी सारी खुशियों को स्वयं में समेटकर प्रस्तुति का बहाना ढूँढ़ती है, तब सृष्टि हमें होली जैसा बहुमूल्य त्योंहार प्रदान करती है। होली में प्रहलाद की भक्ति, भगवान शिव का आनन्द भाव और श्रीकृष्ण का प्रेम घुला है। इसी कारण समूचे भारत से भक्तगण होली मनाने के लिए मथुरा, वृंदावन, नन्दग्राम और बरसाना में इकट्ठे होते हैं।

होली के दिनों में घरों में खीर, पूरी, करबा आदि बनाते हैं। करबा दही में चावल और शक्कर मिलाकर बनाया जाता है। आवश्यकतानुसार उसमें नारियल की गिरी एवं काजू-किशमिश भी डाले जाते हैं। इसके अलावा इस दिन गुझिया आदि व्यंजन भी बनाए जाते हैं। उत्तर प्रदेश के प्रत्येक घर में बेसन की सेव और दही बड़े जरूर बनाए जाते हैं।

रंगों का त्योंहार होली का ख्याल आते ही मन-मस्ती में झूमने लगता है। ये रंग ही हैं, जो हमारी ज़िंदगी को भी रंगीन बना देते हैं। रंगों का

धार्मिक महत्त्व भी है। यही कारण है कि पूजा के स्थान पर रंगोली बनाई जाती है। कुमकुम, हल्दी, अबीर, गुलाल और मेंहदी के रूप में पाँच रंग हर पूजा में शामिल हैं। रंग का पर्याय ऊर्जा, उत्साह और उमंग से है। ये रंग हममें खुलकर जीने का उत्साह भरते हैं।

लाल रंग का प्रयोग हर शुभ अवसर पर किया जाता है। पीला रंग पवित्रता का प्रतीक है। होली के दौरान वातावरण में पीले रंग की अधिकता होती है। इस मौसम में खिलने वाले फूल भी अमूमन पीले रंग के होते हैं। यह रंग समृद्धि एवं यश को इंगित करता है। हरा रंग प्रकृति का सबसे प्यारा रंग है, जो नए जीवन के शुरूआत का संकेत देता है। नीला रंग गम्भीर और स्थिरता का प्रतीक है। जल और आकाश का रंग नीला माना गया है। इस तरह से यह रंग प्रकृति से सम्बन्धित है। काला रंग प्रभुत्व का प्रतीक है क्योंकि सभी रंग अपना अस्तित्व खोकर इसमें समाहित हो जाते हैं। सफेद रंग सभी रंगों का जनक माना जाता है। यह शान्ति का प्रतीक है। इस तरह होली का प्रत्येक रंग नए जीवन के संचार की प्रेरणा देता है। होली के दूसरे दिन रंग खेला जाता है। रंग, गुलाल-अबीर आदि से वातावरण रंगीन हो उठता है। चारों ओर रंग ही रंग दिखाई देता है। इस तरह होली खुशियों एवं रंगों का त्योंहार है जो हमारे जीवन में सतरंगी इन्द्र धनुष की तरह खुशियों के रंग बिखेरते हुए जीवन जीने की प्रेरणा देता है।

गाँधी मुहत्तो का वास,
सायला-जालोर-343022 (राज.)
फोन 02977-272079

विश्व महिला दिवस

महिला सशक्तीकरण के प्रमुख आयाम

❒ रामचन्द्र स्वामी

तेजी से ग्लोबलाईज्ड होती इस दुनिया में भारतीय महिला शिक्षा का चेहरा बहुत तेजी से बदला है।

वैदिक काल में शिक्षा की व्यवस्था आश्रमों तथा गुरुकुलों में होती थी। उस समय में आश्रम व गुरुकुल प्रायः जनः कोलाहल से दूर प्रकृति की सुरम्य गोद में स्थित होते थे। उस समय लड़कियों की शिक्षा के लिए अलग से गुरुकुल या आश्रम नहीं थे। फिर भी उस समय में भी शकुन्तला, मैत्रेयी, गार्गी, अपाला, घोषा, चेनप्पा, गौमती, प्रियम्वदा और अनुसुईया जैसी अनेक स्त्रियाँ उच्च शिक्षा में अपना विशेष स्थान रखती थी। महिलाओं को शैक्षिक अवसर प्रदान करना शिक्षा के स्रोत में प्राचीन काल से लेकर स्वतंत्रता पश्चात् वर्तमान समय तक लगातार अपने इष्टतम स्तर पर रहा है।

महिलाओं के लिए बहुत सी योजनाएँ व धन राशि व्यय की जा रही है। उस दृष्टि से बालिका शिक्षा का विकास नहीं हो पा रहा है। क्योंकि बहुत सी योजनाएँ सामान्य जन समुदाय की पहुँच से दूर ही रह जाती है। इन योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन नहीं होने के कारण ये कागजों एवं घोषणाओं तक ही सीमित रह जाती है।

वर्तमान समय में महिलाओं के शैक्षिक स्तर में सुधार व बालिकाओं की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए महिला सशक्तीकरण के आयामों की जानकारी अति आवश्यक है।

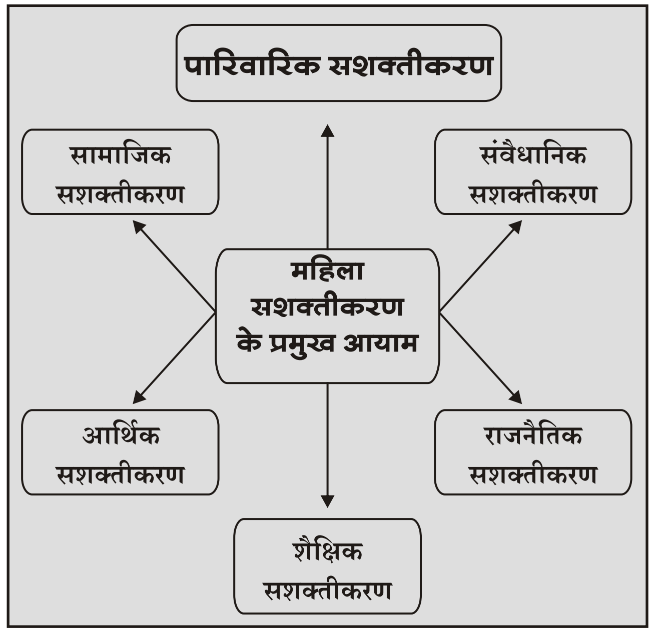

पारिवारिक सशक्तीकरणः– पारिवारिक सशक्तीकरण से तात्पर्य है कि परिवार के अन्दर सभी महिला सदस्यों को उनके नैसर्गिक अधिकार, प्रतिष्ठा परक परिस्थिति, आर्थिक स्वायत्तता तथा समता परक निर्णय लेने के अधिकार से है। परिवार में महिलाओं को पुरुषों के बराबर समानता का अधिकार देना चाहिए। परिवार में पोषण, स्नेह, शिक्षा, सुरक्षा, अधिकार आदि में किसी भी दृष्टि से बालिकाओं व बालकों के मध्य विभेद नहीं करना चाहिए।

सामाजिक सशक्तीकरणः– सामाजिक सशक्तीकरण से तात्पर्य समाज में फैली पुरुष प्रधान की मानसिकता को दूर कर स्त्रियों को सम्मान व समानता का स्थान देने से है। सामाजिक प्रौद्योगिकी के द्वारा महिलाओं के प्रति परम्परागत अंधविश्वास, शोषण अधिवृत्ति, आर्थिक स्तर, रोजगार, यौन भेदभाव, नकारात्मक तथा अशिक्षा प्रवृत्ति आदि का निराकरण करना चाहिए।

आर्थिक सशक्तीकरणः– महिलाओं की आर्थिक स्थिति का उन्नयन करने, उन्हें धनार्जन के पर्याप्त अवसर व साधन उपलब्ध करवाने तथा आर्थिक मुद्दों पर अपनी सलाह देने व निर्णय लेने का अधिकार देना चाहिए।

शैक्षिक सशक्तीकरणः– शैक्षिक सशक्तीकरण को नारी सशक्तीकरण के सभी आयामों का आधार कहा जाता है, जिसके द्वारा महिलाओं को शिक्षित करके विभिन्न क्षेत्रों में उन्हें क्रियाशील, विवेकशील तथा प्रभावशाली बनाकर स्वरोजगार हेतु प्रेरित करना चाहिए। पुरुषों को अपनी संकुचित मानसिकता का त्याग कर स्त्रियों को घर की चारदीवारी से बाहर जाकर अपने स्व विवेक से निर्णय लेने की स्वतंत्रता प्रदान करनी चाहिए।

राजनीतिक सशक्तीकरणः– इसका अर्थ है कि महिलाओं को न केवल राजनीति में प्रतिभागी बनाना है, बल्कि पुरुषों के समकक्ष भी लाना है और राजनैतिक शासन व्यवस्था व संवैधानिक स्तर पर बनाए गए कानून व नीतियों, अधिनियमों, नियमों, अध्यादेशों व निर्णय आदि के माध्यम से महिलाओं की परिस्थितियों में सुधार लाना चाहिए।

संवैधानिक सशक्तीकरणः– इसको महिला सशक्तीकरण के आयामों का सुरक्षा कवच कहा जाता है। भारतीय दंड संहिता कानून महिलाओं को सुरक्षात्मक आवरण प्रदान करता है ताकि समाज में घटित होने वाले विभिन्न अपराधों से वे सुरक्षित रह सकें। भारतीय दंड संहिता में महिलाओं के प्रति होने वाले अपराधों अर्थात हत्या, घरेलू हिंसा, आत्म हत्या प्रेरणा, दहेज मृत्यु, बलात्कार, अपहरण व भ्रूण हत्या आदि को रोकने का प्रावधान है। उल्लंघन की स्थिति में गिरफ्तारी एवं न्यायिक दंड व्यवस्था का उल्लेख संवैधानिक नियमों में किया गया है। भारत में महिलाओं की रक्षा हेतु कानूनों की कमी नहीं है। भारतीय संविधान के कई प्रावधान विशेषकर महिलाओं के लिए बनाए गए है। इस बात की जानकारी महिलाओं को होनी चाहिए।

राजकीय आदर्श उ.मा.वि.
सेवगों की बगीची, नत्थूसर गेट, बीकानेर
मो: 9414510329

शैक्षिक चिन्तन

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा

❒ शशिकांत द्विवेदी 'आमेटा'

शिक्षा ज्ञान की जननी है। उन्नति का प्रथम सोपान शिक्षा है। शिक्षा ज्ञानवर्द्धन का साधन है, सांस्कृतिक जीवन का माध्यम है, चरित्र की निर्माता है एवं जीविकोपार्जन का द्वार है। श्रीमद्भगवद्गीता में कहा गया है-'न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते'-अर्थात् इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है। शिक्षा समाज की सबसे बड़ी जरूरत है। अच्छा व्यक्ति बनने की प्रक्रिया शिक्षा है तथा बालक का सर्वांगीण विकास शिक्षा का उद्देश्य है। शिक्षा सभ्य समाज की सबसे बड़ी जरूरत है। 'शिक्षा वह कुँजी है, जो व्यक्ति को मनुष्य बनाती है एवं राष्ट्र को महाशक्ति।' शिक्षा मनुष्य को समाज के अनुकूल बनाती है। शिक्षा ही वह माध्यम है जो व्यक्ति को सम्मानजनक एवं भयमुक्त जीवन जीने का बोध कराती है।

शिक्षा वही है जो हमें मुक्त करती है-'सा विद्या या विमुक्तये।' इस छोटे से वाक्य में विद्या (शिक्षा) के चरम लक्ष्य की ओर इंगित किया गया है, जो आज भी उतना ही सत्य है। शिक्षा के इस लक्ष्य को समझना होगा कि यहाँ मुक्त होने से क्या अभिप्राय हो सकता है? हमारे मनीषियों ने ज्ञान को ही मुक्ति कहा है। किन्तु 'ज्ञान' का अर्थ हमारे लिए जानकारी तक ही सीमित हो गया है क्योंकि बिना ज्ञान के मुक्ति नहीं, 'कृते ज्ञानात् न मुक्तिः' और विद्या (शिक्षा) वही है जो हमें मुक्त करती है। शिक्षा मनुष्य का तीसरा नेत्र है।

शिक्षा जीवन निर्माण की प्रयोगशाला है, जहाँ सच्चे, सभ्य और चरित्रवान् नागरिकों को ढाला जाता है। सुकरात ने ज्ञान को सर्वश्रेष्ठ आधार माना है। उनके अनुसार ज्ञान ही सद्गुण है और सद्गुण ही आनन्द है। शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों की आवश्यकताओं की पूर्ति करना नहीं वरन् उसे उत्तम नागरिक बनाना है जिससे कि वह राष्ट्र के निर्माण, विकास एवं स्थायित्व में अपना योगदान कर सके। उचित शिक्षा से मूल्यवान समाज का निर्माण सम्भव है।

शिक्षा के मूल लक्ष्यों में है 'गरीबी दूर करना एवं जीवन की गुणवत्ता बनाना।' स्वामी विवेकानन्द के अनुसार सम्पूर्ण शिक्षा एवं समस्त अध्ययन का एकमेव उद्देश्य व्यक्ति के व्यक्तित्व को गढ़ना। शिक्षा की आज प्रमुख माँग सदाचरण है। 'विद्या ददाति विनयं, विनयाद् याति पात्रताम्' इस प्राचीन शास्त्रोक्त उक्ति को हमारी शिक्षा की कसौटी समझा जाना चाहिए। शिक्षा मनुष्य को सुसंस्कृत बनाने का माध्यम है। शिक्षा के माध्यम से सही दृष्टि का विकास होता है, सामाजिक सुधार भी लाया जा सकता है। शिक्षा का लक्ष्य जीवन मूल्यों का उत्थान करना होता है। जीवन मूल्यों के उत्कर्ष से ही कोई समाज और राष्ट्र सशक्त होता है। हमारे प्राचीन मूल्यों की शाश्वतता और विश्वजनीनता स्वयं सिद्ध है। ये ही हमारे जीवन की सभ्यता और संस्कृति को निरन्तर प्रभावित करते रहते हैं। इनकी संवाहक शिक्षा है। शिक्षा ही व्यक्ति को चेताती है कि वह व्यक्तिवाद की सीमा का अतिक्रमण न करे और 'एक सब के लिए तथा सब एक के लिए' की भावना को पोषित करें। शिक्षा जीवन एवं सामाजिक आवश्यकता कही जाती है। इसीलिए शिक्षा को समाज का दर्पण कहा गया है।

शिक्षा की बुनियादी शर्त है कि वह सार्थक हो, उद्देश्यनिष्ठ हो और आगे की ओर देखने वाली हो। ऐसे में आवश्यक है कि मनुष्य की क्रियाओं को सत्यम्, शिवम् और सुन्दरम् की ओर उन्मुख किया जाए। शिक्षा जीवन में व्याप्त आपदाओं और कुसंस्कारों को भगाने की कुँजी है। शिक्षा तो आत्मा और बुद्धि का मंथन करती है। सुखी-सम्पन्न जीवन का आधार शिक्षा है। डॉ. राधाकृष्णन् शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य मानते थे कि छात्र अपनी जीविका प्राप्त कर सकें। उनका दिया हुआ सूत्र था- 'अर्थकारी सा विद्या।' जीवन को सुव्यवस्थित करने के लिए शिक्षा की आवश्यकता होती है। जीवन को मूल्यवान बनाकर जीवन स्तर को ऊँचा उठाया जा सकता है। अलबर्ट आइंस्टीन का कथन है कि-'सफल व्यक्ति नहीं, एक मूल्यवान व्यक्ति बनाने की कोशिश कीजिए।'

एक चिन्तक का कथन- 'आज की शिक्षा का मन या हृदय से कोई सम्बन्ध नहीं है। फलस्वरूप शिक्षा मात्र लिखना-पढ़ना, गणना करना, आकृतियाँ बनाना, तथ्यों के विषय में दूसरों के मतों को याद रखना और उनका संचार करना बन गई है।' विद्यालयों और महाविद्यालयों में पाठ्यक्रम मूलरूप में वही है, जो मेकाले के जमाने में था। हमारी 'शिक्षा' अच्छे अंक उपाधि (डिग्री) स्कोर करने की दिशा में तैयार है। यह एकता, करुणा और समानता नहीं सिखा रही है। वर्तमान शिक्षण व्यवस्था में मूल्यपरकता की अत्यंत आवश्यकता है। भारतीय संस्कृति प्रारम्भ से ही आचार अभ्युत्थान की संस्कृति रही है। आज हम तेजी से पाश्चात्य संस्कृति की ओर खिंचते चले जा रहे हैं जो केवल चकाचौंध, फैशन और भोगवाद की संस्कृति है। हमारे युवा ही नहीं प्रौढ़ भी इस संस्कृति से पूर्णतया प्रभावित हैं। मानव के सामने सबसे बड़ा संकट है-मानव का

अमानवीय हो जाना। मनुष्य भौतिक आनन-फानन में विक्षिप्त सा हो उठा है।

दुर्भाग्य से हमने पाश्चात्य शिक्षा पद्धति के अंधानुकरण में हमारी भारतीय शिक्षा पद्धति को सर्वथा भुला दिया है। हमारा सदा से यह दृढ़ विश्वास रहा है कि शिक्षा से मनुष्य को संस्कारित किया जा सकता है। भारतीय संस्कृति ज्ञान की अपेक्षा आचरण और व्यवहार को अधिक महत्त्व प्रदान करती है। ज्ञान के लिए ज्ञान निरर्थक एवं व्यर्थ है। शिक्षा का क्षेत्र मानवीय संस्कार और सभ्यता तथा लोकमंगल का क्षेत्र है। संस्कार जीवन-व्यवहार का महत्त्वपूर्ण पहलू है, व्यावहारिक जीवन का आधार है और व्यक्ति की पहचान भी है।

आज विश्व में शैक्षिक संरचना की आधारभूत धारणाओं के प्रति संदेहास्पद स्थितियाँ बनी हुई हैं। प्रचलित शिक्षा का प्रारूप शिक्षा जगत की आवश्यकताओं को पूरा करते नहीं दिखते। मानव स्वयं मूलभूत गुणों से परे होता जा रहा है। समाज में बिखराव नजर आ रहा है। मानवीय दृष्टिकोण गायब से हो गए हैं। आज के युवा का ध्यान अपने जीवन और कॅरियर पर ही केन्द्रित है। जीवन मूल्यों के बारे में वह अधिक नहीं जानता और न ही जानना चाहता है।

देश की तरक्की के लिए नवाचार जरूरी है। समाज एवं संस्कृति में परिवर्तन और सर्जन के लिए हम आए दिन शिक्षा नीतियों में बदलाव ला रहे हैं ताकि सकारात्मक एवं फलदायी परिवर्तनों का संप्रेषण सटीक ढंग से हो सके। आज की शिक्षा केवल ज्ञान का संचय बन गई है। ज्ञान पर जोर न देकर सीखनें पर जोर देना होगा।

बच्चे भविष्य के प्रहरी और निर्माता हैं। शिक्षा का संवेदना से गहरा सम्बन्ध है। शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य मानव को संवेदनशील बनाना है। मानवीय संवेदनाओं के आधार पर ही कहा जा सकता है कि शिक्षा का लक्ष्य पुस्तकीय ज्ञान बढ़ाना नहीं बल्कि नई पीढ़ी के चरित्र का विकास करना, अच्छे नागरिक बनाना, मानवीय मूल्यों के प्रति संवेदना उत्पन्न करना आदि है। हमारे देश में सबसे बड़ा संकट चरित्र का है। संस्कारयुक्त शिक्षा चरित्रवान बालकों का निर्माण कर सकेगी। श्रेष्ठ पुरुषों के चरित्र का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि व्यक्ति और समाज की उन्नति के लिए कुछ गुण आवश्यक हैं। ये गुण मानवता की कसौटी हैं। इन्हीं गुणों को जीवन मूल्य कहते हैं।

आज नई पीढ़ी को मुखरित करना है। शिक्षा का सबसे बड़ा मकसद यही है कि वह बालक में स्व-विवेक जाग्रत करे। स्व-विवेक से ही कर्त्तव्य का निर्धारण होता है। भारत सहित सम्पूर्ण विश्व के अधःपतन का मूल कारण है चरित्र और व्यवहार में भारी गिरावट। सामाजिक जीवन बड़ा भयावह बनता जा रहा है। दुराचार, भ्रष्टाचार, बेईमानी और क्रूरता का दानव आतंकित कर रहा है। युवा वर्ग आज भटकाव की दहलीज पर खड़ा है, जहाँ से भावी मार्ग धुँधला सा प्रतीत होने लगा है, जिसके जरिए हम वर्तमान समाज को आगे बढ़ाना चाहते हैं।

मेरी मान्यता है कि मानव जीवन में चरित्र निर्माण ही एक ऐसा पक्ष है, जो मनुष्य को निम्न धरातल से सर्वोच्च शिखर पर ले जाने की क्षमता रखता है। सदाचार ही चरित्र निर्माण है। शिक्षा समाज की आवश्यकता है और समाज शिक्षा की। वर्तमान शिक्षा का कलेवर प्राथमिक शिक्षा है। शिक्षा के स्तर को जितना हम सशक्त करेंगे उतना ही आगे के शैक्षिक स्तर में मजबूती आएगी। इसे सशक्त बनाने के लिए हमें पुराने मिथक तोड़ कर नए रास्ते तलाशने होंगे।

महात्मा गांधी का उस दिन मौनव्रत था। प्रातःकाल आश्रम के बच्चों को साथ लेकर टहलने गए। मार्ग में उन्हें एक तीन इंच लंबा सूई का टुकड़ा पड़ा हुआ दिखाई पड़ा। गांधी जी ने एक बच्ची को उसे उठाने का इशारा किया। उसने उसे उठाया तो, पर उसे वह निरर्थक लगा सो उसने उसे उठाकर फेंक दिया। मौन टूटने पर गांधी जी ने उससे वह टुकड़ा माँगा। बच्ची ने बताया कि उसने उसे फेंक दिया है। यह सुनने पर गांधी जी ने उसे समझाया कि वस्तुओं का पूरा सदुपयोग करने की आदत सभी को डालनी चाहिए। हमें सामान की बरबादी नहीं करनी चाहिए।

साभार : अखण्ड ज्योति, सितम्बर, 2018, पृष्ठ संख्या 37

इसमें कोई संदेह नहीं है कि अब हमारे देश में शिक्षा के विकास, विस्तार तथा सुधार पर काफी ध्यान दिया जा रहा है। आज गाँवों और शहरों में विद्यालयी शिक्षा का कामकाज निजी शिक्षण संस्थाओं के हाथ में है। इक्कीसवीं सदी उपभोक्तावाद की है। इन दिनों शिक्षा को लेकर एक बाजारू दृष्टि का विकास हो रहा है। विश्व के कुछ देशों में प्रयोग सफल भी होते जा रहे हैं। यदि ऐसा हुआ तो मानवीय मूल्यों का क्या होगा?

निष्कर्षतः हमें ऐसा रास्ता तलाशना होगा जिससे हम अपने सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा करते हुए सामाजिक और आर्थिक प्रगति में पिछड़े नहीं। अमेरिका विश्व का सबसे बड़ा शक्तिशाली राष्ट्र इसलिए बन गया, क्योंकि उसने शिक्षा पर जबरदस्त ध्यान दिया। हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति ऐसी हो जो इस महान देश के नव-निर्माण हेतु समर्पित नागरिकों का निर्माण कर सके। हमें न केवल अपनी विरासत को सुरक्षित रखना है, बल्कि नए प्रतिमान भी स्थापित करने हैं। किसी कवि ने ठीक ही कहा है-

निर्माणों के पावन युग में,
हम चरित्र निर्माण न भूलें।
स्वार्थ साधना की आँधी में,
वसुधा का कल्याण न भूलें।।

एक तरफ हम विकसित राष्ट्र की संकल्पना संजोए बैठे हैं जो हमारे महान शिक्षाविद् व पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम का सपना था कि सन् 2020 तक भारत एक विकसित राष्ट्र बने। नेल्सन मंडेला ने भी कहा था 'शिक्षा' वो माध्यम है जिससे आप पूरी दुनिया बदल सकते हैं।

वर्तमान परिस्थितियों में सारा दारोमदार 'शिक्षकों' पर है। शिक्षक के लिए-**'गुरु नहीं तुम मित्र बनो अब, नन्हें-मुन्नों को मुक्त करो अब।'**

सेवानिवृत्त प्राध्यापक (हिन्दी)
फोरेस्ट चौकी के पास, लोहारिया,
जिला-बाँसवाड़ा-327605
मो: 9460116012

नैतिक शिक्षा

बच्चों को शिष्टता का प्रशिक्षण दें

❒ राजेन्द्र प्रसाद जोशी

सामाजिक व्यवहार में वार्तालाप, विनिमय तथा पारस्परिक संबंध समाविष्ट रहते हैं। इन तीनों में निपुणता प्राप्त होने पर व्यक्ति को सद्व्यवहार संपन्न कहा जाता है। जबकि इनमें अनपढ़पन होने पर व्यवहार से कोई भी कार्यविधि आदत का अंग बनती जाती है। अतः बचपन से ही शिष्टता का प्रशिक्षण देना अच्छा होता है। बच्चों की अनुकरणशीलता सर्वज्ञात है। जिस घर में शिष्टता का वातावरण रहेगा, वहाँ बच्चे स्वतः ही वैसा व्यवहार सीखते जाएँगे। यदि घर में लोग सुबह उठकर परस्पर अभिवादन करते हैं, संबंधों के अनुसार प्रणाम आदि करते हैं, इष्टदेवता की मूर्ति के समक्ष जाकर प्रार्थना करते हैं मृदु-मधुर वार्तालाप करते हैं, कटु उक्तियों-व्यंग्यबाणों से दूर रहते हैं, तो बच्चा भी वही सब सीखता है। सहयोग, सद्भाव भरे वातावरण में रहने से बच्चे में भी सहयोगवृत्ति बढ़ती है। वह मिल बाँटकर खाना-पीना, मेल-जोल से रहना सीखता है। व्यवहार की मृदुता, सौम्यता, शालीनता और शिष्टता स्वभाव का अंग बन जाती है तथा आगे चलकर लोकजीवन में सहयोग के आदान-प्रदान का आधार बनती है।

बच्चों को बाल्यावस्था से ही भिन्न संबंधों का उचित निर्वाह सीखना चाहिए। छोटों से स्नेहपूर्ण, बराबरी वालों से खुला, निःसंकोच, बड़ों से आदरपूर्वक ढंग से बोलना एवं व्यवहार करना सिखाया जाए। भोजन, स्कूल आने-जाने, सड़क पर चलने, किसी सभा सोसाइटी या सामूहिक एकीकरण वाले स्थान में, सामूहिक भोज के अवसर पर, प्रत्येक जगह शिष्टाचार के भिन्न-भिन्न नियम होते हैं। उनकी जानकारी बचपन से ही दी जानी चाहिए। काम करने के समूह मान्य ढंग को 'मैनर्स' कहते हैं। इन 'मैनर्स' का भी बहुत महत्त्व है। इन्हें भी जानना चाहिए, किंतु मात्र ये पर्याप्त नहीं।

दूसरों के साथ वार्तालाप एवं व्यवहार में जब व्यक्ति की शालीनता, सौम्यता प्रकट होती है, तब वही वास्तविक शिष्टता है। ऐसी शिष्टता में सौम्यता, मृदुता तो होती ही है, जिसके साथ व्यवहार होता है। उनके प्रति सम्मान एवं संवेदनशीलता भी होती है। दूसरों के अधिकारों पर आघात न किया जाए, उन्हें अकारण अप्रसन्न न किया जाए, अप्रिय या असत्य बात न कही जाए तथा उनके भी सुख एवं सुविधा का ध्यान रखा जाए, तभी उसे शिष्टता कहेंगे। ऐसी शिष्टता व्यक्तित्व की कई कमियों को पूरा कर देती है। क्योंकि उससे दूसरों का हृदय प्रभावित हो उठता है। तनाव खिंचाव की स्थिति नहीं आती। यह ध्यान रखना चाहिए कि यदि सच्चाई भी अशिष्ट तरीके से प्रस्तुत की जाती है, तो वह भी लोगों को पसंद नहीं आती। जबकि कई बार बुराई तक अस्थायी तौर पर, शिष्टता के आवरण में पसंद कर ली जाती है।

जो बोता है, उसे वैसा ही काटना होता है। दूसरों से प्रत्येक व्यक्ति शिष्ट व्यवहार की अपेक्षा करता है। यह अपेक्षा तभी पूरी हो सकती है, जब वह स्वयं भी दूसरों के साथ शिष्टता बरते। बच्चों को बचपन से ही शिष्टता, शालीनता का अभ्यास कराया जाए। शिष्टता का अर्थ आडंबर नहीं। बाह्याडंबर का दंभ अधिक समय तक छिपा नहीं रह पाता। बच्चों को प्रत्यक्षतः व्यावहारिक शिक्षण देना होता है। अवकाश के समय उनसे बातचीत करते हुए शिष्टता के तौर-तरीके समझाए व बताए जाएँ साथ ही जीवन में उसकी उपयोगिता भी समझा दी जाए। यह क्रम कुछ दिनों के अंतराल से चलता रहे। अपने वार्तालाप के ढंग से भी बच्चों को शिक्षण दिया जाए। बात करते समय किन शब्दों पर अधिक जोर दिया जाना उचित है, किन पर कम, किस समय किस ढंग से क्या बात करनी चाहिए, यह सब बच्चा बड़ों के प्रति व्यक्त व्यवहार से ही सीखता है।

घर में जब पड़ौसी, परिचित, मित्र-परिजन, मेहमान आते हैं, उस समय बच्चे द्वारा सीखी गई शिष्टता को जाँचने परखने का मौका मिलता है। बच्चे के व्यवहार को ध्यान से देखना चाहिए और आवश्यक सुझाव बाद में यथावसर देना चाहिए। घर बाहर अपने भाई बहिनों, साथियों, सहयोगियों तथा घर के सदस्यों से बच्चा किस प्रकार व्यवहार करता है? यदि उसके व्यवहार में अपनत्व, शालीनता, सुघड़ता नहीं है तो समय पाकर उसे प्रेम से समझाते हुए यह सब सिखाना चाहिए।

वस्तुओं के पारस्परिक विनिमय में भी शिष्टता का ध्यान रखें, यह देखना चाहिए। बच्चे की संवेदना पैनी होती है और धीरे-धीरे इन्हीं व्यवहारों से उसकी रागात्मक संवेदना जुड़ती जाती है। वे उसके स्वभाव का अंग बनते जाते हैं। शालीनता-विनम्रता की यह आदत जीवनपर्यन्त काम आती है। उसका व्यक्तित्व शिष्टता के सौरभ से महकता रहता है। बच्चों को सामान्य शिष्टाचार भी ध्यान से सीखना चाहिए। जूते निश्चित स्थान पर उतारें, भोजनालय एवं पूजन कक्ष में हाथ-पैर धोने के बाद ही प्रवेश करें, मल-मूत्र उचित स्थान पर ही त्यागें, छिलके कागज के टुकड़े आदि निश्चित स्थान पर ही रखें, यहाँ-वहाँ न फेंकें, गंदगी न फैलाएँ, ये सब सुव्यवस्था संबंधी गुण भी शिष्टता के ही अंग हैं।

खाँसते-छींकते या जँभाई लेते समय रूमाल या हाथ का सहारा लेना, सबके सामने ऊँचे स्वर में डकार न लेना, इधर-उधर न थूकना ये सब शिष्टता के बाहरी व्यवहार हैं। सामूहिक भोज एवं पार्टियों के समय भी शिष्टता के प्रचलित-नियम होते हैं, उन्हें सिखाया जाए।

नाखून कुतरना, कमीज या फ्रॉक के बटन घुमाते रहना, ये कुछ ऐसी आदतें हैं, जो बच्चों के स्वभाव में आ जाती हैं। बचपन में जहाँ ये स्वभाव के रूप में होती हैं, वही बड़े होने पर ये अशिष्टता कहलाने लगती है। दूसरों पर इनका अनुचित प्रभाव पड़ता है।

यहाँ यह तथ्य भी स्मरण रखा जाना चाहिए कि बच्चों द्वारा शिष्टाचार संबंधी छोटी-छोटी बातों के यदा-कदा उल्लंघन से माता-पिता को अधिक अधीर एवं चिंतित नहीं होना चाहिए। यदि घर का वातावरण श्रेष्ठ है और बाहर की संगति भी अच्छी होती है तो थोड़े ही समय बाद वह शिष्टाचार का अनुसरण स्वयं ही करने लगता है।

कर्म, व्यवहार और वाणी की मधुरता एवं शिष्टता तथा दूसरों के प्रति संवेदनशीलता प्रत्येक बच्चे को सिखाई जानी चाहिए। ताकि उसे आगे भी सभी लोग प्यार करें, सहयोग दें और वह सफल एवं सार्थक जीवन जिएँ।

प्रधानाचार्य
रा.उ.मा.वि. मेजा, मांडल, भीलवाड़ा-311403

रपट

राजकीय स्वामी विवेकानन्द मॉडल स्कूल

प्राथमिक शिक्षा-सुदृढ़ राष्ट्र की नींव : शिक्षा मंत्री

❐ नरेश कुमार बिसु

स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल स्कूल में प्री-प्राइमरी स्कूल एवं बालिका छात्रावास शिलान्यास समारोह समग्र शिक्षा अभियान एवं राजस्थान राज्य शैक्षिक काउंसिल के माध्यम से बीकानेर जिले के एकमात्र स्वीकृत प्री-प्राइमरी स्कूल एवं छात्रावास का शिलान्यास कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 04.02.2019 को स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल स्कूल, ऊपनी श्रीडूँगरगढ़ में समारोहपूर्वक किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) माध्यमिक एवं प्राथमिक शिक्षा श्रीमान गोविन्द सिंह डोटासरा, विशिष्ट अतिथि उच्च शिक्षा राज्य मंत्री श्रीमान भंवर सिंह भाटी, खाजूवाला विधायक श्रीमान गोविन्दराम मेघवाल, पूर्व गृह राज्य मंत्री श्रीमान वीरेन्द्र बेनीवाल, निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान श्रीमान नथमल डिडेल, मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी बीकानेर श्रीमान महावीर सिंह पूनियाँ एवं मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, बीकानेर श्रीमान धर्मपाल सिंह झाझड़िया थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व विधायक श्रीडूँगरगढ़ श्रीमान मंगलाराम गोदारा ने की।

इस अवसर पर विद्यालय के छात्र-छात्राएँ, अभिभावक तथा स्थानीय एवं आसपास के क्षेत्रों से पधारे ग्रामवासी बड़ी संख्या में उपस्थित थे। अतिथियों द्वारा शिलान्यास पट्टिका का अनावरण किए जाने के उपरान्त उनके द्वारा सरस्वती की प्रतिमा के दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का विधिवत आयोजन शुभारंभ किया गया। विद्यालय की छात्राओं द्वारा माँ सरस्वती वन्दना की गई एवं तदुपरान्त विद्यालय परिवार की ओर से माल्यार्पण, शॉल एवं साफे के साथ स्वागत गान के माध्यम से पधारे हुए अतिथियों का स्वागत किया गया।

इस अवसर पर विद्यालय प्रधानाचार्य श्री नरेश कुमार बिसु द्वारा स्वागत उद्बोधन के माध्यम से सभी अतिथियों एवं पधारे हुए अभिभावकगण, ग्रामीणजनों एवं गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत एवं अभिवादन किया गया साथ ही मॉडल स्कूल की पृष्ठभूमि तथा विद्यालय के सम्बन्ध में संक्षिप्त जानकारी प्रस्तुत की गई। जिसमें बताया गया कि मॉडल स्कूल योजना को सन् 2012 में तात्कालिक सरकार द्वारा राज्य के शैक्षिक रूप से पिछड़े ब्लॉक हेतु प्रारम्भ किया गया। जिसके तहत उन क्षेत्रों के विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को गुणवत्तापूर्ण एवं अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा उपलब्ध करवाई जा सके। इस हेतु प्रवेश प्रक्रिया में भी ऐसे ब्लॉक के विधवा/परित्यक्ता संतान, दिव्यांग बालकों, बीपीएल बालकों तथा अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति बालकों को प्राथमिकता से अवसर उपलब्ध करवाए जाते हैं। मॉडल विद्यालयों का संचालन अंग्रेजी माध्यम से केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की संबंद्धता से किया जाता है। अतिथियों को यह भी अवगत करवाया गया कि यह बीकानेर का एकमात्र मॉडल विद्यालय है जिसमें वर्तमान में 400 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं।

राज्य सरकार की मंशानुसार इस विद्यालय में समस्त प्रकार की शैक्षिक एवं सह-शैक्षिक गतिविधियों का संचालन किया जा रहा है। भामाशाहों के सहयोग से सम्पूर्ण विद्यालय मय कक्षा-कक्ष Two way communication system सहित सीसीटीवी. से कवर है, साथ ही मिड-डे-मील योजना से छात्रों के लिए भोजन बनाने हेतु रोटी मैकर मशीन उपलब्ध है। उक्त के अतिरिक्त ही क्लिक योजना के माध्यम से सभी छात्रों को कम्प्यूटर शिक्षा, समृद्ध पुस्तकालय, पर्याप्त खेल उपकरण, शुद्ध पेयजल, किचन गार्डन, वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम, रोचक प्रार्थना सभा आदि के माध्यम से विद्यालय छात्रों के सर्वांगीण विकास हेतु प्रतिबद्ध एवं प्रयासरत है। सभी अतिथियों का पुनः स्वागत करते हुए माननीय शिक्षा मंत्री को धन्यवाद ज्ञापित किया कि विद्यालय की आवश्यकता को समझते हुए राज्य सरकार ने यहाँ प्री-प्राइमरी स्कूल एवं छात्रों हेतु छात्रावास स्वीकृत किया।

माननीय शिक्षा मंत्री ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए शिक्षा के क्षेत्र में सुधार करने की राज्य सरकार की प्रतिबद्धता दोहराई तथा कहा कि प्राथमिक शिक्षा के सुदृढ़ीकरण हेतु राज्य सरकार प्रयासरत है। उन्होंने सरकार के प्रयासों की जानकारी दी। बालिका शिक्षा को सुदृढ़ करने के सम्बन्ध में उन्होंने कहा कि शैक्षिक रूप से पिछड़े ब्लॉक में इस प्रकार के मॉडल स्कूलों की स्थापना से वहाँ के छात्रों के साथ-साथ छात्राओं को भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त हो सकेगी एवं उनके दूरस्थ क्षेत्रों से पढ़ने आने में हो रही असुविधाओं को ध्यान में रखते हुए उनके लिए अब सरकार छात्रावासों का निर्माण करवा रही है। शिक्षा मंत्री ने बताया कि वे स्वयं एक शिक्षक के पुत्र है, उनकी पत्नी भी एक शिक्षिका है तथा परिवार में भी काफी शिक्षक है तथा उनसे मैंने एक ही बात सीखी है कि अगर आप किसी को कुछ दे सकते हो तो बस आप ये जो नन्हें-मुन्ने बच्चे हैं, इनको अच्छी शिक्षा दे दीजिए समाज को सब कुछ मिल जाएगा। यदि हम प्राइमरी एजुकेशन को मजबूत नहीं किया तो हमने कुछ भी नहीं किया। सरकार भी इसी प्रतिबद्धता से कार्य कर रही है।

ऊपनी का मॉडल स्कूल नेशनल हाइवे से 25 किलोमीटर दूर है। यहाँ बच्चे सम्पूर्ण सुविधाओं के साथ अंग्रेजी माध्यम से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं एवं इसी क्रम में सुविधाओं के विस्तार सरकार द्वारा अब यहाँ प्री-प्राइमरी एवं बालिका छात्रावास का निर्माण भी करवाया जा रहा है। विद्यालय के सम्बन्ध में उन्होंने कहा कि मुझे यह सुनकर बहुत अच्छा लगा तथा सभी लोगों ने उन्हें इस बात से अवगत करवाया कि यहाँ के प्रधानाचार्य बहुत अच्छे हैं जबकि सरकारी विद्यालय के सम्बन्ध में तो केवल शिकायतें ही प्राप्त होती हैं। उन्होंने प्रधानाचार्य एवं स्टाफ के साथ ही अभिभावकों एवं पंचायत के लोगों तथा पूर्व विधायक श्री मंगलाराम जी को भी इसका श्रेय दिया कि उनकी सोच से ही इस प्रकार का विद्यालय इस गाँव में बन सका। जिसमें अंग्रेजी माध्यम में

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा इस गाँव एवं आसपास की पंचायतों के बच्चों को स्थानीय स्तर पर प्राप्त हो रही है। उपस्थित जनसमूह को उन्होंने आश्वस्त कराया कि क्षेत्र के विकास में वे हमेशा आपके साथ रहेंगे।

उच्च शिक्षा मंत्री श्रीमान भंवर सिंह भाटी ने कहा कि नई सरकार के गठन के उपरान्त जनघोषणा पत्र में किए गए वायदों को पूरा करने के लिए सरकारी प्रतिबद्धता के तहत माननीय मुख्यमंत्री महोदय ने प्रथम केबिनेट बैठक में इसे मुख्य सचिव को सौंपते हुए जनघोषणा पत्र को सरकारी दस्तावेज घोषित किया गया है, जिसके वायदों को सरकार द्वारा आगामी पाँच वर्षों में एक-एक करके पूरा किया जाएगा। इसी क्रम में उन्होंने कहा कि अभी सरकार को बने दो माह भी पूर्ण नहीं हुए एवं सरकार ने जनहित में तीव्र गति से कार्य करना प्रारम्भ कर दिया गया है, जिसके तहत किसानों की कर्जमाफी, सामाजिक सुरक्षा पेंशन में बढ़ोतरी, बेरोजगारों हेतु बेरोजगारी भत्ता, पाँच वर्षों तक बिजली दरों में बढ़ोतरी न करने एवं एक लाख नए कृषि कनेक्शन जारी करने, पंचायत चुनावों में उम्मीदवारों हेतु शैक्षिक योग्यता की अनिवार्यता को समाप्त करने जैसे जनहित में महत्त्वपूर्ण निर्णय सरकारी स्तर पर लिए जा चुके है तथा आमजन से जुड़ी समस्त महत्त्वपूर्ण घोषणाओं पर एक-एक कर अमल करना प्रारम्भ कर दिया है। जनहित के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता के तहत ही बालिका शिक्षा के क्षेत्र में एक कदम और आगे बढ़ाकर आने वाले शैक्षणिक सत्र में राज्य के विभिन्न 252 राजकीय महाविद्यालयों में अब छात्राओं हेतु कॉलेज स्तर तक की शिक्षा मुफ्त उपलब्ध करवाने हेतु प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी है। साथ ही भवन रहित महाविद्यालयों हेतु भवन बनाने एवं रिक्त पदों को भरने एवं उनके सुचारू संचालन हेतु आवश्यक संसाधनों को जुटाने के कार्य को भी सरकार की प्राथमिकता में बताया। साथ ही उन्होंने कहा कि विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे नौजवानों हेतु स्वामी विवेकानन्द जयन्ती से पूरे राज्य के 252 राजकीय महाविद्यालयों में प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी बाबत निःशुल्क कोचिंग कक्षाएँ संचालित करने की शुरूआत कर दी गई है।

माननीय निदेशक महोदय नथमल डिडेल द्वारा पधारे हुए अभिभावकों एवं ग्रामवासियों से राजकीय विद्यालय में अधिकाधिक विद्यार्थियों को प्रवेश दिलाने की अपील करते हुए कहा कि आज के समय में कोई भी सरकारी विद्यालय निजी विद्यालयों की तुलना में कम नहीं है। राज्य के प्रत्येक सरकारी विद्यालय में प्रशिक्षित अध्यापकों द्वारा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान की जा रही है एवं विभाग तथा राज्य सरकार भी इन्हें और बेहतर बनाने एवं रिक्त पदों को भरने हेतु लगातार प्रयासरत है। उन्होंने कहा कि शिक्षा में जितना अधिक निवेश किया जाएगा, अन्य क्षेत्रों में उतना ही निवेश कम करना पड़ेगा। अपने उद्‌बोधन में वे छात्रों से मुखातिब होते हुए बोले कि श्री मंगलाराम गोदारा के प्रयासों एवं उनकी दूरगामी सोच के कारण ही इस शैक्षिक एवं आर्थिक रूप से पिछड़े क्षेत्र में ऐसा विद्यालय स्थापित हो सका है जिसका आपको भरपूर फायदा उठाना चाहिए। उन्होंने छात्रों से आह्वान किया कि यदि सच्ची निष्ठा एवं लगन के साथ कोई कार्य किया जाए तो सफलता के उच्चतम स्तर को प्राप्त किया जा सकता है। अपना स्वयं का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि मैं स्वयं नागौर के एक साधारण ग्रामीण परिवार से आता हूँ तथा मेरी शिक्षा भी सरकारी विद्यालय में ही हुई है। विद्यालय प्रधानाचार्य एवं स्टाफ की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि मुझे उम्मीद है कि जैसा प्रयास उन्होंने कक्षा 6 से 10 तक के लिए किया है वैसा ही प्रयास वे प्राइमरी एवं कक्षा 11 एवं 12 के लिए भी करेंगे और यह विद्यालय राज्य के सभी 134 मॉडल विद्यालयों में सबसे श्रेष्ठ साबित होगा।

श्रीमान गोविन्दराम मेघवाल विधायक खाजूवाला ने मॉडल स्कूल को क्षेत्र के लिए एक अनुपम सौगात बताते हुए इसे स्थानीय पूर्व विधायक मंगलाराम जी की मेहनत एवं क्षेत्र के प्रति उनकी कर्त्तव्यपरायणता का उदाहरण बताया। उन्होंने बालिका शिक्षा में दिए गए योगदान के लिए सावित्री बाई फुले को याद करते हुए कहा कि उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में अलख जगाते हुए महिलाओं के लिए भी शिक्षा की अलख जगाई। वे शिक्षा राज्य मंत्री श्रीमान गोविन्द सिंह डोटासरा एवं उच्च शिक्षा राज्य मंत्री से मुखातिब होते हुए बोले कि अन्य चाहे कोई भी मंत्रालय कितना भी महत्त्वपूर्ण हो या कितने भी अधिक बजट वाला हो परन्तु इस देश की नींव को मजबूत करने वाला कोई मंत्रालय है तो वह आपका शिक्षा मंत्रालय ही है और उनसे निवेदन करते हुए कहा कि आप अपने कार्यकाल में सरकारी विद्यालयों तथा महाविद्यालयों में शिक्षकों के रिक्त पद भरने, भवन निर्माण करने के लिए पुरजोर प्रयास कर पूरे प्रदेश में शिक्षा का प्रकाश जगा दो। उन्होंने किसानों से कहा कि शिक्षा शेरनी का दूध है जो इसे पिएगा वो दहाड़ेगा।

पूर्व गृह राज्य मंत्री श्रीमान वीरेन्द्र बेनीवाल ने भी सरकार के रात-दिन कार्य करने की शैली एवं माननीय मुख्यमंत्री की नए राजस्थान के सृजन की प्रतिबद्धता को दोहराते हुए कहा कि वर्तमान सरकार किसानों, नौजवानों एवं प्रत्येक तबके की समृद्धि हेतु प्रयासरत है तथा वर्तमान सरकार को गाँव व गरीब के मन में रचने व बसने वाली सरकार को बताया। उन्होंने क्षेत्रे के विकास में श्री मंगलाराम गोदारा के प्रयासों की सराहना की तथा उन्हें जमीन से जुड़ा हुआ राजनेता करार दिया। उन्होंने वर्तमान में शिक्षा व्यावसायीकरण के दौर में इस प्रकार के मॉडल स्कूलों को एक अनुपम सौगात बताया।

कार्यक्रम के अध्यक्ष एवं पूर्व विधायक श्री मंगलाराम गोदारा ने सभी अतिथियों को धन्यवाद देते हुए कहा कि यह इस धरा का सौभाग्य है कि सभी अतिथि उनके एक छोटे से निमंत्रण पर यहाँ पधारे एवं क्षेत्र के लोगों का प्री-प्राइमरी स्कूल एवं बालिका छात्रावास की अनुपम सौगात से नवाजा।

कार्यक्रम का संयोजन एवं संचालन सम्पूर्ण विद्यालय स्टाफ के सहयोग से स्थानीय राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, ऊपनी के व्याख्याता श्री विकास चन्द्र ने किया। उनके प्रभावी मंच संचालन ने कार्यक्रम को निर्धारित समयानुसार सम्पन्न करने तथा कार्यक्रम के जिवंतता प्रदान की। कार्यक्रम में सरपंच महोदय, भामाशाहों एवं अभिभावकों का वांछनीय सहयोग रहा। सभी ने विद्यालय को मिली सौगात के लिए सरकार को धन्यवाद दिया एवं कार्यक्रम की भूरी-भूरी प्रशंसा की।

प्रधानाचार्य
स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल स्कूल,
ऊपनी, बीकानेर
मो. 9571536296

रपट

राजकीय नेत्रहीन छात्रावासित विद्यालय

विशिष्ट विद्यालयों के विकास हेतु प्रतिबद्ध : डोटासरा

❒ अल्ताफ अहमद खान

भारत सरकार की नवरत्न कम्पनियों में से एक नेयवेली लिग्नाइट कार्पोरेशन ऑफ इण्डिया लिमिटेड बीकानेर ने अपने सामाजिक दायित्वों के अन्तर्गत सत्र 2018-19 में 82,14,911 रुपये शिक्षा हेतु व्यय किए हैं। 4 फरवरी, 2019 को NLCIL द्वारा शिक्षा विभाग में करवाए जाने वाले निर्माण कार्यों की आधारशिला माननीय शिक्षा मंत्री श्री गोविन्द सिंह डोटासरा एवं माननीय उच्च शिक्षा मंत्री श्री भंवर सिंह भाटी द्वारा समारोहपूर्वक राजकीय नेत्रहीन छात्रावासित उच्च माध्यमिक विद्यालय, बीकानेर में रखी गई। NLCIL द्वारा नेत्रहीन विद्यालय में 15 लाख की लागत से रसोई एवं डाइनिंग हॉल का पुनर्निमाण, बाउंड्री वॉल, पुस्तकालय व कक्षा-कक्षों की मरम्मत का कार्य करवाया जाएगा। राजकीय नेत्रहीन विद्यालय में आयोजित समारोह में मुख्य अतिथि माननीय शिक्षा मंत्री श्री गोविन्द सिंह डोटासरा एवं माननीय उच्च शिक्षा मंत्री श्री भंवर सिंह भाटी एवं कार्यक्रम की अध्यक्षता माध्यमिक शिक्षा निदेशक श्री नथमल डिडेल ने की। इस कार्यक्रम में जिला प्रमुख श्रीमती सुशीला सींवर एवं प्रारम्भिक शिक्षा निदेशक श्री ओमप्रकाश कसेरा, श्री बिशनाराम सिहाग यूथ कान्ग्रेस लोकसभा अध्यक्ष, बीकानेर भी उपस्थित रहे। प्रधानाचार्य राजकीय नेत्रहीन छात्रावासित विद्यालय, बीकानेर श्री अल्ताफ अहमद खान ने उपस्थित अतिथियों एवं आगुन्तकों का स्वागत करते हुए नेत्रहीन विद्यालय बीकानेर के इतिहास पर प्रकाश डाला। राजकीय नेत्रहीन विद्यालय बीकानेर की स्थापना वर्ष 1966 में हुई। 1966 से लेकर आज दिनांक तक कुल 333 छात्रों का नामांकन दर्ज हुआ है। जिसमें से 67 छात्र-छात्राएँ अभी विद्यालय में ही अध्ययनरत हैं। शेष 266 छात्रों में से 75 छात्र राज्य/केन्द्र सरकार के विभिन्न महकमों में कार्यरत हैं। लगभग 50 छात्र संगीत के जरिए निजी क्षेत्र में कार्य कर जीविकोपार्जन कर रहे हैं। लगभग 20 छात्र उच्च अध्ययन हेतु उच्चतर शैक्षणिक संस्थानों में अध्ययनरत है। इस प्रकार इस विद्यालय में पढ़े/पढ़ रहे कुल 333 छात्रों में से 212 छात्र इस विद्यालय से प्राप्त ज्ञान से लाभान्वित हुए है, जो कि लगभग 63 फिसदी है। इस जानकारी पर माननीय शिक्षा मंत्री ने प्रसन्नता जाहिर की। उन्होंने अपने उद्‌बोधन में विशिष्ट विद्यालयों के विकास के प्रति राज्य सरकार की प्रतिबद्धता एवं दिव्यांगों की शिक्षा के प्रति राज्य सरकार की संवेदनशीलता को दोहराया और कहा कि दिव्यांगों को वर्तमान में मिल रही सुविधाओं के अतिरिक्त अन्य कोई सुविधा चाहिए या सुविधाओं में बढ़ोतरी चाहिए तो वे उन्हें अवगत करवाएँ, वे स्वयं मुख्यमंत्री जी से इस सम्बन्ध में चर्चा करेंगे। माननीय शिक्षा मंत्री ने विद्यालय विकास एवं प्रबंध समिति राजकीय नेत्रहीन छात्रावासित विद्यालय बीकानेर द्वारा विद्यालय के छात्रावास में स्वीकृत 25 सीटों को बढ़ाकर 100 सीट किए जाने की माँग पर इसे तुरंत ही स्वीकार कर मंच से ही छात्रावास क्षमता 100 सीट किए जाने के प्रस्ताव तुरंत निदेशालय बीकानेर को भेजने के आदेश दिए। इस समारोह में माननीय उच्च शिक्षा मंत्री श्री भंवर सिंह भाटी ने नेत्रहीन विद्यालय के विकास पर प्रसन्नता जाहिर की तथा शिक्षा मंत्री से भी उन्होंने अपने उदबोधन में नेत्रहीन विद्यालय बीकानेर में छात्रावास में सीटें बढ़ाने की गुजारिश भी की। छात्रावास में स्वीकृत क्षमता से अधिक सीटें बढ़ाने पर छात्रावास में अतिरिक्त कमरों की आवश्यकता होगी। यह जानकर NLCIL के प्रोजेक्ट हैड श्री इ. इसाइकमुथु ने मंच से ही शिक्षा विभाग द्वारा उचित प्रस्ताव बनाकर भेजने पर छात्रावास हेतु अतिरिक्त कक्ष NLCIL द्वारा बनाने की घोषणा की गई। समारोह में NLCIL के श्रीधरन ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम में विद्यालय के प्रतिभाशाली गायक बच्चों प्रतीक सारस्वत, कुलदीप सारस्वत, देवकिशन उपाध्याय व रामदेव गहलोत ने मनमोहक प्रस्तुतियाँ दी जिस पर सभी लोगों ने मुक्त कंठ से बच्चों के गायन की प्रशंसा की। विद्यालय के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले समाजसेवी व भामाशाह श्री बाबूलाल सांखला का शिक्षा मंत्री द्वारा शॉल ओढ़ाकर अभिनन्दन किया गया। कार्यक्रम की समाप्ति के उपरांत माननीय शिक्षा मंत्री गोविन्द सिंह डोटासरा व माननीय उच्च शिक्षा मंत्री श्री भंवरसिंह भाटी द्वारा विद्यालय परिसर में पौधारोपण कर छात्रावास का निरीक्षण किया गया और बालकों से उनके हालचाल पूछे। छात्रावास में मिल रही सुविधाओं पर मंत्री महोदय द्वारा संतोष जाहिर किया गया। विद्यालय में रसोई एवं डाइनिंग हॉल के निर्माण हेतु NLCIL प्रोजेक्ट हैड श्री ई. ईसाइकमुथु द्वारा भूमि पूजन कर कार्य आरम्भ किया गया।

कार्यक्रम में संयुक्त निदेशक (स्कूल शिक्षा) बीकानेर संभाग श्री महावीर पुनिया, जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) माध्यमिक शिक्षा श्री उमा शंकर किराडू, जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) प्रारम्भिक शिक्षा श्री जोरावर सिंह, जिला शिक्षा अधिकारी (पंजीयक विभागीय परीक्षाएँ) श्री सुभाष महलावत, अति. जिला शिक्षा अधिकारी (का. संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, बीकानेर) श्री राजेश जोशी, सहायक निदेशक, सीडीईओ., श्री अरविन्द बिठ्ठू, कार्यक्रम अधिकारी समसा कार्यालय बीकानेर, श्री शिवशंकर चौधरी, अति. जिशिअ. कार्यालय जिशिअ (मुख्यालय) प्रा.शि. बीकानेर श्री अजय रंगा की उपस्थिति रही। कार्यक्रम में विद्यालय के भामाशाह और समाजसेवी श्री विजय मालू, श्री देवेन्द्र बैद, श्री अरिहन्त नाहटा, श्री रामकिशोर मारू उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का संचालन सहायक निदेशक, सीएसआर. (माध्यमिक शिक्षा निदेशालय राजस्थान, बीकानेर) श्री दिलीप परिहार संचालन करते हुए राजस्थान के विभिन्न स्कूलों में चल रही सीएसआर गतिविधियों पर प्रकाश डाला।

प्रधानाचार्य
राजकीय नेत्रहीन छात्रावासित उच्च माध्यमिक विद्यालय, बीकानेर
मो. 9414414614

बोर्ड परीक्षा विशेष

सफलता कदम चूमें आपके

❒ विजयलक्ष्मी

21वीं सदी के इस वैज्ञानिक युग को प्रतिस्पर्धा का युग कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। ऐसी स्थिति में साधारण मध्यम अंक प्राप्त कर छात्र अपने आप को भविष्य के लिए सुरक्षित नहीं बना पाते बल्कि वे अपने को कतार में पीछे खड़ा पाते हैं और यही ख्याल करते हैं कि हे भगवान! हमारे भी अच्छे अंक होते।

अब परीक्षाएँ नजदीक है छात्रों को चाहिए कि समयानुसार योजना बनाएँ और उस पर अमल करें, उसे सिर्फ महत्त्वपूर्ण प्रश्नों पर निर्भर न रहकर सम्पूर्ण पाठ्यक्रम की तैयारी करनी चाहिए। गणित, विज्ञान, अंग्रेजी के सूत्र, नियम, समीकरण, टेन्स तथा इतिहास की तिथियों व घटनाओं को बार-बार दोहराना चाहिए। परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के लिए पेश है कुछ टिप्सः-

- अपने समय को इस प्रकार विभाजित करें कि प्रत्येक विषय को पढ़ने के लिए पर्याप्त समय मिल जाए।
- सभी विषयों को पढ़ें, समय सारिणी आ चुकी है, अन्तराल को देखते हुए विषयों की तैयारी का समय सुनिश्चित करें।
- ऐसा देखा गया है कि सरल समझे जाने वाले विषयों यथा सामाजिक ज्ञान, संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी में कम अंक आने पर श्रेणी व प्रतिशत पर असर पड़ता है अतः सरल विषयों को भी पर्याप्त समय देना चाहिए।
- मन में दृढ़ इच्छा शक्ति होनी चाहिए इसके लिए जरूरी है कि अपने आप पर विश्वास रखें।
- नियमित रूप से अध्ययन करना चाहिए। गणित, विज्ञान, अंग्रेजी आदि विषयों को लिखकर याद करना चाहिए, इससे विषयवस्तु स्थायी रूप से याद भी रहेगी व लेख भी सुधरेगा।
- एक ही विषय को पढ़ते हुए दिमाग भी थक जाता है तथा बोरियत महसूस होने लगती है अतः एक विषय को लम्बे समय तक ना पढ़े।
- सुबह जल्दी उठकर पढ़ने की सोचें, यह देखा गया है कि शांत माहौल में कठिन विषय वस्तु अच्छी प्रकार से याद हो सकती है।
- हमें दिल लगाकर पढ़ना चाहिए, बार-बार परिणाम की बात सोचकर मानसिक तनाव नहीं करना चाहिए।
- तनावमुक्त रहें।
- समय का प्रबंधन सबसे आवश्यक है, अतः जिन विषयों को आपने कम समय दिया है या आपकी पकड़ कमज़ोर है, उन पर विशेष ध्यान देवें।
- गत वर्षों में पूछे गए प्रश्नों को हल करें। इससे समय का प्रबंधन व लिखने का अभ्यास होगा।
- पढ़ाई के साथ-साथ अपने खान-पान, दिनचर्या और शारीरिक तंदुरस्ती का भी ध्यान रखें।
- स्वयं को तन्दुरस्त रखें। मौसम का ध्यान रखते हुए आवश्यक कपड़े पहनें।
- 7-8 घंटे की नींद अवश्य लेवें, लगातार बैठे रहने से भी ऊर्जा स्तर घट जाता है इसीलिए समय-समय पर आराम भी करें।
- इन दिनों टेलीविजन, मोबाइल, व्हाटसएप, फेसबुक को अलविदा कह देवें और अपनी ऊर्जा का उपयोग पढ़ाई पर लगावें।
- अभिभावकों को भी चाहिए कि बच्चों पर अनावश्यक दबाव ना बनाएं, ना ही अपनी महत्त्वाकांक्षाओं को बच्चों पर हावी करें।
- परीक्षा में अंक लाने से अच्छा है ज्ञानार्जन क्योंकि जिनके पास ज्ञान है वे अंक कम होने पर भी जिंदगी में बेहतर कामयाबी प्राप्त करते हैं।

अंग्रेजी :

- अंग्रेजी के पेपर की शुरूआत होती है अनसीन पैसेज से, इसे सॉल्व करने से पहले इसके सवालों को पढ़े और फिर पैसेज पढ़े, सवालों के जवाब जैसे-तैसे मिलते जाए उन्हें हल्का सा अन्डरलाइन कर देवें और फिर लिख लेवें।
- राइटिंग सेक्शन के लिए लेटर और पैराग्राफ लिखने से पहले उसके महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं को लिख लें ताकि कोई बिन्दु छूट ना जाए।
- पाइन्ट टू पाइन्ट लिखने की कोशिश करें, लम्बा लिखने से बचें।
- ग्रामर ज्यादा व अच्छी करने के लिए ज्यादा से ज्यादा नमूने के प्रश्न, सॉल्व करने का अभ्यास करें।
- लिटरेचर में अच्छे अंकों के लिए पुस्तक का विस्तृत अध्ययन करें विशेषतः कविताओं व उनके कवियों के नाम।

विज्ञान :

- जो प्रश्न सबसे अच्छे याद हैं उन्हें पहले करें।
- रासायनिक समीकरण स्पष्ट लिखें।
- आंकिक प्रश्न आने पर सर्वप्रथम उसका सूत्र लिखें फिर उस प्रश्न के विभिन्न पदों को लिखें।
- प्रत्येक मात्रक की इकाई लिखें।
- चित्रों को रंगीन पेंसिल से बनाकर उसे नामांकित करें।
- टु द पॉइन्ट लिखें।
- विभिन्न प्रश्नों के अंशों को स्पष्ट लिखें व दो अंशों के बीच अन्तराल देवें।
- यदि किसी प्रश्न का सिद्धांत है तो उसे पहले लिखें।
- प्रश्नों के अंकभार को ध्यान में रखकर उनका उसी प्रकार जवाब लिखें।

गणित :

- छोटे सवालों में ज्यादा समय ना बिताएँ।
- जो अध्याय सरल लगते हैं उनका अधिक अभ्यास करें।
- जैसे ग्राफ, श्रे., गु.श्रे., निर्देशांक, ज्यामिति, रचनाएँ, माध्य, बहुलक तथा प्रायिकता।
- इस बार पाठ्यपुस्तक में कठिन बिन्दुओं पर QR कोड दिए गए है उनकी मदद से अपनी कठिनाई दूर कर सकते है।

अब वो टिप्स जो परीक्षा के दौरान याद रखने है-

- प्रातःकाल उठने के बाद योग क्रियाएँ जैसे कपालभाति व अनुलोम-विलोम 5-5

मिनट अवश्य करें।

- परीक्षा अवधि में घबराना नहीं चाहिए, सहज रहें। प्रश्न पत्र प्राप्त करते ही उसे ध्यान से पढ़ना चाहिए।
- अगर कुछ प्रश्न नहीं आते तो चिंता नहीं करनी चाहिए। जो भी प्रश्न सबसे अच्छा याद हो, उसे सबसे पहले करना चाहिए। सभी प्रश्नों को हल करना चाहिए।
- समय का प्रबंधन परीक्षा में बहुत जरूरी है अतः प्रश्न-पत्र के लिए निर्धारित समय को इस प्रकार विभाजित करें कि सम्पूर्ण प्रश्न-पत्र को हल किया जा सके।
- लेख, साफ, अक्षर स्पष्ट व मोटे होने चाहिए।
- अगर संभव हो तो निबंधात्मक प्रश्नों को बाद में करना चाहिए। जो प्रश्न कम याद हो या याद ना हो उन्हें अंत में हल करना चाहिए।
- प्रश्नों का उत्तर लिखते समय, उस प्रश्न विशेष के निर्धारित अंकों का भी ध्यान रखना चाहिए।
- लाल स्याही का प्रयोग नहीं करना चाहिए, पिन वाला नीली स्याही का पेन काम में लेना चाहिए।
- किसी भी बड़े प्रश्न का जिसके अनेक भाग हो, उनके उत्तर शीर्षक लिखकर अलग-अलग पैराग्राफ में लिखना चाहिए।
- यदि किसी प्रश्न में चित्र, ग्राफ हो तो स्पष्ट बनाएँ व चित्रों को नामांकित अवश्यक करें।
- प्रश्नों के सही क्रमांक ही उत्तर पुस्तिका में अंकित करें।
- प्रश्नों के उत्तर में दो या तीन लाइनें अंतराल के रूप में छोड़ दें।
- प्रश्न पत्र हल करने के बाद देख लेवें कि कोई प्रश्न रह तो नहीं गया है।
- यदि पूरक उत्तर पुस्तिका ली है तो अच्छे से मुख्य उत्तर पुस्तिका के पीछे बाँध देवें।

अन्त में दिए गए प्रश्न पत्र कि चिन्ता छोड़ आराम करें व अगले प्रश्न पत्र की तैयारी पूर्ण जोश से करें। सफलता आपके कदम अवश्य चूमेगी।

वरिष्ठ अध्यापक
रा.बा.मा.वि., उमरैण (अलवर)
मो: 8005979491

परीक्षा समसामयिक

परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु सार्थक प्रयास

❒ **हरीश कुमार वर्मा**

बालक का सर्वांगीण विकास विद्यालय के आकर्षक सुन्दर पर्यावरण, भौतिक, शैक्षिक एवं मानवीय संसाधनों के द्वारा ही संभव है।

बालक का मूल्यांकन हम विद्यालय में परीक्षा प्रणाली के द्वारा ही करते हैं, वह परीक्षा चाहे प्रायोगिक, मौखिक व लिखित होती है।

वर्तमान परीक्षा प्रणाली ऐसी है कि बालक को निरन्तर अध्ययनशील रहना पड़ता है। परीक्षा के टेस्ट, अर्द्धवार्षिक, प्रायोगिक, प्री बोर्ड तथा वार्षिक व बोर्ड परीक्षा के विभिन्न सोपानों को पार करने के बाद ही वह कक्षा दस व बारह उत्तीर्ण कर पाता है।

परीक्षा प्रणाली के अलावा कुछ घटक ऐसे हैं, जो अभिप्रेरणा व मार्गदर्शन प्रदान कर रहे हैं, जैसे-शिक्षकों का व्यक्तिगत मार्गदर्शन प्रदान करना है, अभिभावक समाज के नागरिक एवं घर परिवार का सकारात्मक मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण जो कि समय-समय पर बालकों को प्रभावित व प्रोत्साहित करता है।

नकारात्मक विचार, प्रताड़नाएँ, ईर्ष्या, स्वार्थपरक दृष्टिकोण बालकों के परिणाम में बाधक सिद्ध होते हैं। विद्यालय में कक्षा शिक्षण के अन्तर्गत प्रायोगिक कार्य सहशैक्षिक पद्धतियों से शिक्षण, पाठ्यक्रम नवाचार, क्रियात्मक अनुसंधान एवं नवीन शोध आधारित शिक्षण बालकों को परीक्षा में उत्तीर्ण करने के लिए सहायक सिद्ध होता है।

बोर्ड की कक्षाओं में मेरिट स्थान प्राप्त करने के लिए विद्यालय के शिक्षकों एवं संस्था प्रधान की प्रमुख भूमिका रहती है। विद्यालय में शिक्षण के अलावा बालक को घर पर नियमित 6 से 8 घण्टे नियमित स्वाध्याय करना अतिआवश्यक है। लिखित कार्य, व्यक्तिगत नोट्स तैयार करना, सामान्य ज्ञान में अभिवृद्धि, प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी, ई पाठ्यक्रम की तैयारी कक्षा में विशेष शिक्षण आदि घटक बालकों को अपनी श्रेणी में विशेष स्थान प्राप्त कराने में सहायक हो सकते हैं। अतः इन पर

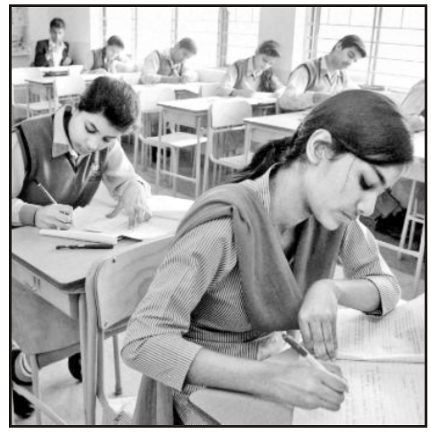

समुचित ध्यान दिया जाना चाहिए।

मेरिट में स्थान प्राप्त करने का स्वर्णिम अवसर गिनी चुनी संस्थाओं को ही मिल पाता है। यदि प्रत्येक विद्यालय कक्षा दस व बारह के विद्यार्थियों को उच्चतम श्रेणी व मेरिट में स्थान दिलाने के लिए विशेष प्रयास करे तो निश्चित ही सफलता मिल सकेगी।

बालकों को हम कक्षा में पूर्ण एकाग्रता से शिक्षण कार्य करावें मार्गदर्शन प्रदान करें, गत वर्षों के बोर्ड प्रश्न पत्रों को हल करावें। समय-समय पर अतिरिक्त कक्षाओं द्वारा शिक्षण करवाकर अभिभावकों से व्यक्तिगत सम्पर्क करके भी बोर्ड परीक्षा परिणाम में वृद्धि की जा सकती है।

मेरिट में स्थान प्राप्ति हेतु 13 सूत्रीय कार्यक्रम :

1. कक्षा 10 व 12 की बोर्ड परीक्षा में मेरिट में स्थान प्राप्त करने के लिए विद्यार्थी को स्वयं अपनी नियमित दिनचर्या बनाकर अध्ययन करना चाहिए अपने अध्ययन को सुव्यवस्थित कर शैक्षिक वातावरण बनाकर 6 से 8 घण्टे स्वाध्याय कर सकें।
2. शिक्षकगण भी अपनी-अपनी कक्षा के सर्वश्रेष्ठ, प्रतिभावान बालकों की सूची बना लेवें और उन्हें व्यक्तिगत रूप से समय-समय पर मार्गदर्शन प्रदान करें।
3. कक्षा 9 से 11 में वार्षिक परीक्षा का

परिणाम घोषित होते ही स्वयं संस्थाप्रधान सर्वोच्च प्राप्तांक लाने वाले बालकों के माता-पिता को आमंत्रित कर उन्हें सम्मानित करें तथा ग्रीष्मकाल में पृथक से अध्ययन हेतु अभिप्रेरित करें।

4. विद्यालय में समस्त विषयाध्यापक कठिन विषयों के लिए भी कक्षा 9 व 11 के बालकों को पृथक से उनकी सूची बनाकर कठिनाइयों का निराकरण करें।
5. प्रतिभावान विद्यार्थियों के माता-पिता को विद्यालय में प्रार्थना स्थल, पूर्व-जयन्ती सार्वजनिक समारोह तथा अभिभावक सम्मेलन में आमंत्रित कर प्रशंसा पत्र प्रदान करें। छात्रों की विभिन्न कठिनाइयों के सम्बन्ध में परस्पर चर्चा कर उन्हें निरन्तर आगे बढ़ाने के लिए सुझाव प्रदान करें।
6. प्रतिवर्ष माह जुलाई या सत्र के प्रारम्भ में चयनित श्रेष्ठ बालकों की सूची बनाकर उनकी लिखित परीक्षा लेकर आगे की पढ़ाई हेतु सकारात्मक सुझाव एवं स्वाध्याय हेतु अभिप्रेरित भी करें।
7. प्रत्येक विषयाध्यापक को पाठ की इकाई अध्ययन के पश्चात् उस इकाई से सम्बन्धित, वस्तुनिष्ठ, लघूत्तरात्मक, अतिलघूत्तरात्मक एवं निबन्धात्मक प्रश्नों का निर्माण कर उन्हें, कक्षा में बालकों की सहायता से हल कराया जाना चाहिए।
8. बालकों में प्रश्नों को भली प्रकार समझकर सटीक एवं प्रभावशाली भाषा में उत्तर देने की कला का विकास करना चाहिए। स्वयं अध्यापक को उदाहरण स्वरूप कुछ प्रश्नों को कक्षा में आदर्श उत्तर के रूप में प्रस्तुत करना चाहिए ताकि बालक शीघ्र ही अपना मनोबल बढ़ा सके। निबन्धात्मक प्रश्न में प्रत्येक भाग पृथक-पृथक परिच्छेदों में उत्तर देने का अभ्यास छात्रों को कराना चाहिए।
9. प्रत्येक जाँच परीक्षा, अर्द्धवार्षिक परीक्षा, प्री-बोर्ड परीक्षा में मेधावी छात्रों के प्राप्तांकों की समीक्षा कर जिन विषयों में अपेक्षाकृत कम प्राप्तांक हैं, उन्हें विशेष, मार्गदर्शन प्रदान करावें एवं कठिन परिश्रम द्वारा समय-समय पर आगे बढ़ाने की प्रेरणा स्वयं अध्यापक प्रदान करें।
10. प्रतिभावान चयनित छात्रों को गत 5 वर्षों के बोर्ड परीक्षा के प्रश्न पत्रों को हल कराके बिन्दुवार उत्तर लिखने का भी अभ्यास कराना चाहिए, ताकि परीक्षा में उत्तर लिखने की कला व तकनीकी का स्वतः विकास हो सके।
11. प्रतिवर्ष माह जुलाई से ही कक्षा में प्रतिभावान छात्र/छात्राओं की अपनी उपस्थिति शत-प्रतिशत सुनिश्चित करें। आकस्मिक कारणों से यदि ऐसे छात्र कक्षा में उपस्थित नहीं हो पाएँ तो, विषयाध्यापक का दायित्व है कि उन्हें अतिरिक्त समय प्रदान कर, उस अवधि में पढ़ाए गए प्रकरणों को पुनः समझाने का प्रयास करें। क्योंकि बोर्ड परीक्षा में किसी एक प्रश्न को छोड़ देने या उसका गलत उत्तर देने पर अंक काटे जाते हैं जिससे छात्र की वरीयता प्रभावित होती है।
12. प्रतिभावान विद्यार्थियों के घर पर, अध्ययन कक्ष में समस्त पाठ्य सामग्री, सामान्य ज्ञान वृद्धि हेतु आवश्यक पुस्तकें, दैनिक समाचार पत्र तथा स्वयं की स्वाध्याय की दिनचर्या लिखित में एक कैलेण्डर के रूप में अंकित करावें। घर के सभी सदस्य एवं विद्यालय के शिक्षक सभी मिलकर बालक को व्यक्तिगत रूप से अभिप्रेरित करें ताकि स्वयं बालक अपने आप को मेरिट में स्थान प्राप्त करने के लिए स्वयं को मानसिक रूप से तैयार कर सकें।
13. विद्यालय में संस्थाप्रधान अपने कक्ष में प्रतिभावान बालकों की सूची को प्रदर्शित करें तथा गत 5 वर्षों में जिले में मेरिट में स्थान प्राप्त करने वाले बालकों को आमंत्रित कर उनकी प्रतिभा से अपने विद्यालय के बालकों को अवगत कराएं, साथ ही चर्चा-परिचर्चा से बालकों को लाभान्वित कराने का प्रयास करें।

कक्षा 10-12 में मेरिट हेतु कुछ टिप्सः

1. पाठ्यपुस्तकों एवं संदर्भ पुस्तकों से बालक स्वयं, पूर्व में ही लिखकर अपने नोट्स तैयार करें।
2. स्वयं का मनोबल बनाए रखें, अतिविश्वास से दूर रहें।
3. समय पर नियंत्रण रखे, परीक्षा में प्रश्न पत्र के 3 घंटे के समय को आवश्यकतानुसार उत्तर लिखने के लिए पूर्व में ही विभाजन कर लें।
4. स्वस्थ शरीर, प्रसन्न मन, एकाग्रचित्त एवं परिश्रम का पूर्ण भरोसा रखें।
5. घर के वातावरण को स्वाध्याय के अनुकूल बनावें।
6. स्वयं का लक्ष्य (टारगेट) बनाकर, पूर्व तैयारी प्रारम्भ करें।
7. कठिन विषयों पर अधिक ध्यान दिया जाए।
8. एकाग्रचित्त होकर, पूर्ण आत्मविश्वास के साथ पढ़ाई में जुट जाएँ।
9. चिन्ता नहीं, पढ़ाई करें। असफलता की आशंका का त्याग करें।
10. अपने गुरुजनों से समय-समय पर मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद प्राप्त करें। अपनी कमजोरियों को दूर करने का प्रयास करें।
11. माता-पिता अभिभावक की प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं बुजुर्गों की मंगलकामनाएँ सदैव, बालकों को मेरिट में स्थान दिलाने में लाभान्वित करती हैं।

उपर्युक्त टिप्स एवं सूत्र लेखक की प्रायोजना है इसकी क्रियान्विति स्वयं बालक एवं विद्यालय के शिक्षकों की सूझबूझ का परिचायक सिद्ध होगी। अन्य प्रयास भी बालक को मेरिट में स्थान दिलाने में सहायक सिद्ध हो सकेंगे। विद्यालय में कुशल प्रबंधन प्रशासन व संस्था-प्रधान, अपने श्रेष्ठतम प्रयत्नों से संस्था की सौरभ को चहुँओर फैलाने में सार्थक हो सकेगा। अन्त में-

कोई भी कठिन मंजिल
रह सकती कब तुम से दूर है,
साथियों कदम बढ़ाना होगा,
इतनी शर्त जरूर है।

आइए, हम बच्चों के साथ उपर्युक्त टिप्स को शेयर कर उन्हें परीक्षाओं में उत्तम अंक दिलाने में भागीदार बनें।

पूर्व प्राचार्य
15, न्यू त्रिमूर्ति कॉम्पलेक्स, वैशाली अपार्टमेन्ट के आगे मनवाखेड़ा रोड, हिरणमगरी, सेक्टर-4, उदयपुर (राज.)
मो: 9982045522

कार्यशाला

सार्थक प्रयास

❒ सांवरमल गहनोलिया

माध्यमिक व उच्च माध्यमिक परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु चूरू मण्डल में वर्ष 2017-18 में उपनिदेशक श्री महेन्द्र सिंह चौधरी द्वारा कोर ग्रुप का गठन कर व कार्य योजना बनाकर बोर्ड परीक्षा परिणाम 2018 में मात्रात्मक व गुणात्मक सुधार का लक्ष्य निर्धारित किया गया।

चूरू जिले का वर्ष 2017 का माध्यमिक परीक्षा परिणाम 82.39 प्रतिशत व राज्य में 8 वाँ स्थान, उच्च माध्यमिक कला 91.13 प्रतिशत व राज्य में चौथा स्थान, उच्च माध्यमिक विज्ञान में 88.71 प्रतिशत व राज्य में 15 वाँ स्थान व वाणिज्य में 84.03 प्रतिशत व राज्य में 31 वाँ स्थान रहा।

वर्ष 2018 का परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु तीन स्तर प्रथम ऐसे छात्र जो 90 प्रतिशत से अधिक अंक लाने वाले विद्यार्थी, द्वितीय 60 प्रतिशत या 60 प्रतिशत के नजदीक वाले विद्यार्थी व तृतीय ऐसे छात्रों की सूचना प्राप्त कर उसी अनुरूप विषय विशेषज्ञों से अध्ययन सामग्री तैयार करने हेतु निर्देशित किया। मण्डल के चूरू, झुंझुनूं व सीकर में कार्यरत अनुभवी विषय विशेषज्ञों से माह दिसम्बर, 2017 में श्री किशनलाल गहनोलिया व सह संयोजक पूर्णाराम माहिच एवं इनकी टीम के द्वारा तैयार सामग्री को संयोजक, जिला समान परीक्षा एवं प्रधानाचार्य राजकीय बागला उमावि. चूरू द्वारा समान परीक्षा मद से मुद्रित करवाकर तहसील के नोडल अधिकारी कार्यालयों के माध्यम से राजकीय विद्यालयों को वितरित की गई। जिला स्तर पर चूरू के राजकीय बागला बालिका उमावि. चूरू व राजकीय टांटिया बालिका उमावि. सरदारशहर में शीतकालीन अवकाश में माध्यमिक व उच्च माध्यमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों हेतु विशेष शिविरों का आयोजन किया गया। 90 प्रतिशत से अधिक अंक श्रेणी के अन्तर्गत आने वाले विद्यार्थियों के लिए शीतकालीन अवकाश में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय ढाँढण (सीकर) में

आवासीय शिविर का आयोजन किया गया।

उक्त सम्पूर्ण मॉडल प्रश्न पत्रों की विस्तृत जानकारी प्रदान करने हेतु जिला मुख्यालय पर सम्पूर्ण विषयों के विषयाध्यापकों को अलग-अलग समूह में प्रशिक्षण दिया गया। उक्त प्रशिक्षण में मॉडल प्रश्न-पत्र व ब्लू प्रिंट की पूर्ण जानकारी दी गई। उक्त प्रशिक्षण के पश्चात् सभी विषयाध्यापकों ने ब्लू प्रिंट व मॉडल प्रश्न-पत्र के अनुसार विद्यालयों में विशेष तैयारी करवाई।

श्रीमान उपनिदेशक महोदय विषय विशेषज्ञों व कार्य योजना में सक्रिय भागीदारी का ही नतीजा रहा कि चूरू जिले का माध्यमिक परीक्षा 2018 का परीक्षा परिणाम 82.99 प्रतिशत व राज्य में 7 वाँ स्थान रहा। इसी प्रकार उच्च माध्यमिक कला वर्ग परीक्षा परिणाम 91.04 प्रतिशत व राज्य में छठा स्थान, विज्ञान वर्ग का 90.12 प्रतिशत व राज्य में दूसरा स्थान तथा वाणिज्य वर्ग का परिणाम 95.74 प्रतिशत व राज्य में तृतीय स्थान रहा। इस प्रयास के पश्चात् भी कुछ विद्यालयों व विषयाध्यापकों का परीक्षा परिणाम विभागीय मानदण्ड से न्यून रहा/न्यून परीक्षा परिणाम का कारण जानने व परिणाम उन्नयन के लिए अलग से प्रयास किया गया। इस प्रयास के अन्तर्गत एक विशेष कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में जिले में न्यून परीक्षा परिणाम वाले विषयाध्यापकों व जिले में उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम वाले विषयाध्यापकों को बुलाकर न्यून के कारणों पर चर्चा की व उत्कृष्ट परिणाम देने वाले विषयाध्यापकों से चर्चा की।

इसी क्रम में न्यून परीक्षा परिणाम देने वाले संस्थाप्रधान व जिले के गुणात्मक रूप से उत्कृष्ट परिणाम वाले संस्थाप्रधानों की भी कार्यशाला का आयोजन कर सूक्ष्म चर्चा की गई। सकारात्मक सुझावों को लिपिबद्ध किया गया। इस अवसर पर संयुक्त निदेशक डॉ. महेन्द्र कुमार चौधरी, जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक पितराम सिंह काला व अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक सांवरमल गहनोलिया ने सम्बल प्रदान किया।

2018 के बोर्ड परीक्षा परिणाम में मिशन 100 के प्रयास व परिणाम से प्रोत्साहित होकर वर्ष 2019 के माध्यमिक व उच्च माध्यमिक परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु संयुक्त निदेशक महोदय श्री महेन्द्र चौधरी के सान्निध्य में पुनः कार्य योजना तैयार कर विषय विशेषज्ञों से शिक्षण सामग्री/प्रश्न बैंक तैयार करवाकर अंतिम रूप से अनुमोदन किया। शीतकालीन अवकाश में तहसील मुख्यालय के सभी उच्च माध्यमिक विद्यालयों व राजकीय टांटिया बालिका उमावि. सरदारशहर में माध्यमिक व उच्च माध्यमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों हेतु विशेष तैयारी शिविरों का आयोजन किया गया। जिले भर के विशेष शिविरों में 645 विद्यार्थी लाभान्वित हुए।

बोर्ड परीक्षा 2019 हेतु प्रश्न बैंक मुद्रण कार्य संयोजक जिला समान परीक्षा योजना एवं प्रधानाचार्य राजकीय गोयनका उमावि. चूरू श्री कासम अली व सहसंयोजक श्री जीवणराम सैनी एवं इनकी टीम के द्वारा तैयार सामग्री को मुद्रित करवाया गया। प्रश्न बैंक का दिनांक 05.02.2019 को माननीय गोविन्द सिंह डोटासरा शिक्षा मंत्री राजस्थान सरकार जयपुर द्वारा विमोचन किया गया। सभी मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारियों को उसी दिन सुपुर्द कर दिनांक 06.02.19 को पी.ई.ई.ओ./संस्थाप्रधानों को वितरित किए गए। विद्यालयों में विषयाध्यापकों द्वारा तैयार प्रश्न बैंक का कार्य योजना तैयार कर उनके अनुसार विद्यार्थियों को

अधिकाधिक अभ्यास कार्य करवाते हुए बोर्ड परीक्षा 2019 से पूर्व तैयारी को अंजाम देते हुए अधिकाधिक अंकार्जन हेतु निर्देशित किया गया। परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु श्रीमान पितराम सिंह काला जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय माध्यमिक शिक्षा चूरू, श्री सांवरमल गहनोलिया अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय माध्यमिक शिक्षा चूरू, श्री रवीन्द्र सिंह राठौड़ वरिष्ठ सहायक, विषय विशेषज्ञों व विषय अध्यापकों के प्रयासों के फलस्वरूप बोर्ड परीक्षा 2017 में जिले का वाणिज्य संकाय का परिणाम राज्य में 31 वें स्थान पर था, जो बोर्ड परीक्षा 2018 में चूरू जिले के परिणाम में उल्लेखनीय उपलब्धि के साथ तृतीय स्थान पर रहा।

इसी प्रकार चूरू जिले का उच्च माध्यमिक विज्ञान वर्ग का वर्ष 2017 में बोर्ड परीक्षा परिणाम में राज्य स्तर पर 15वें स्थान पर था जो 2018 में बोर्ड परीक्षा में द्वितीय स्थान पर पहुँच गया। यह उपलब्धि सार्थक प्रयासों का परिणाम रही है और अधिक उपलब्धियाँ अर्जित करने के लिए प्रोत्साहित कर रही है।

बोर्ड परीक्षा 2019 में इस प्रकार जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक शिक्षा विभाग चूरू की कुशल व दक्ष टीम के समग्र प्रयासों से जिला आशातीत एवं अभूतपूर्व उपलब्धि को प्राप्त करेगा, ऐसी हमारी आशा।

अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी
(मुख्यालय) माध्यमिक शिक्षा, चूरू

बाल मनोविज्ञान

शिशु मन पर प्रकृति का प्रभाव

❒ सरोज राठौड़

मनुष्य की वृद्धि एवं विकास जन्म से पूर्व ही आरंभ हो जाता है लेकिन शैशवावस्था जीवन की प्रथम इकाई परिवार होती है और प्रथम पाठशाला परिवार के वातावरण, माता-पिता, अभिभावकों के सम्पर्क से ही उसका भावनात्मक विकास होता है, जो जीवनपर्यंत उसके व्यक्तित्व में परिलक्षित होता है।

शिशु मन एक नन्हे पौधे के समान होता है। जिस प्रकार प्रतिकूल वातावरण पौधे को मुरझा देता है उसी तरह अनुचित वातावरण शिशु के विकास में बाधा बनता है। पौधे के लिए उचित खाद-पानी की आवश्यकता होती है और शिशु के विकास में उचित वातावरण, संरक्षण एवं प्रेम की आवश्यकता होती है।

शिशु का मन गीली मिट्टी की तरह कोमल होता है जिसे मनचाहा रूप प्रदान कर सकते हैं, लेकिन उस बीज की अपनी एक विशिष्ट प्रकृति भी होती है, उसमें अपना मौलिक स्वरूप एवं विशेषता निहित होती है, जिसे पहिचान कर अलग प्रकार की देखरेख की आवश्यकता होती है। जिस प्रकार किसी बीज को अंकुरित होने के लिए अधिक तापमान, किसी को अधिक पानी एवं किसी को खुला वातावरण चाहिए उसी प्रकार प्रत्येक शिशु के विकास को अलग-अलग प्रक्रिया प्रभावित करती है।

शिशु मन पर व्यक्तिगत या पारिवारिक मंशाओं-आकांक्षाओं का अनावश्यक दबाव देना उन पर अत्याचार करने के समान ही होता है। इस दौरान मन पर पड़े निशान जीवन भर नहीं मिट पाते। अगर शैशवावस्था की स्मृतियाँ मधुर एवं सुखद है तो जीवन के संघर्ष में भी हर मोड़ पर प्रेरक शक्ति बनकर साथ देती है और यदि स्मृतियाँ कटु, दुःखद एवं त्रासदीपूर्ण हो तो इनके जख्म जीवनपर्यंत नासूर बनकर रिसते ही रहते हैं।

अतः शिशु का वास्तविक विकास करना एवं प्रकृति से सामंजस्य, माता-पिता एवं अभिभावकों का नैतिक दायित्व है।

शिशुओं में संस्कार एवं उचित आदतों के

निर्माण के द्वारा हम राष्ट्र निर्माण में सहयोग कर सकते हैं।

अतः कुछ महत्त्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना आवश्यक है-

1. शिशु के साथ स्नेहिल प्रेमपूर्वक व्यवहार किया जाए।
2. माता-पिता एवं अभिभावक उचित आचरण एवं व्यवहार को अपनाएँ।
3. शिशु के मौलिक अस्तित्व का सम्मान करें।
4. शिशु को उसकी प्रकृति एवं स्वभाव के अनुसार विकसित होने दें।
5. घर का वातावरण आस्था से परिपूर्ण हों।
6. शिशु के समक्ष स्वयं को आदर्श रूप में प्रस्तुत करें।

प्रकृति गुरुत्तर होती है। व्यवहार जगत के शिक्षण में प्रकृति का सबसे बड़ा योगदान होता है। जीवन के विभिन्न अनुभवों के साथ ही घटित होने वाले उतार-चढ़ावों के पीछे भी प्रकृति के प्रशिक्षण से संबंधित उच्च उद्देश्य ही निहित होता है। प्रकृति ही जीव के जीवन के विभिन्न आयामों को प्रकाशित करती है और उसकी पूर्णता का मार्ग प्रशस्त करती है।

प्रकृति की पाठशाला में व्यावहारिक शिक्षण द्वारा व्यक्तित्व में प्रखरता का समावेश एवं संवर्द्धन होता है। प्रकृति के साहचर्य से जीवन मार्ग की समस्त कठिनाइयाँ एवं समस्याएँ कालान्तर में समाप्त हो जाती है।

व्याख्याता
स्वामी विवेकानन्द कॉलेज फॉर
प्रोफेशनल स्टडीज, सींथल।
मो. 9828571112

जल संरक्षण

ढूँढ़ते रह जाओगे पीने का पानी

❒ सत्यनारायण नागौरी

जीने के लिए तीन चीजें हवा, पानी और भोजन बहुत जरूरी है। पानी की किल्लत को लेकर देश में हल्ला मचता रहा है। राजस्थान भी इससे अछूता नहीं। प्रदेश में शहरों से लेकर दूरदराज के इलाकों तक में पानी का संकट लगातार बढ़ रहा है।

नीति आयोग द्वारा जारी जल प्रबंधन सूचकांक रिपोर्ट के मुताबिक करीब 60 करोड़ लोग पानी की भीषण कमी से जूझ रहे हैं। साथ ही देश में करीब 70 फीसदी पानी पीने के लायक ही नहीं है। रिपोर्ट में कहा गया है कि आने वाले कुछ वर्षों में देश के कई इलाकों में बार-बार सूखा पड़ेगा। पानी की उपलब्धता को लेकर राजस्थान की स्थिति बहुत खराब मानी है। यह खतरनाक स्तर पर है। रेड जोन में होने के बावजूद भूजल का अंधाधुंध दोहन हर पल हो रहा है। ऐसे हालात सचमुच चिंताजनक है, जो हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए भीषण संकट ही नहीं बल्कि जानलेवा हालात भी खड़े कर सकती है।

प्रदेश में अति दोहन से पानी पाताल में पहुँच गया है। हर साल प्रदेश में 900 सरकारी व 4500 से ज्यादा प्राइवेट ट्यूबवेल खोदते समय ही दम तोड़ देते हैं। जोधपुर व बीकानेर में तो कई जगह 1500 फीट गहराई तक खोदने के बावजूद पानी नहीं मिल रहा है। भूजल विभाग के आँकड़ों में जमीन में पानी का स्तर 167 मीटर की गहराई तक पहुँच गया है। 'नेचर कंजरवेंसी' ने साढ़े सात लाख से अधिक आबादी वाले 500 शहरों के जल ढाँचे का अध्ययन करने के मुताबिक निष्कर्ष निकाला है कि बड़े शहर दुनिया की कुल भूमि के एक फीसदी हिस्से पर बसे हुए हैं, उन्हें ज्यादा जल संकट झेलना पड़ रहा है।

अगर मिले नहीं जल तो जीवन बेकार।
इसे बचाने के लिए रहें आप तैयार।।

केन्द्रीय जल मंत्रालय की ताजा रिपोर्ट में चौंकाने वाला खुलासा हुआ है। हाल ही जारी रिपोर्ट में बताया गया है कि देश में सबसे ज्यादा प्रदूषित पानी पीने वाले लोग राजस्थान में है। पूरे देश का 50 प्रतिशत फ्लोराइड युक्त पानी राजस्थान में हैं। प्रदेश की 5943 बस्तियों में फ्लोराइड का पानी सप्लाई हो रहा है, वहीं 12,589 बस्तियों में खारा पानी दिया जा रहा है।

जल संकट के लिए मनुष्य ही प्रधान रूप से उत्तरदायी है। अति औद्योगीकीकरण से बढ़ रहे भूमण्डलीय ताप (ग्लोबल वार्मिंग) से, ध्रुवीय हिम तथा ग्लेशियरों के शीघ्रता से पिघलने की आशंका व्यक्त की जा रही है। ऐसा अनुमान है कि पीने लायक पानी बह कर समुद्र में चला जाएगा। पर्यावरण की पुकार चेतावनी दे रही है कि जल जैसी बहुमूल्य वस्तु के प्रति हमारा उपेक्षापूर्ण रवैया कितना घातक होगा।

जल संरक्षण का जिम्मेदारी केवल सरकार के भरोसे ही छोड़ देना उचित नहीं है। समाज और लोगों को भी सोचना होगा सबसे बड़ी जरूरत वर्षा जल के संचय की है। हर बार बरसात में काफी मात्रा में पानी बह जाता है। इससे घर-घर संचित करने से ही पेयजल संकट को दूर किया जा सकता है।

गर्मी में आज भी पानी के लिए जूझ रहे लाखों लोग रोजाना सुबह उठते ही दिनभर में काम आने वाले पानी की चिन्ता में रहते हैं। हमें जल के लिए आज की नहीं कल के लिए भी जाग्रति लानी होगी, अन्यथा भावी पीढ़ी माफ नहीं करेगी।

कल्पना कीजिए कि पृथ्वी जल-विहीन हो जाए तो क्या दृश्य उपस्थित होगा? सारा जीव-जगत तड़प-तड़प कर दम तोड़ देगा। जल संरक्षण की जिम्मेदारी केवल सरकार के भरोसे ही छोड़ देना उचित नहीं है। अतः जल को बचाने की ओर जन-जन का ध्यान दिलाना चाहूँगा।

ढूँढ़ते रहोगे पानी, मुश्किल जिन्दगानी।
जल है तो कल है, बूँद-बूँद बचानी।।

व्याख्याता
राउमावि. केलवाड़ा, जिला-राजसमंद
(राज.)-313325
मो: 9610334431

एक राजा ने संत तुकाराम की ख्याति सुनी तो उन्होंने अपने एक मंत्री को उन्हें बुलाने के लिए उनके घर भेजा। मंत्री ने संत तुकाराम से साथ चलने की प्रार्थना की तो वे विनम्रतापूर्वक बोले-''मैं यहाँ बैठा-बैठा राजा की सफलता की कामना करता हूँ। राजदरबार में चलने पर मुझे भगवान की सेवा से विमुख होना पड़ेगा; इसलिए मैं आपके साथ चलने में असमर्थ हूँ।'' राजा ने जब संत तुकाराम की निस्पृहता की बात सुनी तो वे स्वयं ही उनके दर्शन के लिए पहुँचे। वहाँ पहुँचकर उन्होंने संत तुकाराम के चरणस्पर्श किए तथा स्वर्णमुद्राओं से भरी थैली उनके चरणों में अर्पित कर दी।

संत तुकाराम उस थैली को वापस करते हुए बोले-''महाराज! माया ही तो भक्ति में बाधक बनती है। प्रभु विट्ठल की कृपा से मुझे भोजन-वस्त्र, सब कुछ तो मिल ही जाता है। मैं इस धन का क्या करूँगा? इसे आप किसी धर्मकार्य में लगा दीजिए।'' राज उनकी वीतरागता देख नतमस्तक हो उठे।

साभार : युगनिर्माण योजना, सितम्बर 2018, पृष्ठ 9

आदेश-परिपत्र : मार्च, 2019

●1. विद्यालय विकास एवं प्रबंधन समिति (SDMC) की साधारण सभा तथा कार्यकारिणी समिति की निर्धारित समयावधि में बैठक आयोजन तथा पारित प्रस्तावों की क्रियान्विति हेतु सतत् प्रबोधन बाबत्। ● 2. हितकारी निधि, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर की अक्टूबर माह 2018 से फरवरी 2019 तक निम्नलिखित मृतक कर्मचारी के आश्रितों को आर्थिक सहायता/ कार्यरत कार्मिकों के बच्चों के व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत होने पर हितकारी निधि से वित्तीय सहायता/बीमारी पर सहायता के सम्बन्ध में। ● 3. चोरी-गबन-हानि प्रकरणों के त्वरित निस्तारण बाबत् दिशा-निर्देश। ● 4. माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा आयोज्य माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक परीक्षा-2019 के सुचारू संचालन एवं समुचित व्यवस्थाओं के सम्बन्ध में दिशा-निर्देश। ●5. राजकीय विद्यालय समय सारिणी में परिवर्तन।

1. विद्यालय विकास एवं प्रबंधन समिति (SDMC) की साधारण सभा तथा कार्यकारिणी समिति की निर्धारित समयावधि में बैठक आयोजन तथा पारित प्रस्तावों की क्रियान्विति हेतु सतत् प्रबोधन बाबत।

● कार्यालय-निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ●क्रमांकःशिविरा-माध्य/मा-स/SDMC/22423/2018-19/240 ● दिनांक : 06.02.2019 ● समस्त संभागीय, संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, राजस्थान ● विषय : विद्यालय विकास एवं प्रबंधन समिति (SDMC) की साधारण सभा तथा कार्यकारिणी समिति की निर्धारित समयावधि में बैठक आयोजन तथा पारित प्रस्तावों की क्रियान्विति हेतु सतत प्रबोधन बाबत। ●प्रसंगः समसंख्यक आदेश दिनांकः06.07.2016

उपर्युक्त विषयान्तर्गत लेख है कि शासकीय अनुमोदनोपरान्त प्रासंगिक आदेश द्वारा राज्य के समस्त माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में 'राजस्थान राज्य सहकारी संस्था पंजीकरण अधिनियम-1958' के प्रावधानान्तर्गत पंजीकृत संस्था के रूप में गठित 'विद्यालय विकास एवं प्रबंधन समिति (SDMC)' की संरचना एवं दायित्व निर्धारण सम्बन्धी स्थाई निर्देश जारी किए गए हैं। उक्त निर्देशों की पालना हेतु क्षेत्राधिकार में अग्रांकित विवरणानुसार क्रियान्विति एवं सतत प्रबोधन किया जाना सुनिश्चित करेंः-

1. SDMC की कार्यकारिणी समिति की प्रत्येक माह अमावस्या को निर्धारित बैठक नियमित रूप से आयोजित की जावे। उक्त बैठक में विद्यालय के शैक्षिक गुणवत्ता वृद्धि तथा भौतिक संरचना के विकास सम्बन्धी मुद्दों पर विमर्श उपरान्त पारित प्रस्तावों की क्रियान्विति हेतु अधीनस्थ संस्थाप्रधानों को नियमित मॉनिटरिंग हेतु पाबन्द किया जावे।
2. कार्यकारिणी समिति का कार्यकाल दो शैक्षिक सत्रों के लिए निर्धारित है। उक्तानुरूप कार्यकाल समाप्ति पर निर्धारित समयावधि में पदेन सदस्यों के अतिरिक्त अन्य सदस्यों के मनोनयन/निर्वाचन की कार्यवाही SDMC विधान के अनुरूप तत्काल सम्पादित की जानी सुनिश्चित की जाए। वर्तमान प्रावधानों के अनुरूप SDMC की कार्यकारिणी समिति में क्षेत्रीय विधायक द्वारा 2 प्रतिनिधियों का मनोनयन किया जाता है। उक्तानुरूप पन्द्रहवीं विधानसभा के निर्वाचन उपरान्त क्षेत्राधिकार के समस्त राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में SDMC की कार्यकारिणी समिति में क्षेत्रीय विधायक के 2 प्रतिनिधियों के नवीन मनोनयन/अनुमोदन की कार्यवाही प्राथमिकता से सम्पादित की जानी है।

उपर्युक्त निर्देशों की पालना क्षेत्राधिकार में सर्वोच्च प्राथमिकता से सम्पादित करवाई जानी सुनिश्चित करें।

(नथमल डिडेल), IAS, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकोनर।

2. हितकारी निधि, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर की अक्टूबर माह 2018 से फरवरी 2019 तक निम्नलिखित मृतक कर्मचारी के आश्रितों को आर्थिक सहायता/ कार्यरत कार्मिकों के बच्चों के व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत होने पर हितकारी निधि से वित्तीय सहायता/बीमारी पर सहायता के सम्बन्ध में।

● कार्यालय-निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/मा/हिनि/28215/2018-19 ● दिनांक : 19.02.2019 ● विषयः हितकारी निधि, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर की माह अक्टूबर 2018 से फरवरी 2019 तक निम्नलिखित मृतक कर्मचारी के आश्रितों को आर्थिक सहायता/कार्यरत कार्मिकों के बच्चों के व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत होने पर हितकारी निधि से वित्तीय सहायता/बीमारी पर सहायता के सम्बन्ध में।

हितकारी निधि, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर की माह अक्टूबर 2018 से फरवरी 2019 तक निम्नलिखित मृतक कर्मचारी के आश्रितों को आर्थिक सहायता/कार्यरत कार्मिकों के बच्चों के व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत होने पर हितकारी निधि से वित्तीय सहायता/बीमारी पर सहायता सूची निम्नानुसार है।

1. निधन पर सहायता

1	श्रीमती नुसरत जहां पत्नी स्व. श्री मोहम्मद कासिम, शा.शि., रा.उ.मा.वि. बैसार, (झालावाड़)	दुर्घटना	1,50,000/-
2	श्री सन्तुराम पति स्व. श्रीमती अरूणा व. अध्या., रा.मा.वि. पुनाड़िया, रानी (पाली)	सामान्य	50,000/-
3.	श्रीमती नन्दुदेवी पत्नी स्व. श्री रतनलाल तेली, सहा. क., रा.उ.मा.वि. केकड़ी (अजमेर)	सामान्य	50,000/-
4.	श्रीमती मंजुदेवी सुवालका पत्नी स्व. श्री जगदीश चन्द्र सुवालका, अध्या., रा.उ.प्रा.वि., दांता, लुहारिया (भीलवाड़ा)	सामान्य	50,000/-

5.	श्रीमती चमेली पत्नी स्व. श्री रामलाल, सहा. क., रा.उ.मा.वि. नदबई (भरतपुर)	सामान्य	50,000/-
6.	श्री वरूण मीणा पुत्र स्व. श्री लालाराम मीणा, अध्या. रा.उ.मा.वि. उन्दरा, पं.स. पिण्डवाड़ा (सिरोही)	दुर्घटना	1,50,000/-
7.	श्रीमती भंवर बाई पत्नी स्व. श्री महावीर सिंह, प्र.शा.स., रा.उ.मा.वि. छबड़ा (बारां)	सामान्य	50,000/-
8.	श्रीमती लक्ष्मीदेवी पत्नी स्व. श्री मोहनलाल अध्या. रा.उ.प्रा.वि. खेजरवाल (सीकर)	सामान्य	6,440/-
9.	श्रीमती सुमनदेवी पत्नी स्व. श्री शिवराम वर्मा, अध्या., रा.उ.मा.वि. दरीबा (सीकर)	सामान्य	50,000/-
10.	श्रीमती मायादेवी पत्नी स्व. श्री विरेन्द्र सिंह, अध्या., रा.उ.मा.वि. दरियारामपुरा (सीकर)	सामान्य	50,000/-
11.	श्रीमती केसरी मेघवाल पत्नी स्व.श्री उदयलाल मेघवाल, अध्या., रा.उ.प्रा.वि. वेलवी पं.स. धरियावद (प्रतापगढ़)	दुर्घटना	1,50,000/-
12.	श्रीमती संगीतादेवी पत्नी स्व. श्री तरूण भाटी, अध्या., रा.उ.प्रा.वि. हेमलियावास पं.स. मारवाड़ जं. (पाली)	सामान्य	50,000/-
13.	श्री नंद भंवर पत्नी स्व. श्री भँवर सिंह हाडा, वरि. सहा., रा.उ.मा.वि., नैनवा, (बूँदी)	सामान्य	50,000/-
14.	श्री यशपाल मोदी पति स्व. श्रीमती अंजना जैन, अध्या., रा.उ.मा.वि. वणोरी, (डूँगरपुर)	सामान्य	1,50,000/-
15.	श्रीमती मनिषा सिहाग पत्नी स्व. श्री कन्हैया लाल सिहाग, अध्या., रा.प्रा.वि. लादड़िया (चूरू)	दुर्घटना	1,50,000/-
16.	श्रीमती शिखा बिश्नोई पत्नी स्व. श्री राजेश कुमार बिश्नोई, अध्या., रा.प्रा.वि., बाजिया की खेड़ी बागोर, (भीलवाड़ा)	सामान्य	50,000/-
17.	श्रीमती पुष्पा सैनी पत्नी स्व. श्री नरेन्द्र सैनी, व.अ., रा.उ.मा.वि. आलपा, शिवगंज (सिरोही)	सामान्य	1,50,000/-
18.	श्री धमेन्द्र दीक्षित, च.श्रे.क., प्रारम्भिक शिक्षा निदेशालय, बीकानेर	बीमारी पर सहायता	5,000/-

2. व्यावसायिक शिक्षा पर सहायता

क्र. सं	कर्मचारी का नाम एवं पदस्थापन स्थान	छात्र/छात्रा का नाम	पाठ्यक्रम /अवधि	स्वीकृत राशि
1.	श्री हरिनारायण शर्मा, व. सहा. निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर	पूजा शर्मा	बी.एड, 2 वर्ष	5,000/-
2.	श्री घनश्याम खत्री, अध्या., रा.बा.प्रा.वि. सूरसागर, बीकानेर	कुसुम खत्री	बी.एड. 2 वर्ष	5,000/-
3.	श्री श्रवण कुमार कडेला, अध्या., रा.बा.उ.मा.वि. नापासर, बीकानेर	प्रतीक	इंजीनियरिंग 4 वर्ष	10,000/-
4.	श्री गोपाल राम, च. श्रेणी निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर	ओमप्रकाश	नर्सिंग 3 वर्ष	10,000/-
5.	श्री हनुमान प्रसाद व्यास, व.लि. निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर	नारायण प्रसाद	सी.ए. 4 वर्ष	9,500/-
6.	श्री गणेश राम, अध्या., रा.उ.प्रा.वि., दादे की जाल,	चन्दा	बी.एड. 2 वर्ष	5,000/-
7.	श्री भूराराम मेघवाल, अध्या., रा.प्रा.वि. गुडा रोड़, दियातरा (कोलायत, बीकानेर)	हिना	बी.एड. 2 वर्ष	5,000/-
8.	श्री शशि कुमार चौधरी क.सहा., निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर	रौनक	बी.एड. 2 वर्ष	5,000/-
9.	श्रीमती विद्या पारीक, अध्या., रा.प्रा.वि. गजनेर (कोलायत, बीकानेर)	दिव्या	बी.एड. 2 वर्ष	5,000/-
10.	श्रीमती रीटा खत्री, अध्या., रा.प्रा.वि. पुरोहित जी का नाडा, देसलसर पाँचू, बीकानेर	कनिका	बी.एड. 2 वर्ष	5,000/-
11.	श्री खुशाल चंद खत्री व.सहा. निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर	हिमांशु	इंजीनियरिंग 4 वर्ष	10,000/-
12.	श्री त्रिभुवन शंकर रंगा, प्रयोग सहा. रा.मो.मू.सी.मा.वि. बीकानेर	रक्षा रंगा	बी.एड., बी.एस.सी. 4 वर्ष	10,000/-
13.	श्री राजेन्द्र कुमार, सहा. प्रशा.अधि. निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर	हिमालय	बी.एड. 2 वर्ष	5,000/-
14.	श्रीमती मंजु अग्रवाल, अध्या., रा.उ.प्रा.वि. सुरधना पडिहारन, बीकानेर	अनमोल	बी.एड. 2 वर्ष	5,000/-
15.	श्री बजरंग लाल कलवाणी, सह.प्रशा.अधि. निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर	सरस्वती	बी.एड. 2 वर्ष	5,000/-
16.	श्रीमती पुष्पा शर्मा, व्याख्या., रा. शार्दुल उ.मा.वि. बीकानेर	शैलेजा शर्मा	इंजीनियरिंग 2 वर्ष	5,000/-
17.	श्री विजय बालेचा, व.सहा. निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर	प्रियंका बालेचा	बी.एड. 2 वर्ष	5,000/-

18.	श्री नवरतन सैनी, व.सहा. निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर	जयदीप शर्मा	इंजीनियरिंग 4 वर्ष	10,000/-
19.	श्री अनीता रेवड़ी, अध्यापक, रा.प्रा.वि. करमीसर, बीकानेर	वैशाली	इंजीनियरिंग 2 वर्ष	5,000/-
20.	श्री भूपसिंह सुनार, व. अध्या., रा.आ.उ.मा.वि. पेमासर, बीकानेर	सुमन	बी.एड. 2 वर्ष	5,000/-
21.	श्री रामदेव व. अध्या., रा.मा.वि. सोवा, (नोखा, बीकानेर)	पवन कुमार	बी.एड. 2 वर्ष	5,000/-
22.	श्री घीसाराम भूपेश, प्राध्यापक, रा.उ.मा.वि. तौलियासर (बीकानेर)	प्रीति	बी.एड. 2 वर्ष	5,000/-
23.	श्री ओमप्रकाश स्वामी, अध्या., रा.मा.वि. लोडेरा, (श्रीडूँगरगढ़, बीकानेर)	हर्ष स्वामी	इंजीनियरिंग 4 वर्ष	10,000/-
24.	श्रीमती सीता शर्मा, अध्या., रा.मा.वि. लोडेरा, (श्री डूँगरगढ़, बीकानेर)	गौरव शर्मा	इंजीनियरिंग 4 वर्ष	10,000/-
25.	श्री कमलेश कुमार, अध्या., रा.प्रा.वि. वार्ड नं. 5 बडोपल, हनुमानगढ़	विकासद्वीप	बी.एड. 2 वर्ष	5,000/-
26.	श्री सुशील कुमार, अध्या., रा.मा.वि. 44 LLW गंगानगर	आयुष	नर्सिंग 4 वर्ष	10,000/-
27.	श्री ओमप्रकाश पुनिया, प्र.अ., रा.मा.वि. जीवनदेसर गंगानगर	पवन	एस.टी.सी. 2 वर्ष	5,000/-
28.	श्री सुभाषचन्द्र जांगिड़, व्या., रा.आ.उ.मा.वि. हंसासर, झुंझुनूं	प्रज्ञा	मेडिकल 2 वर्ष	5,000/-
29.	श्री रोशन लाल, शा. शि., रा.उ.मा.वि. बाडलवास, सीकर	लिजा	मेडिकल 4½ वर्ष	10,000/-
30.	श्री रामकरण, व. अध्या., रा.बा.उ.मा.वि. बेसवा सीकर	नीलम	बी.एड. 2 वर्ष	5,000/-
31.	श्री शान्ति लाल चौबीसा, शा.शि., रा.उ.मा.वि. नारायणपुर (उदयपुर)	भारती	बी.एड. 2 वर्ष	5,000/-
32.	श्रीमती सुषमा अरोड़ा, व.अध्या., रा.मा.वि. सालपुर, ब्लॉक-3 मैरण, अलवर	नव्या	मेडिकल 4½ वर्ष	10,000/-
33.	श्री अब्दुल मजीद, व्या., रा.उ.मा.वि., सिन्दूकी (दौसा)	आरिफ उस्मानी	मेडिकल 5½ वर्ष	10,000/-
34.	श्री राधेश्याम गुप्ता, व्या., रा.उ.मा.वि. टोडा ठेकला, (दौसा)	शुभम कुमार	बी.एड. 2 वर्ष	5,000/-
35.	श्री ओमप्रकाश महावर, प्रधानाचार्य, रा.उ.मा.वि. मूंडघिस्या, बांदीकुई (दौसा)	सुरभी	मेडिकल 4½ वर्ष	10,000/-
36.	श्री भानु कुमार जैन, व.अध्या., रा.मा.वि. पाडलिया, सुल्तानपुर, (कोटा)	आयुषी	मेडिकल 5½ वर्ष	10,000/-
37.	श्री विजयपाल सिंह, प्रधानाचार्य, रा.उ.मा.वि. मूण्डक्या (बारां)	कृष्णा	बी.एस.सी., बी.एड. 4 वर्ष	10,000/-
38.	श्री हरलाल मीणा, अध्यापक, रा.उ.प्रा.वि., कूण्डी (कोटा)	दीपिका	बी.एस.सी. बी.एड. 4 वर्ष	10,000/-
39.	श्री भागचन्द जैन, व.अ., रा.उ.मा.वि. पाडलिया, (अजमेर)	अरिहन्त	इंजीनियरिंग 4 वर्ष	10,000/-
40.	श्री सुरेश भारती, व. अध्या., सावित्री रा.बा.उ.मा.वि., अजमेर	अनिता गुंसाई	इंजीनियरिंग 2 वर्ष	5,000/-
41.	श्री विनोद कुमार जैन, व्याख्याता, रा.उ.मा.वि. केकड़ी, अजमेर	प्रियम जैन	इंजीनियरिंग 4 वर्ष	10,000/-
42.	श्री मांगीलाल माली, अध्या., रा.मा.वि. चैनपुरा मालपुरा, टोंक	लक्ष्मीकांत	इंजीनियरिंग 4 वर्ष	10,000/-
43.	श्री अरविन्द कुमार टाक, अध्या., रा.उ.मा.वि. बरोल, (मालपुरा)	अभिषेक	नर्सिंग 3½ वर्ष	10,000/-
44.	श्री पुष्कर लाल तेली, शा.शि., रा.उ.प्रा.वि. नाथडियाम (सुवाणा, भीलवाड़ा)	नारायण	इंजीनियरिंग 4 वर्ष	10,000/-
45.	श्री गोपीलाल मीना, व्याख्याता, रा.उ.मा.वि. टीठोड़ा जागीर (भीलवाड़ा)	प्रमोद कुमार	बी.एस.सी. बी.एड. 4 वर्ष	10,000/-
46.	श्री रामलाल रेगर, प्रधानाचार्य, रा.उ.मा.वि. टीठोड़ा जागीर जहाजपुर (भीलवाड़ा)	धर्मराज	मेडिकल 2 वर्ष	5,000/-
47.	श्री डूंगरदान, अध्यापक रा.उ.मा.वि. जसवंताबाद, रियाबड़ी (नागौर)	सुखवीर सिंह	नर्सिंग 3½ वर्ष	10,000/-
48.	श्री रघुवीर सिंह, व्याख्याता, रा.उ.मा.वि., नुंवा (नागौर)	कुसुम	बी.एस.सी., बी.एड. 4 वर्ष	10,000/-

49.	श्री रामेश्वर लाल, व.अ., रा.उ.मा.वि. नुंवा (नागौर)	राजवीर	बी.ए., बी.एड. 4 वर्ष	10,000/-
50.	श्री सतीश चन्द्र जोशी, अध्या., रा.उ.मा.वि. कोहाला (बाँसवाड़ा)	सुरभि जोशी	बी.एड. 2 वर्ष	5,000/-
51.	श्री भानसिंह राव, प्रधानाचार्य, रा.उ.मा.वि. ईडरा (डूंगला, चित्तौड़गढ़)	सुरेन्द्र सिंह	इंजीनियरिंग 4 वर्ष	10,000/-
52.	श्री दिनेश पालीवाल, व्या., रा.उ.मा.वि. केसूली (राजसमंद)	पीयूष	बी.एस.सी., बी.एड. 4 वर्ष	10,000/-
53.	श्री रामस्वरूप रेगर, व्या. रा.उ.मा.वि. खांजना डूंगर (सवाई माधोपुर)	ललित किशोर	बी.एड. 2 वर्ष	5,000/-
54.	श्री विनोद कुमार जैन, व. अध्या., रा.बा.उ.मा.वि. शेरपुर, खिलचीपुर (सवाई माधोपुर)	भूमिका जैन	इंजीनियरिंग 4 वर्ष	10,000/-
55.	श्री जन्सीलाल गुर्जर, व.अध्या., रा.आ.उ.मा.वि. सारसोप (सवाई माधोपुर)	देव नारायण	बी.एड. 2 वर्ष	5,000/-
56.	श्री नजीर खान, व.अध्या., रा.उ.मा.वि. खूंटला (सवाई माधोपुर)	मुस्तकीम खान	मेडिकल 5½ वर्ष	10,000/-
57.	श्री घनश्याम गुप्ता, अध्या., रा.उ.मा.वि., ककराला, (बामनवास, सवाई माधोपुर)	सौरभ	बी.एड. 2 वर्ष	5,000/-
58.	श्री हरकेश मीना, अध्यापक, रा.उ.मा.वि. सुनारी (सवाई माधोपुर)	खेलन्ता मीना	बी.एड. 2 वर्ष	5,000/-
59.	श्री भागचन्द मीना, अध्यापक, रा.उ.मा.वि. झोंपड़ा (सवाई माधोपुर)	रेखा मीणा	बी.एड. 2 वर्ष	5,000/-
60.	श्री रामचरण जाट, अध्यापक, रा.उ.मा.वि. भदलाव (सवाई माधोपुर)	विकास	बी.एस.सी., बी.एड. 4 वर्ष	10,000/-
61.	श्रीमती सावित्री वर्मा, अध्या., रा.उ.मा.वि. सारसोप, (सवाई माधोपुर)	आशीष	इंजीनियरिंग 4 वर्ष	10,000/-
62.	श्री कृष्ण कुमार व्यास, व.अ., रा.अन्ध वि. जोधपुर	दीक्षिता व्यास	एस.टी.सी. 2 वर्ष	5,000/-
63.	श्री घनश्याम लाल, पुस्तकालय अध्यक्ष, रा.उ.मा.वि. जाजीवाल कलां (जोधपुर)	भाग्यश्री	बी.एस.सी., बी.एड., 4 वर्ष	10,000/-
64.	श्री कृष्ण गोपाल लक्षकार, पुस्तकालय अध्यक्ष, रा.बा.उ.मा.वि. बिलाड़ा (जोधपुर)	तेजस्विनी	बी.एस.सी., बी.एड., 4 वर्ष	10,000/-
65.	श्री ओमप्रकाश जीनगर, अध्या., रा.उ.मा.वि. मादलिया (जोधपुर)	हेमन्त राज	बी.एड. 2 वर्ष	5,000/-
66.	श्री मांगीलाल, अध्यापक, रा.उ.मा.वि., मादलिया, (जोधपुर)	जितेन्द्र कुमार	मेडिकल 2 वर्ष	5,000/-
67.	श्री राजूराम चौधरी, व्याख्याता, रा.उ.मा.वि. बामणोर भंवरशाह (बाड़मेर)	गीता	एस.टी.सी. 2 वर्ष	5,000/-
68.	श्री राजेन्द्र कुमार चौधरी, अध्या., रा.उ.मा.वि. खुडासा, (बाड़मेर)	पीराराम	बी.एड. 2 वर्ष	5,000/-
69.	श्री झण्डूराम सैनी, प्रधानाचार्य, रा.उ.मा.वि. पिपाला (पाली)	अमिता	बी.एड. 2 वर्ष	5,000/-
70.	श्री तेजराम चौधरी, व्या. रा.आ.उ.मा.वि. मुण्डारा (पाली)	रवीना चौधरी	बी.एड. 2 वर्ष	5,000/-
71.	श्री चन्द्रपाल राव, प्राध्या., आ.रा.उ.मा.वि. रूखाडा (सिरोही)	राहुल	इंजीनियरिंग 4 वर्ष	10,000/-
72.	श्री भानाराम, अध्यापक, रा.आ.उ.मा.वि. पामेरा (सिरोही)	गौतम	नर्सिंग 4 वर्ष	10,000/-
73.	श्री शैतान सिंह देवड़ा, अध्या., आ.रा.सी.मा.वि. मोरली (सिरोही)	अनुश्री कुँवर	एस.टी.सी. 2 वर्ष	5,000/-
74.	श्री रतन सिंह राठौड़, प्रधानाचार्य, रा.उ.मा.वि. अरठवाड़ा (सिरोही)	महिपाल सिंह	इंजीनियरिंग 4 वर्ष	10,000/-
75.	श्री जैसाराम, पुस्तकालय अध्यक्ष, आ.रा.उ.मा.वि., जूनीबाल (जालोर)	पूजा	एस.टी.सी. 2 वर्ष	5,000/-
76.	श्री नारायण लाल मेनारिया, अध्या., रा.उ.प्रा.वि. कापड़ियों का खेड़ा, अमरपुरा (उदयपुर)	कृष्णा मेनारिया	बी.एड. 2 वर्ष	5,000/-

● **(घीसा लाल शर्मा)** उप निदेशक (प्रशासन) एवं सचिव हितकारी निधि माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।

3. चोरी–गबन–हानि प्रकरणों के त्वरित निस्तारण बाबत दिशा–निर्देश।

● कार्यालय निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ●क्रमांक : शिविरा/मा./लेखा डी–4/28199 (परिपत्र)/18–19/91 दिनांक : 20.02.19 ● जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) शिक्षा विभाग। (समस्त) ● विषय : चोरी–गबन–हानि प्रकरणों के त्वरित निस्तारण बाबत दिशा–निर्देश।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत लेख है कि चोरी/गबन/हानि प्रकरणों के समयबद्ध निस्तारण हेतु इस कार्यालय द्वारा आपको निरन्तर स्मरण पत्र दिए जा रहे हैं। फिर भी आप द्वारा प्रकरणों को गंभीरता से नहीं लिया जा रहा है। ऐसी स्थिति खेदजनक है। अतः इस संबंध में आपको निर्देशित किया जाता है कि चोरी/गबन/हानि प्रकरणों में कार्यवाही अविलम्ब सम्पादित किए जाने हेतु निम्न दिशा–निर्देशों की पालना सुनिश्चित करें–

1. आप/शाला प्रधान द्वारा समय पर चोरी/गबन/हानि के अधिकांश प्रकरणों की सूचना निदेशालय को नहीं दी जाती है। कई बार तो कार्यालय को समाचार–पत्रों के माध्यम से चोरी/हानि की खबर मिलती है। संबंधित विद्यालय/आप द्वारा लम्बे समय तक इसकी सूचना निदेशालय को नहीं भिजवाने के कारण राजकार्य में बाधा उत्पन्न होती है जो कि घोर लापरवाही को इंगित करता है। अतः इस संबंध में आपकी व संबंधित शाला प्रधान की यह जिम्मेदारी होती है कि वह चोरी/गबन/हानि की घटना होते ही सामान्य वित्तीय एवं लेखा नियम के परिशिष्ट–3 के अनुसार घटना की सूचना अविलम्ब पुलिस में दर्ज करवाकर इसकी प्रगति से इस कार्यालय को भी अवगत करावे। इसकी अवहेलना होने पर जिम्मेदार कार्मिक के विरूद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही की जावेगी।
2. यह भी ध्यान में आया है कि प्रकरणों की सूचना महालेखाकार द्वारा निर्धारित प्रपत्र एनेक्सर–4 में चार प्रतियों में तैयार कर सामान्य वित्तीय एवं लेखा नियम 20 के अंतर्गत इस कार्यालय को तथा महालेखाकार एवं निदेशक निरीक्षण विभाग, राजस्थान, जयपुर को समय पर नहीं भिजवाई जाती है। अतः प्रत्येक प्रकरण की सूचना निर्धारित प्रपत्रों में इस कार्यालय को अविलम्ब भिजवाना सुनिश्चित करें तथा साथ ही नियमानुसार राशि रु. 2000/– से ऊपर के समस्त चोरी/हानि/गबन प्रकरणों को निश्चित रूप से महालेखाकार कार्यालय में दर्ज करवावें।
3. आप द्वारा अधिकांश प्रकरणों में पुलिस द्वारा लगाई गई एफआर (अन्तिम रिपोर्ट) की प्रति से ही अवगत करवाया जाता है। परन्तु प्रकरणों में नियमानुसार न्यायालय द्वारा प्रमाणित एफआर प्रति की भी आवश्यकता होती है। अतः इस संबंध में समस्त अधीनस्थों को ये निर्देश प्रदान करें कि यदि प्रकरण में एफआर लग चुकी है तो न्यायालय से प्रमाणित एफआर की प्रति प्राप्त करें और यदि प्रकरण न्यायालय में चल रहा है तो इसकी अद्यतन स्थिति से अवगत करवाना सुनिश्चित करें।
4. आप द्वारा चोरी/गबन/हानि मामले में सक्षम स्तर से की जाने वाली प्रारम्भिक जाँच को समय पर नहीं किया जाता है जिससे दोषी कार्मिक सेवानिवृत हो जाता है और वसूली की कार्यवाही में अनावश्यक विलम्ब होता है। यह भी ध्यान में आया है कि आप द्वारा अधिकांश प्रकरणों में तो अभी तक प्राथमिक जाँच की शुरूआत ही नहीं की गई है। अतः उक्त प्रकरणों में की जाने वाली प्रारम्भिक जाँच को 90 कार्य दिवस के भीतर हैण्डबुक ऑफ डिसीप्लेनरी प्रोसिडिंग के पैरा 2 सामान्य वित्तीय एवं लेखा नियम 20 (1) में अंकित निर्देशों के अनुसार अविलम्ब सम्पन्न करवाना सुनिश्चित करे तथा अपना जाँच प्रतिवेदन कार्मिक विभाग द्वारा निर्धारित परिशिष्ठ अ.ब.स.द. टिप्पणी सहित दोषी कर्मचारियों/अधिकारियों के विरुद्ध आरोप पत्र एवं आरोप विवरण पत्र एक माह की अवधि में इस कार्यालय को भिजवाया जाना सुनिश्चित करें।
5. जाँच में दोषी पाए जाने वाले कार्मिकों के विरुद्ध विभागीय जाँच कार्यवाही एवं वसूली मय प्रमाणित साक्ष्य की कार्यवाही समयबद्ध तरीके से सम्पन्न किया जाना सुनिश्चित किया जावे ताकि दोषी लोकसेवकों के सेवानिवृत्त होने से पूर्व ही विभागीय कार्यवाही सम्पन्न कर हानि की राशि वसूल की जा सके।
6. ध्यान रहें की प्रकरण से संबंधित कोई अधिकारी/कर्मचारी यदि सेवानिवृत्त हो जाता है तो उसकी पेंशन/ग्रेच्यूटी आदि से वसूली की कार्यवाही अवलिम्ब सम्पन्न किया जाना सुनिश्चित करे और उससे संबंधित वसूली फिर भी बकाया रह जाती है तो इस अवस्था में Malafide intention से किए गए विलम्ब में जिम्मेदारी निर्धारित करते हुए अधिकारी/कर्मचारी के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही प्रस्तावित करें।
7. जिला शिक्षा अधिकारी स्तर पर नियुक्त विधि अधिकारी को कोर्ट में लम्बित प्रकरण को efficient and time bound manner में dispose करने हेतु निर्देशित किया जाए।
8. कम्प्यूटर/उपकरण चोरी के प्रकरणों में यह ध्यान में आया है कि अधिकांश शालाओं में कम्प्यूटर लैब/उपकरण लगाने के लिए जितने भी फेज राज्य सरकार द्वारा चलाए गए उनकी निविदा/agreement की कॉपी मय परिमापक सूची/पुस्तकीय मुल्य शाला प्रधान के पास नहीं रहती है। जिससे राज्य सरकार को कितनी राशि की हानि हुई है, का पता चल नही पाता है। आप/शाला प्रधान द्वारा बीमित अवधि में चोरी गए कम्प्यूटर/उपकरणों की संबंधित फर्मों से पुनःस्थापना की कार्यवाही भी समय पर नहीं की जाती है और ना ही संविदा अवधि में कम्प्यूटर सेवा के बाधित होने पर फर्म से कोई पेनल्टी राशि की वसूली से संबंधित कोई सूचना दी जाती है। अतः इस संबंध में आपकों ये सख्त निर्देश दिया जाता है कि समस्त शालाप्रधानों के पास कम्प्यूटर/उपकरण की निविदा/agreement की कॉपी मय परिमापक सूची/पुस्तकीय मूल्य की एक प्रति प्रदान करें तथा संबंधित फर्म से चोरी गए कम्प्यूटर/उपकरण की पुनः स्थापना की कार्यवाही अवलिम्ब संपादित करवाना सुनिश्चित करें।

''उक्त समस्त दिशा निर्देशों की गंभीरता से पालना सुनिश्चित की जावे।''

● **(नथमल डिडेल)** आई.ए.एस. निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

4. माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा आयोज्य माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक परीक्षा-2019 के सुचारू संचालन एवं समुचित व्यवस्थाओं के सम्बन्ध में दिशा-निर्देश।

● कार्यालय-निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-माध्य/मा/मोनिटरिंग/बोर्ड परीक्षा निर्देश/2019/77 ● दिनांक : 22.02.2019 ● (1)समस्त सम्भागीय संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा। ● (2)समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी एवं पदेन जिला परियोजना समन्वयक, समग्र शिक्षा अभियान। ● (3)समस्त जिला शिक्षा अधिकारी(मुख्यालय)-माध्यमिक/प्रारम्भिक। ● (4)समस्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी एवं पदेन ब्लॉक सन्दर्भ केन्द्र प्रभारी, समग्र शिक्षा अभियान। ● विषय : माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा आयोज्य माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक परीक्षा-2019 के सुचारू संचालन एवं समुचित व्यवस्थाओं के सम्बन्ध में दिशा-निर्देश। ● प्रसंग : शासन का निर्देश पत्रांक: पं.3(7) शिक्षा-6/2015, जयपुर, दिनांक : 19.2.2019

उपर्युक्त विषय एवं प्रसंगान्तर्गत लेख है कि माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा आयोजित की जाने वाली बोर्ड परीक्षा राज्य में सबसे बड़ी सार्वजनिक परीक्षा है। इस वर्ष माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर की उच्च माध्यमिक स्तर की परीक्षाएँ 07 मार्च, 2019 से तथा माध्यमिक स्तर की परीक्षाएँ 14 मार्च, 2019 से प्रारम्भ हो रही है।इनमें 20.15 लाख परीक्षार्थी 5,578 परीक्षा केन्द्रो पर प्रविष्ठ होंगे। इसके सफल संचालन के लिए शिक्षा विभाग की भी महती जिम्मेदारी है। अत: बोर्ड परीक्षा आयोजन के विभिन्न घटकों के माध्यम से प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े हुए समस्त विभागीय अधिकारियों/कर्मचारियों हेतु राज्य सरकार एवं बोर्ड द्वारा समय-समय पर जारी आदेशों/निर्देशों के अनुक्रम में उक्त परीक्षाओं के सुचारू आयोजन हेतु अग्रिम तथा आवश्यक व्यवस्थाएँ एवं वांछनीय सावधानियाँ सुनिश्चित किए जाने बाबत निर्देश एतद् द्वारा जारी किए जाते हैं :-

1. बोर्ड परीक्षाओं में संवेदनशील/अतिसंवेदनशील परीक्षा केन्द्रों, उत्तर-पुस्तिका संग्रहण वितरण केन्द्रों पर सी.सी.टी.वी. कैमरे से वेबकास्टिंग द्वारा निगरानी की जाएगी।
2. जिला स्तर पर कलक्टर की तरफ से अवकाश घोषित किए जाने की स्थिति में भी बोर्ड परीक्षाएँ प्रभावित नहीं होगी तथा निश्चित तिथि को संचालित की जाएगी।

(अ) प्रशासनिक एवं अन्य व्यवस्थाएँ :-

शासकीय निर्देशानुरूप शिक्षा विभाग एवं जिला प्रशासन तथा पुलिस विभाग में पारस्परिक सहयोग एवं समन्वय की सुनिश्चितता हेतु जिला स्तरीय परीक्षा संचालन समिति का गठन प्रत्येक जिले में अग्रांकित विवरणानुसार किया जाना है :-

(i) जिला कलक्टर - अध्यक्ष
(ii) जिला पुलिस अधीक्षक - सह-अध्यक्ष
(iii) मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी - सदस्य
(iv) जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)-माध्यमिक सदस्य सचिव
(v) अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी (शैक्षिक),कार्यालय-जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) माध्यमिक - सदस्य
(vi) जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)- प्रारम्भिक सदस्य

इस कार्य में सभी संबंधित उप-खण्ड मजिस्ट्रेट, वृत्ताधिकारी, तहसीलदार एवं थानाधिकारी अपने-अपने क्षेत्र में संयुक्त निरीक्षण कर आवश्यक व्यवस्था व परीक्षा संचालन सुनिश्चित करेंगे। ये सभी अधिकारी जिला परीक्षा संचालन समिति के दिशा-निर्देशों के अनुसार कार्य करेंगे। प्रश्न-पत्रों की गोपनीयता व सुरक्षा व्यवस्था प्रभारी तरीके से सुनिश्चित की जाए, जिसकी समस्त जिम्मेदारी व उत्तरदायित्व जिला स्तरीय परीक्षा संचालन समिति का रहेगा।

(ब) गृह विभाग से सम्बन्धित :-

1. परीक्षाओं के दौरान प्रत्येक जिले के पुलिस कार्यालय में कंट्रोल रूम स्थापित किए जाएँगे। कंट्रोल रूप के प्रभारी अधिकारी के नाम तथा टेलीफोन नम्बर की सूचना सम्बन्धित जिला शिक्षा अधिकारी एवं सचिव, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान अजमेर को शीघ्र उपलब्ध कराई जाए। परीक्षा के दौरान कही भी अवांछित घटना होने अथवा संभावना होने की जानकारी होने पर तत्काल इस कंट्रोल रूप को अवगत करवाए जाने पर पुलिस विभाग द्वारा त्वरित गति कार्यवाही की जाएगी।
2. दौसा, करौली, सवाईमाधोपुर, बाड़मेर एवं जोधपुर सामूहिक नकल की दृष्टि से तथा सीकर, नागौर एवं झुंझुनूं जिले प्रश्न-पत्रों की सुरक्षा की दृष्टि से अतिसंवेदनशील है। अत: इन जिलों में परीक्षा केन्द्रों पर पुलिस की विशेष सुरक्षा व्यवस्था की जाए।
3. राज्य के जिला शिक्षा अधिकारियों व उड़नदस्तों की रिपोर्ट तथा गत वर्ष के अनुभव के आधार पर चिन्हित संवेदनशील तथा अतिसंवेदनशील केन्द्रों पर अतिरिक्त सुरक्षा व्यवस्था की जाए ताकि असामाजिक तत्व परीक्षा व्यवस्था को प्रभावित नहीं कर सकें। बोर्ड द्वारा इनकी सूची सम्बन्धित विभाग को भेजी जाएगी। अतिसंवेदनशील केन्द्रों पर चार-चार पुलिसकर्मी तथा संवेदनशील केन्द्रों पर दो-दो पुलिसकर्मी की व्यवस्था की जाएगी। ये पुलिसकर्मी पुलिस विभाग द्वारा नि:शुल्क नियुक्त किए जाएँगे। इसके अतिरिक्त निष्पक्ष परीक्षा संचालन के लिए जहाँ भी शांति व्यवस्था कायम करने हेतु पुलिस बल की आवश्यकता हो, वहाँ पर्याप्त मात्रा में पुलिस बल उपलब्ध करवाया जाए।
4. शहरी क्षेत्रों मे स्थित लगभग सभी परीक्षा केन्द्र तथा ग्रामीण क्षेत्रों में पुलिस थानों से 10 किमी की परिधि में स्थित परीक्षा केन्द्रों के प्रश्न-पत्र समीप के पुलिस थाने में शिक्षा विभाग की अलमारियों में रखे जाएँगे। साथ ही, ऐसे केन्द्र जो थानों से 14-15 किमी की दूरी पर स्थित है तथा वहाँ से प्रश्न-पत्र रोजाना थाने से केन्द्र पर लाना सुरक्षित व सुविधाजनक हो, उनके प्रश्न-पत्र भी सम्बन्धित जिला शिक्षा अधिकारी की सहमति से सम्बन्धित थाने में शिक्षा विभाग की आलमारियों में रखे जा सकेंगे। इन सभी परीक्षा केन्द्रों की सूची जिला शिक्षा अधिकारीगण द्वारा पुलिस अधीक्षक कार्यालय में समय पर उपलब्ध करवाई जाएगी।

जहाँ तक सम्भव हो थानों अथवा पुलिस चौकियों में ही प्रश्न-पत्र पत्र रखें जावें। थानों या पुलिस चौकी पर रखी प्रश्न-पत्र अलमारी की सम्पूर्ण सुरक्षा व्यवस्था पुलिस विभाग द्वारा सुनिश्चित की जाएगी।

5. विशेष स्थिति होने से जिन केन्द्रों की प्रश्न-पत्रों की अलमारी थाने/चौकी पर नहीं रखी जा सकती, उनके लिए अग्रांकित व्यवस्था की जाए :-

A. एक ही स्थान पर एक से अधिक परीक्षा केन्द्र होने पर किसी राजकीय विद्यालय को नोडल परीक्षा केन्द्र बनाकर उन सभी केन्द्रों के प्रश्न-पत्रों की अलमारी नोडल परीक्षा केन्द्र पर रखी जाए।

B. जो केन्द्र थाने तथा नोडल परीक्षा केन्द्रों से अधिक दूरी पर है, उनके प्रश्न-पत्रों की अलमारी उसी केन्द्र पर रखी जाएगी। इन्हें एकल परीक्षा केन्द्र कहा जाएगा।

C. इन केन्द्रों की उड़नदस्ते व जिला शिक्षा अधिकारी विशेष निगरानी रखेंगे तथा समय-समय पर निरीक्षण भी करेंगे। उड़नदस्ता सदस्यों के नाम गोपनीय रखे जाए।

D. प्रश्न-पत्रों की सुरक्षा हेतु सभी जिलो के एकल एवं नोडल परीक्षा केन्द्रों पर प्रश्न पत्र पहुँचने की तिथि से परीक्षा समाप्ति तक दो-दो होमगार्ड 8-8-8 घन्टे की ड्यूटी 24 घन्टे के लिए लगाए जाएँगे।

6. सभी जिलों में गठित उड़नदस्तों के साथ नि:शुल्क एक-एक पुलिस कर्मी भेजे जाएँ। पुलिस कर्मी उपलब्ध नहीं होने पर एक-एक होमगार्ड लगाया जाए।

होमगार्ड के पारिश्रमिक का भुगतान गतवर्ष के भाँति माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा किया जाएगा। भुगतान के लिए परीक्षा प्रारम्भ होने से पूर्व होमगार्ड विभाग द्वारा निर्धारित राशि की कार्यालय स्तर पर गणना कर 100 प्रतिशत अग्रिम राशि माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के द्वारा महानिदेशक (गृह रक्षा) विभाग, राजस्थान जयपुर को उपलब्ध करवाई जाएगी। जिन परीक्षा केन्द्रों के प्रश्न-पत्र थानों/पुलिस चौकी अथवा एकल/नोडल केन्द्रों पर रखे जाएँगे। उनकी सूची सम्बन्धित जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)-माध्यमिक द्वारा सम्बन्धित पुलिस अधीक्षक को समय पर उपलब्ध करवाई जाएगी, ताकि सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित हो सके।

7. उत्तर-पुस्तिका संग्रहण वितरण केन्द्रों पर भी 8-8-8 घन्टे की ड्यूटी 24 घन्टे (अवकाश दिवसों सहित) दो-दो होमगार्ड तथा उप संग्रहण केन्द्रों पर प्रात: 11.00 बजे से रात्रि 8.00 बजे तक दो-दो होमगार्ड नियुक्त किए जाएँगे। होमगार्ड बोर्ड द्वारा सूचित अवधि के लिए उपलब्ध करवाए जाएँगे। इनका भुगतान बोर्ड द्वारा किया जाएगा। इनकी सूची बोर्ड द्वारा सम्बन्धित विभाग को तथा जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा सम्बन्धित पुलिस अधीक्षक को भिजवाई जाएगी।

8. इसके अतिरिक्त जहाँ भी माध्यमिक शिक्षा बोर्ड को पुलिस की तैनाती की आवश्यकता महसूस होगी उन परीक्षा केन्द्रों की जानकारी बोर्ड द्वारा देने पर पुलिस व्यवस्था करने तथा इस हेतु पुलिस विभाग द्वारा प्रत्येक जिला मुख्यालय पर आरक्षित पुलिसदल रखे जाएँगे।

9. बोर्ड द्वारा जिला मुख्यालय पर भेजे जाने वाले प्रश्न-पत्र जिस स्थान पर रखे जाएँगे, वहाँ24 घन्टे नि:शुल्क सशस्त्र पुलिस गार्ड लगाए जाएँगे। साथ ही जिला मुख्यालय से प्रश्न-पत्र अलग-अलग परीक्षा केन्द्रों पर पहुँचाते समय दलों के साथ नि:शुल्क सशस्त्र पुलिस गार्ड्स भेजे जाएँगे। इस हेतु आवश्यक पुलिस गार्ड्स की सूचना जि0शि0अ0 (मुख्यालय)-माध्यमिक द्वारा सम्बन्धित जिला पुलिस अधीक्षक को दी जाएगी। उपर्युक्त व्यवस्था बोर्ड की पूर्व परीक्षा के समय भी सुनिश्चित की जावे।

10. बोर्ड कार्यालय से परीक्षा सामग्री जिला मुख्यालयों पर ले जाने वाले वाहनों और परीक्षा के दौरान उत्तर-पुस्तिका संग्रहण-वितरण केन्द्रों और बोर्ड कार्यालय के बीच उत्तर-पुस्तिकाएँ परिवहन करने वाले वाहनों को शहरों में ''नो एन्ट्री जोन'' से निर्बाध आवागमन की अनुमति जारी करने हेतु निर्देश पुलिस विभाग द्वारा जारी किए जाएँगे।

11. प्रश्न-पत्र वितरण व्यवस्था :- प्रश्न-पत्र जिला मुख्यालयों पर स्थित वितरण केन्द्रों पर बोर्ड की गोपनीय प्रेसों से दिनांक : 02 मार्च व 03 मार्च, 2019 को पहुँचेंगे। जिला मुख्यालय पर प्रश्न-पत्र पहुँचने पर परीक्षा केन्द्रों को प्रथम-चरण में वितरण दिनांक : 04.03.2019 को एवं द्वितीय चरण में दिनांक : 11.03.2019 को किया जाएगा।

I. प्रथम चरण में उच्च माध्यमिक परीक्षा के सभी केन्द्रों के उच्च माध्यमिक व माध्यमिक परीक्षा के सभी प्रश्न-पत्र तथा केवल माध्यमिक परीक्षा के वे केन्द्र जिनके प्रश्न-पत्र पुलिस थानों में रखें जाने हैं, उनके प्रश्न-पत्रों का परीक्षा केन्द्रों को वितरण दिनांक : 04.03.2019 को किया जाएगा।

II. द्वितीय चरण में माध्यमिक परीक्षा वाले शेष परीक्षा केन्द्रों को प्रश्न-पत्रों का वितरण दिनांक : 11.03.2019 को किया जाएगा। दिनांक : 04.03.2019 से 11.03.2019 की अवधि तक वितरण से शेष रही प्रश्न-पत्रों की पेटियों को उक्त अवधि में जिला कोषागार में रखा जाएगा। यदि जिला कोषागार में रखना सम्भव नहीं हो तो पुलिस लाईन अथवा जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा निर्धारित स्थान पर रखी जा सकेगी। पुलिस थाना, पुलिस लाईन के अलावा अन्य स्थान पर प्रश्न-पत्र रखने पर इन स्थानों पर प्रश्न-पत्रों की सुरक्षा के लिए 24 घन्टे सशस्त्र पुलिस गार्ड पुलिस विभाग द्वारा नि:शुल्क नियुक्त किए जाएँगे तथा जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)-माध्यमिक द्वारा 8-8-8 घन्टे की ड्यूटी पर दो-दो शिक्षक एवं दो-दो चौकीदार भी नियुक्त किए जाएँगे। जिला मुख्यालय पर प्रश्न-पत्र पहुँचने के उपरान्त इनकी सुरक्षा की सम्पूर्ण जिम्मेदारी जिला परीक्षा संचालन समिति की होगी।

12. शिक्षा विभाग, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के कर्मचारियों एवं परीक्षा आयोजन कार्य से जुड़े अन्य कर्मचारियों/अधिकारियों को परीक्षा कार्य हेतु पाबन्द करने के लिए हमेशा की भाँति **''राजस्थान अत्यावश्यक सेवाएँ अनुरक्षण अधिनियम (रेस्मा)''** का प्रावधान सक्षम प्राधिकारी द्वारा लागू किया जाएगा। जिस अवधि में

रेस्मा लगाया जाना है, उसकी यथोचित सूचना बोर्ड द्वारा यथासमय उपलब्ध करवाई जाएगी।

(स) शिक्षा विभाग से सम्बन्धित :-

1. **राज्य स्तरीय नियंत्रण कक्ष की स्थापना :** निदेशालय, माध्यमिक शिक्षा के बीकानेर स्थित कार्यालय में राज्य स्तरीय नियन्त्रण कक्ष स्थापित किया जाएगा, जो दिनांक : 04 मार्च, 2019 से परीक्षा समाप्ति तक प्रात: 07 बजे से रात्रि 09 बजे तक कार्यरत रहेगा। इस नियंत्रण कक्ष के प्रभारी उपनिदेशक (माध्यमिक), कार्यालय हाजा श्री प्रकाश चन्द्र जाटोलिया(मो.नं.9413926806) होंगे। नियंत्रण कक्ष के दूरभाष नम्बर 0151-2544043 हैं। नियंत्रण कक्ष द्वारा शिक्षा विभाग के अधिकारी व कर्मचारी के विरूद्ध प्राप्त विभिन्न प्रकार की शिकायतों पर त्वरित गति से कार्यवाही की जाएगी। नियन्त्रण कक्ष की ई-मेल आई.डी. secondarydd2@gmail.com है।
2. बोर्ड परीक्षा अवधि में वीक्षक ड्यूटी नियोजन एवं निर्बाध शिक्षण व्यवस्था हेतु : बोर्ड परीक्षा में निष्फल प्रयोजनार्थ लगाई जाने वाली वीक्षक ड्यूटियों की प्रवृत्ति पर प्रभावी नियंत्रण तथा परीक्षा अवधि में राजकीय विद्यालयों में विद्यार्थी हितार्थ शिक्षण कार्य के निर्विघ्न एवं सुचारू संचालन हेतु इस कार्यालय के निर्देश परिपत्र दिनांक : 12.04.16 द्वारा प्रसारित स्थायी निर्देशों की पालना समस्त सम्बन्धितों द्वारा सुनिश्चित रूप से की जाएगी।
3. **पेपर कॉर्डिनेटर व माइक्रो आब्जर्वर की व्यवस्था :**

A. पेपर कॉर्डिनेटर:- सम्बन्धित जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)-माध्यमिक द्वारा अपने जिले में प्रश्न-पत्रों के वितरण सम्बन्धी कार्य के प्रभावी पर्यवेक्षण हेतु पुलिस थानों/पुलिस चौकियों/नोडल परीक्षा केन्द्रों/एकल परीक्षा केन्द्रों पर पेपर कॉर्डिनेटर्स की आवश्यक रूप से नियुक्ति की जाएगी। ये पेपर कॉर्डिनेटरर्स शिक्षा विभाग में कार्यरत राजपत्रित अधिकारी होंगे। पेपर कॉर्डिनेटर आवश्यक रूप से प्रात 7.30 बजे थाने पर (जहाँ प्रश्न-पत्र रखे हैं) उपस्थित होंगे। शिक्षा विभाग के कार्यरत अधिकारी उपलब्ध नहीं होने पर अन्य राजकीय सेवाओं के राजपत्रित अधिकारी हो सकते हैं। इन्हें मानदेय राशि का भुगतान बोर्ड द्वारा किया जाएगा। इन पेपर कॉर्डिनेटर को प्रश्न-पत्र वितरण पश्चात् समीप के किसी विद्यालय में माइक्रो-ऑब्जर्वर नियुक्त किया जाएगा।

B. एकल परीक्षा केन्द्रों पर नियुक्त ऐसे व्यक्ति पेपर कॉर्डिनेटर कम माइक्रो-ऑब्जर्वर के रूप में भी कार्य करेंगे। यह प्रश्न-पत्र वितरण कार्य के साथ केन्द्र पर परीक्षा की गतिविधियों को आब्जर्व कर इसकी गोपनीय रिपोर्ट जिला कलक्टर व अध्यक्ष जिला परीक्षा संचालन समिति तथा सचिव, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड को देगें। इन्हें यात्रा व्यय/मानदेय राशि का भुगतान बोर्ड द्वारा किया जाएगा।

C. माईक्रोआब्जर्वर- जिले के निश्चित् परीक्षा केन्द्र, संवेदनशील अतिसंवेदनशील, गत वर्षो में हुए सामूहिक नकल वाले केन्द्रों, भौगोलिक दृष्टि से दूरदराज स्थित केन्द्रों जहाँ पर उड़नदस्ता नहीं जा सकता है तथा समस्त निजी विद्यालय वाले परीक्षा केन्द्रों पर जिला कलक्टर व अध्यक्ष, जिला परीक्षा संचालन समिति द्वारा माईक्रोआब्जर्वर की नियुक्ति की जाएगी। ये शिक्षा विभाग के अतिरिक्त अन्य सेवाओं के अधिकारी होंगे। यह परीक्षा प्रारम्भ से परीक्षा समाप्ति तक परीक्षा की गतिविधियों का निरीक्षण कर अपनी रिपोर्ट जिला कलक्टर व अध्यक्ष, जिला परीक्षा संचालन समिति व सचिव, मा.शिक्षा बोर्ड को गोपनीय रूप से देगें। इन अधिकारियों के द्वारा आवश्यकतानुसार नकल प्रकरण भी बनाए जा सकेंगे। इन अधिकारियों को मानदेय राशि का भुगतान बोर्ड द्वारा जिला कलक्टर व अध्यक्ष, जिला परीक्षा संचालन समिति के माध्यम से किया जाएगा। इनके द्वारा दैनिक रिपोर्ट प्रेषित की जाएगी। ये माइक्रो-ऑब्जर्वर रोजाना उत्तर-पुस्तिकाओं के बण्डल अपने समक्ष पैक करवाकर संग्रहण केन्द्रों पर रवाना करेंगे। इस हेतु संधारित रजिस्टर में रोजाना अपने हस्ताक्षर भी करेंगे।

4. जिन उच्च माध्यमिक विद्यालयों में बोर्ड परीक्षा का केन्द्र स्थापित है तथा प्रधानाचार्य का पद रिक्त है, वहाँ यथा सम्भव उक्त विद्यालय के वरिष्ठतम व्याख्याता, जिन्हें आहरण-वितरण का अधिकार दिया हुआ है, को ही केन्द्राधीक्षक नियुक्त किया जाए।
5. जिला शिक्षा अधिकारी व उपनिदेशकों को बोर्ड द्वारा प्रदत्त अग्रिम राशि का सम्पूर्ण हिसाब कार्य माह के एक माह की अवधि में भेजा जाना सुनिश्चित किया जाए। यह सम्बन्धित जिला शिक्षा अधिकारियों एवं उपनिदेशकों की जिम्मेदारी होगी।
6. परीक्षा केन्द्रों पर रात्रि की ड्यूटी देने वाले अध्यापकों व कर्मचारियों को प्रति रात्रि के लिए एक दिवस का एवजी अवकाश तथा अवकाश के दिन की ड्यूटी के लिए एवजी अवकाश दिया जावे।
7. परीक्षा केन्द्रों पर रात्रि की ड्यूटी के लिए पी.टी.आई., एन.सी.सी. तथा स्काउट के अध्यापकों को प्राथमिकता से लगाया जाए।
8. जिले के परीक्षा केन्द्रों के प्रभारियों की जिला स्तर पर बैठक परीक्षा से पूर्व आयोजित कर उन्हे आवश्यक निर्देश दिए जाए।
9. सभी जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)-माध्यमिक परीक्षा केन्द्रों पर होमगार्ड एवं पुलिस स्टाफ की तैनातगी के लिए सूची व संख्या से पुलिस अधीक्षक को यथासमय अवगत करवाएँगे।
10. जिन परीक्षा केन्द्रों की अलमारी समीप के थाने में रखी जाती है, उन केन्द्रों के केन्द्राधीक्षकों एवं अतिरिक्त केन्द्राधीक्षकों एवं पेपर कॉर्डिनेटरों को संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी पहचान-पत्र जारी करते हैं तथा इसकी प्रति संबंधित थाना अधिकारी को प्रेषित किए जाने बाबत परिपत्र जारी किया जाता है। थानाधिकारी को उक्त परिचय पत्र दिखा कर ही प्रश्न-पत्र अलमारी खोलने की व्यवस्था का कड़ाई से पालन करने हेतु केन्द्राधीक्षकों को निर्देशित करते हुए इस व्यवस्था को यथावत रखा जाए। पेपर कॉर्डिनेटर, माइक्रो आब्जर्वर तथा उड़नदस्तों के सदस्यों को भी परिचय-पत्र जारी किए जाकर केन्द्राधीक्षकों/अतिरिक्त केन्द्राधीक्षकों तथा पेपर कॉर्डिनेटर इत्यादि की उनके पते, दूरभाष एवं फोटो सहित एक सूची जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा संबंधित अधिकारियों को दी जाए।
11. जिन एकल/नोडल केन्द्रों पर प्रश्न-पत्र रखे जाएँगे, उन केन्द्रों पर

केन्द्राधीक्षक/अतिरिक्त केन्द्राधीक्षक एवं जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) मुख्यालय आकस्मिक निरीक्षण करें तथा रजिस्टर में इन्द्राज कर बोर्ड कार्यालय को निरीक्षण रिपोर्ट भेजें। समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक)-मुख्यालय द्वारा यह सुनिश्चित किया जाए कि प्रश्न-पत्र खोलते समय केन्द्राधीक्षक तथा अतिरिक्त केन्द्राधीक्षकों, दोनों आवश्यक रूप से उपस्थित रहें।

12. गत वर्ष की व्यवस्था अनुसार पुलिस थाने से प्रश्न-पत्र लाने हेतु संबंधित केन्द्राधीक्षक/अतिरिक्त केन्द्राधीक्षक, एक अध्यापक एवं एक परिचारक साथ जाएँ तथा प्रश्न-पत्रों के पैकिट मजबूत थैले में रखकर सुरक्षित लाए जाएँ। यदि प्रश्न-पत्रों के पैकैट दो पहिया वाहन से लाए जा रहे हैं तो उनकी सुरक्षा के लिए एक और दो पहिया वाहन एस्कार्ट के रूप में उनके पीछे-पीछे चले।
13. प्रत्येक जिला मुख्यालय पर जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)-माध्यमिक के कार्यालय में तथा प्रत्येक मण्डल मुख्यालय पर संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा के कार्यालय में भी दिनांक 04.03.2019 से परीक्षा समाप्ति तक परीक्षा के दौरान एक कन्ट्रोल रूम स्थापित किया जाएगा, जो प्रात: 7 बजे से रात्रि 9 बजे तक कार्यरत रहेगा। इन सभी नियत्रंण कक्षों के फोन, फैक्स नम्बर, ई-मेल आई.डी. व प्रभारी के मोबाइल नम्बर की सूची निदेशालय को यथा समय आवश्यक रूप से उपलब्ध कराई जाए।
14. निदेशालय, संयुक्त निदेशक एवं जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)-माध्यमिक कार्यालयों में बोर्ड परीक्षा संचालन हेतु स्थापित नियंत्रण कक्ष में कार्यरत कार्मिकों को अवकाश दिवसों में कार्य करने पर एवजी अवकाश दिया जाए।
15. किसी केन्द्र पर यदि कोई केन्द्राधीक्षक लापरवाही करता पाया जाता है तो संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)-माध्यमिक द्वारा उसके विरूद्ध तत्काल विभागीय कार्यवाही प्रारम्भ की जाएगी। इस प्रकार के प्रकरणों पर संबंधितों द्वारा तत्काल प्रसंज्ञान लेकर सक्षम स्तर से नियमानुसार कार्यवाही किया जाना सुनिश्चित किया जावेगा।
16. जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा सभी परीक्षा केन्द्रों का भौतिक सत्यापन किया जाए तथा बोर्ड मापदण्डों के अनुसार सभी केन्द्रों पर तैयारियाँ पूर्ण होने का प्रमाण पत्र जारी किया जाए। बोर्ड की परीक्षा केन्द्रों पर समुचित फर्नीचर की व्यवस्था होना आवश्यक है। जिला शिक्षा अधिकारियों द्वारा फर्नीचर की कमी का आंकलन कर जहाँ फर्नीचर की कमी है, वहाँ निजी विद्यालयों से सिंगल सीटेड फर्नीचर की व्यवस्था की जाए। निजी विद्यालयों को बोर्ड सम्बद्वता नियमों के अनुसार फर्नीचर उपलब्ध कराना अनिवार्य है। किसी भी स्थिति में किराए पर फर्नीचर नहीं लिया जाए।
17. बोर्ड के परीक्षा केन्द्र वाले विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों को फुटकर व्यय, टेलीफोन इत्यादि के लिए बोर्ड द्वारा निर्धारित राशि दी जाएगी।
18. थाने/चौकी/नोडल परीक्षा केन्द्रों से प्रश्न-पत्र प्रतिदिन संबंधित दिनांक/विषय के ही हों, यह भली-भांति जाँचकर लाए जाएँ। इस निर्देश की सख्ती से पालना करवाई जाए।
19. प्रश्न पत्र अलमारी के एक ताले की सभी चाबी केन्द्राधीक्षक तथा दूसरे ताले की सभी चाबी अतिरिक्त केन्द्राधीक्षक के पास रखने के निर्देश दिए गए हैं, इसकी सख्ती से पालना की जाए। यदि निरीक्षण के दौरान इसकी पालना नहीं पाई जाती है तो संबंधित केन्द्राधीक्षक के विरूद्ध तुरन्त कार्यवाही की जाएगी।
20. परीक्षा अवधि के दौरान परीक्षा केन्द्रों पर अतिरिक्त कक्षा लगाना, होस्टल चलाना तथा कोचिंग कक्षाएँ चलाने पर एतद् द्वारा पाबन्दी लगाई जाती है। यदि विद्यालय में हॉस्टल चलाना अपरिहार्य हो, तो वहाँ हॉस्टल की निगरानी हेतु एक ऑब्जर्वर लगाया जाए, जिसकी बोर्ड को पूर्व सूचना दी जानी आवश्यक है।
21. प्रत्येक उत्तर पुस्तिका संग्रहण केन्द्र पर बोर्ड निर्देशानुसार अजमेर संग्रहण केन्द्र को छोड़कर शेष केन्द्रों पर लगभग डेढ़ माह के लिए एक-एक कार्मिक जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)-माध्यमिक तथा दो-दो कार्मिक बोर्ड द्वारा नियुक्त किया जाए। इन्हें बोर्ड नियमानुसार देय भुगतान बोर्ड द्वारा किया जाएगा। विगत वर्षानुसार संग्रहण केन्द्रों से उत्तर पुस्तिका प्रतिदिन आएगी। इन संग्रहण केन्द्रों पर अनिवार्य रूप से सी.सी.टी.वी. की भी व्यवस्था की जाए। उत्तर पुस्तिका संग्रहण वितरण केन्द्रों पर स्वच्छ छवि वाले एवं ईमानदार कर्मचारियों को ही नियुक्त किया जाए।
22. निजी विद्यालय वाले परीक्षा केन्द्रों पर विशेष ध्यान दिया जाए एवं ऐसे केन्द्रों पर परीक्षा व्यवस्था की समीक्षा एवं विश्वसनीयता सुनिश्चित की जाए। किसी भी परीक्षा केन्द्र पर निजी विद्यालय का कोई भी कार्मिक वीक्षक/पर्यवेक्षक/अतिरिक्त केन्द्राधीक्षक या परीक्षा सम्बन्धी अन्य कार्यो के लिए नियुक्त नहीं किया जाए। आवश्यकता पड़ने पर इनकी पूर्ति प्रारम्भिक शिक्षा के शिक्षकों से की जाए। इन्हें यात्रा भत्ता/दैनिक भत्ता बोर्ड द्वारा देय होगा। छात्राओं के परीक्षा केन्द्रों पर महिला वीक्षकों की नियुक्ति की जाए। महिला परीक्षार्थियों की तलाशी महिला कार्मिक द्वारा ही ली जावे तथा मर्यादा का ध्यान रखा जाए।
23. जिलों में गत वर्ष की गई तहसीलवार फ्लाईंग स्कैड्स (उड़नदस्ता) की व्यवस्था यथावत रहेगी।
24. सीकर, नागौर, झुन्झुनूं, दौसा, करौली, सवाईमाधोपुर, जोधपुर व बाड़मेर जिलों एवं राज्य के सभी संवेदनशील, अतिसंवदेनशील केन्द्रों पर जहाँ पर सी.सी.टी.वी. कैमरे लगे हों उन्हें छोड़कर केन्द्रों पर प्रश्न-पत्रों की अलमारी से प्रश्न-पत्र निकालने से लेकर केन्द्र पर लिफाफे खोलने, वितरण करने एवं परीक्षा आयोजन आदि की प्रतिदिन वीडियोग्राफी कराई जाए। यह दल प्रतिदिन अचानक परीक्षा केन्द्र पर पहुँचकर अलमारी से प्रश्न-पत्र निकालने से लेकर खोलने, वितरण करने की वीडियोग्राफी करेगा तथा केन्द्र पर परीक्षा व्यवस्था को भी वीडियोग्राफी करेगा। वीडियोग्राफी की दरों की व्यवस्था जिला परीक्षा संचालन समिति के माध्यम से की जाए। इसका भुगतान बोर्ड द्वारा किया जाएगा। परीक्षा केन्द्रों पर वीडियोग्राफी माइक्रोआब्जर्वर/पेपर कॉर्डिनेटर/केन्द्राधीक्षक की

देखरेख में होगी। निर्देशानुसार वीडियोग्राफी कराने का दायित्व इनका होगा। सभी परीक्षा केन्द्रों की वीडियोग्राफी की सी.डी. रोजाना सम्बन्धित जि.शि.अ.(मा.) मुख्यालय कार्यालय में जमा करानी होगी। परीक्षा केन्द्रों की वीडियोग्राफी के सम्बन्ध में समस्त जिला शिक्षा अधिकारियों द्वारा बोर्ड के पत्रांक : परीक्षा-1/सेल-8/2019/विडियोग्राफी/I-19540-19616 दिनांक 05.02.19 द्वारा जारी निर्देशों की पालना सुनिश्चित की जाए। गत वर्ष की परीक्षाओं में संदिग्ध, लापरवाह अथवा दण्डित कर्मियों को इस वर्ष की परीक्षाओं में नियुक्त नहीं किया जावे।

25. (i) समस्त परीक्षाओं की उत्तर-पुस्तिकाओं का अंकन राजकीय सेवारत शिक्षक जो ''शाला दर्पण'' पर पंजीकृत हो, से करवाया जावे। बोर्ड परीक्षाओं से सम्बन्धित यथा प्रायोगिक परीक्षा, सैद्धांतिक परीक्षाओं की उत्तर-पुस्तिका अंकन, वीक्षण ड्यूटी व परीक्षाओं से जुड़े अन्य सभी कार्य सभी राजकीय कार्मिकों को अनिवार्य रूप से सम्पादित करने होंगे। किसी भी कार्मिक द्वारा आवंटित कार्य अस्वीकार करने या नहीं करने पर सम्बन्धित कार्मिक के विरूद्ध विभागीय कार्यवाही की जाएगी। कार्य आवंटन शाला दर्पण पर पंजीकृत विषय के आधार पर कम्प्यूटरीकृत रेण्डम पद्धति से किया जाएगा।

(ii) यदि कोई कार्मिक गम्भीर बीमारी, दिव्यांगता अथवा अन्य यथोचित ठोस कारण से मजबूर/असमर्थ हों, उन्हें जिला शिक्षा अधिकारी की अनुशंषा पर मुक्त किया जा सकता है।

(iii) जिले के सभी संगहण केन्द्रों के नियंत्रक अधिकारी सम्बन्धित जिले के जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)-माध्यमिक रहेंगे एवं बंडल पहुँचने के तीन दिवस में अनिवार्यत: वितरण सुनिश्चित करेंगे। यदि कोई परीक्षक आकस्मिक स्थिति/विपदा आदि के कारण अंकन कार्य में असमर्थ है एवं जि.शि.अ. प्रस्तुत कारण से संतुष्ट है, तो उसके स्थान पर अन्य परीक्षक को आवंटित किए जाने हेतु जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)-माध्यमिक द्वारा लिखित आदेश किया जाएगा। जिले में शिक्षकों की कमी/अनुपलब्धता पर दो बंडल अथवा पास के जिले के शिक्षक को आवंटन किया जा सकेगा।

(iv) प्रत्येक जिले के जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)-माध्यमिक कार्यालय के अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी (शैक्षिक) जिले के सभी संग्रहण केन्द्रों के नॉडल अधिकारी रहेंगे तथा सम्बन्धित जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)-माध्यमिक के निर्देशन में प्रतिदिन संग्रहण केन्द्र का आवश्यक रूप से निरीक्षण कर बंडलों का निस्तारण करवाएँगे। इस हेतु उन्हें वाहन/टेलीफोन व्यय रुपये 6/- प्रति बंडल एवं जिले के अन्य संगहण केन्द्रों पर नियमानुसार यात्रा व्यय देय होगा।

(अ) जिन विषयों के राजकीय सेवारत परीक्षक उपलब्ध नहीं हैं उन्हें बोर्ड के पुराने पेनल के आधार पर तथा अंग्रेजी माध्यम की उत्तर-पुस्तिका जो परीक्षकों से प्राप्त हो, उन्हें समग्र शिक्षा अभियान के अन्तर्गत राजकीय विवेकानन्द मॉडल स्कूल, जिसमें अंग्रेजी माध्यम भी संचालित है, इन विद्यालयों के परीक्षक अंग्रेजी माध्यम की उत्तर-पुस्तिकाएं अंकन करवाई जा सकती है। अत: जिन विषयों में उक्त विद्यालयों के अध्यापक उपलब्ध हों उनकी अंग्रेजी माध्यम की पुस्तिकाएँ इन्हें अंकन हेतु आवंटित की जाए। पंजाबी विषय की पर्याप्त शिक्षक अनुपलब्धता पर प्रदेश के बाहर मूल्यांकित करवाई जावें।

26. बोर्ड परीक्षाओं की उत्तर-पुस्तिकाएँ संग्रहण-वितरण हेतु स्थापित प्रत्येक संग्रहण-वितरण केन्द्र पर दोहरी नजर रखने हेतु एक कार्मिक जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)-माध्यमिक के प्रतिनिधि के रूप में उनके द्वारा परीक्षा प्रारम्भ दिवस से समाप्ति तक आवश्यक रूप से नियुक्त किया जाएगा, शेष बोर्ड कार्मिक नियुक्त किए जाएँगे, परन्तु आवश्यकता होने पर बोर्ड के निर्देश पर जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)-माध्यमिक द्वारा एक से अधिक कार्मिक नियुक्त भी किए जा सकेंगे। उप केन्द्रों पर केवल उत्तर-पुस्तिका संग्रहण का कार्य ही रहता है। अत: सम्बन्धित शाला प्रधान द्वारा कार्मिक नियुक्त किया जाएगा।

27. परीक्षा सम्बन्धी कार्यो यथा उड़नदस्तों, प्रायोगिक व सैद्धांतिक परीक्षाओं में, पर्यवेक्षक, पेपर कॉर्डिनेटर, माइक्रोऑब्जर्वर या संग्रहण केन्द्रों पर किसी भी सरकारी अधिकारी, शिक्षक, व्याख्याता तथा कर्मचारी को लगाने पर उनको कर्त्तव्य (on duty) पर माना जाए।

28. परीक्षा संचालन में प्रारम्भिक शिक्षा विभाग के शिक्षकों को भी आवश्यकतानुसार लगाया जा सकता है। अत: सम्बन्धित पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी द्वारा परीक्षा ड्यूटी में लगाए गए शिक्षकों को केन्द्राधीक्षक के निर्देशों की पालना हेतु पाबंद किया जाएगा। इस हेतु जि.शि.अ. (मुख्यालय)-माध्यमिक समय से जि.शि.अ. (मुख्यालय)-प्रारम्भिक तथा संबंधित मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी अथवा अन्य नियंत्रण अधिकारी को सूचना देवें, ताकि वीक्षक लगाने में असुविधा नहीं हो। प्रारम्भिक शिक्षा के शिक्षकों को परीक्षा कार्य के लिए कार्यमुक्त करने हेतु जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)-माध्यमिक के आदेशों की समुचित पालना की जाए।

29. परीक्षाओं में नकल करने की प्रवृत्ति पर प्रभावी रोकथाम की पुख्ता व्यवस्था करने तथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम का प्रचार प्रसार समाचार-पत्रों एवं टी.वी. के माध्यम से किया जावें। परीक्षार्थियों को भली प्रकार जाँच कर परीक्षा भवन में प्रवेश दिया जाए कोई भी परीक्षार्थी मोबाईल फोन, केल्कुलेटर, पेजर, डिजिटल डायरी अथवा इलेक्ट्रोनिक उपकरण परीक्षा केन्द्र में लेकर प्रवेश नहीं कर सकें। विभिन्न प्रकार की प्रश्न-पत्र लीक होने अथवा उत्तर-पुस्तिकाओं का बंडल गिरने सम्बन्धी अफवाहों का तुरन्त खण्डन कर प्रेस विज्ञप्ति दी जाएँ। परीक्षा व्यवस्था में कोताही बरतने वाले अधिकारियों/कार्मिकों के विरूद्ध संबंधित अधिकारी द्वारा तत्काल अनुशासनात्मक कार्यवाही प्रारम्भ की जाए।

30. व्यवसायिक शिक्षा परीक्षा कक्षा-दसवीं (द्वितीय स्तर) एवं कक्षा 12 (चतुर्थ स्तर) की परीक्षा बोर्ड द्वारा ली जाएगी एवं इस वर्ष कक्षा

नवमीं (प्रथम स्तर) एवं कक्षा 11 वीं (तृतीय स्तर) की सैद्धान्तिक परीक्षा बोर्ड द्वारा तथा प्रायोगिक परीक्षा NSDC द्वारा करायी जा रही हैं।

31. बोर्ड परीक्षाओं में निजी शिक्षण संस्थाओं की कर्मचारियों की ड्यूटी लगाए जाने पर विचार किए जाने के क्रम में परीक्षा समिति के प्रस्ताव एवं उच्चाधिकार प्राप्त समिति के निर्णयानुसार राजकीय तथा प्राईवेट विद्यालयों के विद्यार्थियों को मिलाकर बैठक व्यवस्था की जाए। जिन परीक्षा केन्द्रों पर गैर सरकारी विद्यालयों परीक्षार्थी प्रविष्ट हो रहे हैं उन परीक्षा केन्द्रों पर जिला परीक्षा संचालन समिति द्वारा प्राईवेट स्कूल की एक प्रतिनिधि को केन्द्रों पर लगाया जा सकेगा किन्तु यह ध्यान रखा जाऐ कि जिस विद्यालय के छात्र परीक्षा केन्द्र पर प्रविष्ट हो रहे हैं वहाँ उसी विद्यालय का प्रतिनिधि नहीं लगाया जाए। उक्त प्रतिनिधि सहायक समन्वयक के तौर पर कार्य करेगें तथा इन्हें बोर्ड नियमानुसार मानदेय देय होगा। उक्त सहायक समन्वयक का परीक्षा-कक्षों में प्रवेश वर्जित रहेगा। ये केवल बरामदें एवं बाहरी विद्यालय परिसर तक ही उपस्थित रहकर परीक्षा व्यवस्थाओं में मात्र सहयोग कर सकेंगे। परीक्षा केन्द्रों पर नियुक्त किए जाने वाले प्राईवेट विद्यालयों के प्रतिनिधियों के नाम व मोबाईल नं. की सूची सम्बन्धित जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा बोर्ड को भी उपलब्ध करवाई जाएगी। वे गैर सरकारी विद्यालय, जिनके शिक्षक 'गैर सरकारी शिक्षण संस्था अधिनियम-1989 तथा नियम-1993' के तहत चयनित एवं राजकीय नियमानुसार निर्धारित योग्यताधारी तथा वर्तमान में निजी विद्यालयों में कार्यरत हों ऐसे शिक्षकों को ही सहायक समन्वयक के रूप में लगाया जाएगा। जिन केन्द्रों पर केवल राजकीय विद्यालयों के परीक्षार्थी प्रविष्ट हो रहे हैं, वहाँ ऐसे प्रतिनिधि नहीं लगाए जाएंगे।

32. राज्य सरकार के निर्देशानुसार ग्रामीण क्षेत्रों के सरकारी विद्यालय जहाँ केवल स्वयं की शाला के ही विद्यार्थी परीक्षा दे रहे हैं ऐसे केन्द्रों पर अन्य सरकारी विद्यालयों से वीक्षकों/स्टाफ की नियुक्ति की जानी है।

33. किसी भी परीक्षा केन्द्र पर किसी भी वीक्षक/परीक्षक/अतिरिक्त केन्द्राधीक्षक को मोबाईल रखने की अनुमति नहीं दी जाएगी। परीक्षा केन्द्र से सम्पर्क के लिए शाला के लैण्ड लाइन दूरभाष पर वार्ता की जाए। यदि केन्द्र पर उपलब्ध लैण्डलाइन फोन दुरूस्त अवस्था में न हो अथवा अन्य कोई बाधा उत्पन्न हो रही हो, तो केन्द्राधीक्षक द्वारा ऐसा मोबाइल फोन उपयोग में लिया जा सकता है, जिसमें फोटो नहीं खींची जा सके।

34. निजी विद्यालयों वाले परीक्षा केन्द्रों पर सीसीटीवी की सुविधा उपलब्ध हो, तो वहाँ के कैमरे अनिवार्यत: उपयोग में लेने हेतु सम्भावना तलाशी जाए। जिन निजी विद्यालयों वाले केन्द्रों पर सीसीटीवी कैमरे नहीं हों, उन्हें भी परीक्षा से पूर्व कैमरे लगाने हेतु जिलास्तरीय परीक्षा संचालन समिति के माध्यम से प्रोत्साहित किया जाए।

● **(नथमल डिडेल) IAS**, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

5. राजकीय विद्यालय समय सारिणी में परिवर्तन।

● कार्यालय-निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/मा-स/22418/शिविरा पंचाग/2018-19/ 204 दिनांक : 14.02.2019 ● आदेश

राज्य सरकार के आदेश क्रमांक : प.32(1) शिक्षा-1/शिविरा पंचाग/2000 पार्ट-1, जयपुर, दिनांक 13.02.2019 के अनुसरण में वर्तमान में संचालित राजकीय विद्यालय समय सारणी में एतद् द्वारा परिवर्तन किया जाता है :-

1. एक पारी विद्यालय हेतु समय सारिणी :-

विवरण	ग्रीष्मकालीन विद्यालय संचालन हेतु निर्धारित समय	शीतकालीन विद्यालय संचालन हेतु निर्धारित समय
समयावधि	01 अप्रेल से 30 सितम्बर	01 अक्टूबर से 31 मार्च
विद्यालय समय	प्रातः 07.30 बजे से दोपहर 01.00 बजे तक (05:30 घंटे)	प्रातः 10.00 बजे से दोपहर 04.00 बजे तक (06:00 घंटे)

2. दो पारी विद्यालय का समय यथावत रहेगा।

उपर्युक्त आदेश तत्काल प्रभाव से लागू होंगे। समस्त सम्बन्धितों द्वारा उक्तानुरूप पालना सुनिश्चित की जावे।

● **(नथमल डिडेल)** आई.ए.एस., निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

आवश्यक सूचना

कतिपय रचनाकार अपने एकाधिक बैंक खाता लिखकर भिजवा देते हैं और उक्त खाते का उपयोग समय-समय पर नहीं करने के कारण वह बंद भी हो चुका होता है। परिणामस्वरूप उक्त मानदेय खाते में जमा नहीं हो पाता। जिसकी शिकायत प्राप्त होती है। किसी रचनाकार के एकाधिक खाते हैं तो रचनाकार अपने SBI बैंक खाते को प्राथमिकता देकर अद्यतन व्यक्तिगत जानकारी उपर्युक्तानुसार प्रत्येक रचना के साथ अलग-अलग संलग्न करें। -वरिष्ठ संपादक

माह : मार्च, 2019

विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम

प्रसारण समय : दोपहर 12.40 से 1.00 बजे तक

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठ क्रमांक	पाठ का नाम
01.03.2019	शुक्रवार	जोधपुर	4	पर्यावरण अध्ययन	21	कपड़े की कहानी
02.03.2019	शनिवार	बीकानेर	गैरपाठ्यक्रम			महाशिवरात्रि
05.03.2019	मंगलवार	उदयपुर	6	विज्ञान	12	बल
06.03.2019	बुधवार	जयपुर	9	संस्कृत	10	बुद्धिर्यस्य बल तस्य
07.03.2019	गुरुवार	जोधपुर	5	पर्यावरण अध्ययन	23	हमारी विरासत
08.03.2019	शुक्रवार	बीकानेर	3	पर्यावरण अध्ययन	14	आओ, मेरे घर
09.03.2019	शनिवार	उदयपुर	7	हिन्दी	13	भारत की मनस्विनी महिलाएँ
11.03.2019	सोमवार	जयपुर	9	विज्ञान	15	प्राकृतिक संपदा एवं कृषि
12.03.2019	मंगलवार	जोधपुर	गैरपाठ्यक्रम			
13.03.2019	बुधवार	बीकानेर	6	विज्ञान	15	दैनिक जीवन में विज्ञान
14.03.2019	गुरुवार	उदयपुर	4	हिन्दी	14	निराला राजस्थान
15.03.2019	शुक्रवार	जयपुर	गैरपाठ्यक्रम			विश्व उपभोक्ता दिवस (उत्सव)
16.03.2019	शनिवार	जोधपुर	गैरपाठ्यक्रम			
18.03.2019	सोमवार	बीकानेर	4	पर्यावरण अध्ययन	22	यात्रा
19.03.2019	मंगलवार	उदयपुर	4	पर्यावरण अध्ययन	17	मेले
22.03.2019	शुक्रवार	जयपुर	7	हिन्दी	15	अरावली की आत्मकथा
23.03.2019	शनिवार	जोधपुर	गैरपाठ्यक्रम			
25.03.2019	सोमवार	बीकानेर	9	संस्कृत	17	दम्भ-ज्वरः
26.03.2019	मंगलवार	उदयपुर	गैरपाठ्यक्रम	डॉ. बी.आर. अंबेडकर जयंती (14.04.2019 अवकाश-उत्सव)		
27.03.2019	बुधवार	जयपुर	गैरपाठ्यक्रम	महावीर जयंती, अहिंसा दिवस (17.04.2019 अवकाश-उत्सव)		
28.03.2019	गुरुवार	जोधपुर	गैरपाठ्यक्रम	रवीन्द्र नाथ ठाकुर जयंती (07.05.2019 उत्सव)		
29.03.2019	शुक्रवार	बीकानेर	गैरपाठ्यक्रम	महाराणा प्रताप जयंती (06.06.2019 अवकाश-उत्सव)		
30.03.2019	शनिवार	उदयपुर	गैरपाठ्यक्रम	राजस्थान दिवस (उत्सव)		

● **निदेशक**, शैक्षिक प्रौद्योगिकी विभाग राजस्थान, अजमेर।

शिविरा पञ्चाङ्ग

मार्च, 2019

रवि	31	3	10	17	24
सोम		4	11	18	25
मंगल		5	12	19	26
बुध		6	13	20	27
गुरु		7	14	21	28
शुक्र	1	8	15	22	29
शनि	2	9	16	23	30

मार्च 2019 ● कार्य दिवस-23, रविवार-05, अवकाश-03, उत्सव-03 ● 04 मार्च- महाशिवरात्रि (अवकाश-उत्सव), **06 मार्च-**सत्र : 2018-19 हेतु तृतीय अभिभावक-अध्यापक बैठक (PTM)का आयोजन, समुदाय जागृति दिवस-SmSA, **15 मार्च-**विश्व उपभोक्ता दिवस (उत्सव), **20 मार्च-**होलिका दहन (अवकाश), **21 मार्च-**धुलण्डी (अवकाश), **30 मार्च-** राजस्थान दिवस (उत्सव)।

आवश्यक सूचना

● 'शिविरा' मासिक पत्रिका में रचना भेजने वाले अपनी रचना के साथ व्यक्तिगत परिचय यथा-नाम, पता, मोबाइल नंबर, बैंक का नाम, शाखा, खाता संख्या, आईएफएससी. नंबर एवं बैंक डायरी के प्रथम पृष्ठ की स्पष्ट छायाप्रति अवश्य संलग्न करके भिजवाएँ। ● कुछ रचनाकार एकाधिक रचनाएँ एक साथ भेजने पर एक रचना के साथ ही उक्त सूचनाएँ संलग्न कर दायित्वपूर्ति समझ लेते हैं। अतः अपनी प्रत्येक रचना के साथ अलग से पृष्ठ लगाकर प्रपत्रानुसार अपना विवरण अवश्य भेजें। इसके अभाव में रचना के छपने एवं उसके मानदेय भुगतान में असुविधा होती है। —वरिष्ठ संपादक

EDUCATION NEWS GROU

सहयोग-प्रोत्साहन

साहित्य से शिक्षा की ओर अविस्मरणीय यात्राएँ

❒ डॉ. हरीदास व्यास

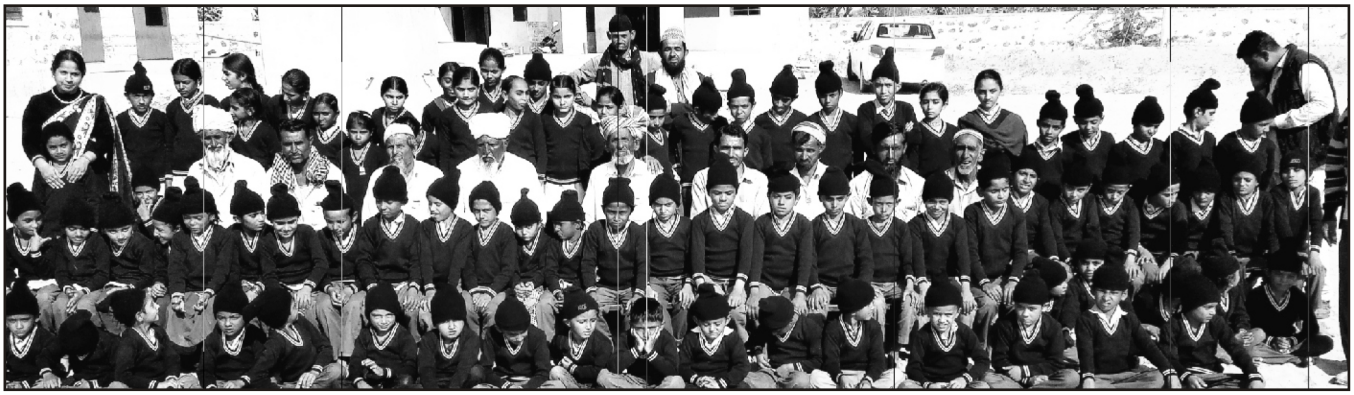

जोधपुर से पश्चिम-दक्षिण दिशा में कुल 96 कि.मी. दूर मुख्य मार्ग से करीब 20 कि.मी. जिसमें 6 किमी करीब रेत के धोरों के बीच कच्चा रास्ता और वहाँ स्थित लगभग 20 वर्षों पुराना स्कूल- राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, सिंधियों की ढाणी, रेवाडा मईया, कल्याणपुर ब्लॉक, जिला बाड़मेर जिसके सभी विद्यार्थी मुस्लिम हैं; माकूल शिक्षकों के अभाव में अव्यवस्थाओं और अभावों के बीच अपने होने की औपचारिकता निभा रहा था। कला, संस्कृति और शिक्षा के लिए प्रतिबद्ध 'सृजना' संस्था की एक परिचिता श्रीमती सुनीता रानी की 4 माह पूर्व 1 अक्टूबर 2018 को तृतीय श्रेणी लेवल 2 की शिक्षिका के रूप में उस विद्यालय में नियुक्ति होती है और विद्यालय की चिंताजनक स्थिति से 'सृजना' संस्था वाकिफ होती है। शिक्षिका के चकित कर देने वाले समर्पण से विद्यालय में नए प्रवेश पाने वाले और नियमित आने वाले विद्यार्थियों की संख्या लगभग 50 से बढ़ कर 120 हो जाती है। पर शिक्षिका सुनीता रानी का कहना था कि अत्यंत गरीबी से जूझ रहे परिवारों के विद्यार्थी अब भी पढ़ने के उत्साह में कड़ाके की ठण्ड से ठिठुरते हुए भी विद्यालय आते तो हैं परन्तु उनके पास गर्म कपड़े न होने की वजह से वे कभी भी बीमार हो सकते हैं। इस जानकारी के बाद सृजना परिवार के ऋषभ जैन ने सभी 120 बच्चों को विद्यालय-गणवेश के स्वेटर और ऊनी टोपियाँ खरीदी जिसे लेकर सृजना सचिव डॉ. हरीदास व्यास 24 दिसम्बर को स्वयं सिंधियों की ढाणी स्थित इस विद्यालय पहुँचे। मासूम बच्चों की ख़ुशी उनके चेहरों पर चमक रही थी, उन्होंने हाथों-हाथ स्वेटर और टोपियाँ पहनीं। बच्चों के चेहरों पर ख़ुशी के साथ इस बात का आत्मविश्वास भी बिछ गया जिसमें भरोसा था कि उनकी चिंता कोई और भी करता है।

इस अवसर पर सिंधियों की ढाणी के हाजी साहिब, मौलवी जी और कुछ अन्य ग्रामवासी भी एकत्र हुए। बच्चों ने अपनी स्वाभाविक कला का प्रदर्शन करते हुए कविताएँ, कहानियाँ, लोकगीत प्रस्तुत किए। इन प्रस्तुतियों की सादगी और सहजता चकित कर देने वाली थी। परन्तु वहाँ से लौट कर जब डॉ. व्यास ने सृजना परिवार को बताया कि अधिकतर बच्चे ठंडी रेत और कच्चे रास्तों पर या तो नंगे पैर या फिर टूटी हुई चप्पलों को सी-बाँध चल कर आते हैं। सृजना के संरक्षक श्री मुरलीधर वैष्णव (सेवानिवृत्त न्यायाधीश, वरिष्ठ रचनाकार, सृजना-संरक्षक) ने व्यथित हो कर तुरंत कहा कि इन सभी बच्चों के जूते-मोज़े हमारा श्री कृष्णबिहारी ट्रस्ट, जोधपुर भेंट करेगा। यह निर्णय भारतीय समाज के लिए न केवल सुखद है बल्कि उन लोगों को भी सरल-सा ज़वाब है जो इस देश में खुद को या खुद के परिवार को असुरक्षित मानते हैं। विद्यालय के सभी बच्चों के पैरों के नाप मंगवाए गए और 26 जनवरी 2019 की सुबह 07:30 बजे सृजना परिवार एक बार फिर जोधपुर से सिंधियों की ढाणी की ओर रवाना हो गया। गणतंत्र समारोह के ध्वजारोहण के बाद जोशोखरोश भरे बच्चों की अनुशासित परेड की सलामी श्री मुरलीधर वैष्णव ने ली, एकता के सूत्र में बंधे बच्चों की लयबद्ध पीटी देखने योग्य थी। इस अवसर पर सांस्कृतिक प्रस्तुतियों में लोकगीत, लोक नृत्य और लोकभजन स्वरों में बखूबी सजे हुए थे। सबसे नन्हीं बालिका के आकर्षक नृत्य से मुग्ध हो कर मुख्य अतिथि श्री वैष्णव ने बच्ची को गोद में उठा लिया। उन्होंने अपने उद्‌बोधन में इंसान बनने के सबक को सबसे बड़ा मानते हुए गाँववासियों को स्कूल के विकास हेतु आगे आने का आह्वान भी किया। गाँववासियों ने 20 वर्षों में विद्यालय में पहली बार इस स्तर का व्यापक पैमाने पर गणतन्त्र समारोह देखा। इसे देखने गाँव के सौ से अधिक स्त्री-पुरुष एकत्र थे। वे स्वयं अपने बच्चों की प्रस्तुतियों से चमत्कृत थे। कार्यक्रम के बाद जब बच्चों को चमकते जूते और मोज़े पहनाए गए तो वे ख़ुशी के मारे नाच रहे थे। इस अवसर पर ग्रामवासियों को संबोधित करने के बाद अनौपचारिक रूप से सृजना परिवार के डॉ. हरीदास व्यास (वरिष्ठ साहित्यकार एवं सृजना सचिव), श्री मदन जाँगिड़ (पाँच विदेशी भाषाओं के जानकार विद्वान), डॉ. नीना छिब्बर (सेवा निवृत अंग्रेजी व्याख्याता, साहित्यकार, सृजना उपाध्यक्ष), श्री सत्येन्द्र छिब्बर

(सेवानिवृत्त केन्द्र सरकार के पदाधिकारी, सृजना-कोषाध्यक्ष), श्री ऋषि वैष्णव (युवा अधिवक्ता, राजस्थान उच्च न्यायालय), श्री हितेश पुरोहित एमबीबीएस. अंतिम वर्ष के विद्यार्थी, कवि) ने ग्रामवासियों से बात की तथा विद्यालय-विकास से जुड़ने के लिए विमर्श किया। इस सबका तत्काल परिणाम यह हुआ कि ग्रामवासियों ने तुरंत ही राशि इकट्ठा कर विद्यालय में 9 छत पंखे भेंट करने की घोषणा कर दी। (यह आलेख लिखने के समय तक सभी 9 पंखे प्राप्त हो चुके हैं), विद्यालय से सटे मदरसे के हुनरमंद मौलवी जी ने पूरे स्कूल में बिजली की केबलिंग और पंखे लगाने के श्रमदान की घोषणा कर दी। लगभग 2 बजे हमारी रवानगी के समय सैंकड़ों अपनापे भरी नज़रें हमें विदा कर रही थी। न सिर्फ यह बल्कि कुछ दिनों बाद ग्रामवासियों ने सृजना-परिवार को फोन कर कहा कि वे स्कूल में और भी कुछ करना चाहते हैं, उसके लिए हमें आप निर्देशित करें। स्वप्रेरणा की यह अलख ही सृजना परिवार का मूल उद्देश्य था।

सृजना-परिवार ने इस सम्बन्ध में परस्पर विमर्श कर इस बार लगभग 250 पुस्तकें-पत्रिकाएँ, खेल-सामग्री, संगीत सामग्री एकत्र की, सृजना सदस्या प्रतिभा शर्मा ने एक्वागार्ड और पानी की बड़ी टंकी देने का प्रस्ताव किया, कुछ सदस्यों ने मिल कर 18 हजार रुपए नकद भी एकत्र किए। इस बीच रेवाड़ी मईया के सरपंच श्री पद्मसिंह को भी हमारे आगमन की सूचना देकर विद्यालय में उपस्थित रहने का निवेदन किया। डॉ. नीना छिब्बर ने प्रस्ताव दिया कि वे बोर्ड परीक्षा देने वाले विद्यार्थियों को अंग्रेजी का परीक्षा उपयोगी शिक्षण-कार्य के साथ बहुत ज़रूरी पाठ्य-सामग्री के फोटो-कॉपी सेट भी देगी। आसपास की स्कूलों में अंग्रेजी-शिक्षक की नियुक्ति ही न होने के कारण उन विद्यालयों के प्राचार्यों ने अपने विद्यार्थियों को भी पढ़ाने का अनुरोध किया जिसे नीना जी ने सहर्ष स्वीकार किया। इन निर्णयों के साथ एक बार फिर सृजना-परिवार के सदस्य 9 फरवरी 2019 की सुबह 08:00 बजे जोधपुर से सिंधियों की ढाणी की ओर दो कारों में चल दिए। इस बार डॉ. नीना छिब्बर, श्री सत्येन्द्र छिब्बर, डॉ. हरीदास व्यास के अतिरिक्त सृजना के कुछ अन्य सदस्य भी साथ थे-राष्ट्रपति श्री अब्दुल कलाम से श्रेष्ठ

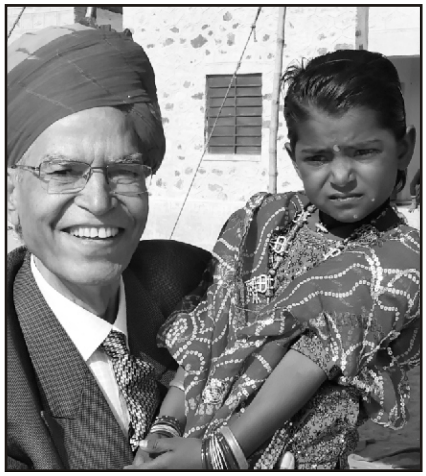

शिक्षिका का सम्मान प्राप्त कर चुकी वरिष्ठ साहित्यकार और सृजना की संस्थापिका अध्यक्षा सुषमा चौहान, बहुआयामी रचनाकार संगीता सेठी, नवोदित रचनाकार उपासना, उज्ज्वल तिवाड़ी, प्रतिभा गुप्ता और भ्रष्टाचार निरोधक विभाग की एडीपी व सृजना की समर्पित सदस्या सुनीता जैन। प्रतीक्षा करते बच्चे और गाँववासियों के चेहरे आत्मीयता से सराबोर थे। शिक्षिका सुनीता रानी के कड़े अनुशासन और स्नेहपूर्ण निर्देशों में बच्चों ने सावधान-विश्राम के बाद विद्यालय की नियमित प्रार्थना पूरी भावना के साथ संपन्न की। सृजना परिवार और विद्यालय के शिक्षकों ने सरस्वती-पूजा करने के बाद साथ लाई उपहार सामग्री विद्यालय-परिवार को भेंट की। डॉ. नीना छिब्बर ने अपने प्रस्ताव के अनुसार पास की सैकेंडरी स्कूल से आए 60 विद्यार्थियों और स्थानीय विद्यालय के 20 बच्चों को 2 घंटे अंग्रेजी की परीक्षा उपयोगी तैयारी करवाई और स्टडी मेटेरियल के फोटोकॉपी सेट दिए तो बच्चों के चेहरे ख़ुशी और आत्मविश्वास से चमक रहे थे। (डॉ नीना छिब्बर के पढ़ाए बच्चों का बोर्ड रिज़ल्ट हमेशा ही शत-प्रतिशत रहता है।) इसके समानांतर सुषमा चौहान बच्चों को मनोवैज्ञानिक और मनोरंजक खेल खिला रही थी, संगीता सेठी बच्चों को गीत सिखा रही थी, प्रगति गुप्ता नए खेल सिखा रही थी तो उपासना, उज्ज्वल तिवाड़ी और सुनीता जैन बच्चों को बोलने के गुर सिखा रही थी। गाँववासी अपने बच्चों को इतनी तरह के लोगों के साथ आनंदित होते देख कर भावुक हो रहे थे। पूरा विद्यालय-परिसर इतना

सक्रिय व आनंदित कभी नहीं रहा, यह बात उनके चेहरे बयां कर रहे थे।

सरपंच श्री पद्मसिंह के आते ही सृजना परिवार ने डॉ. हरीदास व्यास के नेतृत्व में विद्यालय की प्रबंध समिति और अन्य ग्रामवासियों के साथ लगभग एक घंटे तक विमर्श किया और विद्यालय में नए शौचालय, ऊँची चारदीवारी, पानी की टंकियों का निर्माण, विद्यालय तक का 6 किमी रास्ते को पक्का करवाने, परिसर के अग्रभाग में बने टाँके को आकार दे कर स्टेज बनाने, परिसर के पिछले हिस्से में बने अनुपयोगी कच्चे टाँके को ध्वस्त कर उस हिस्से को खेल मैदान बनाने और विद्यालय परिसर में पौधारोपण हेतु ट्री-गार्ड मँगवाने जैसे प्रस्ताव पारित किए।

चार घंटों का समय जैसे पंख लगा कर उड़ गया। हमें विदा करते हुए वे चेहरे उदास थे जो बहुत संकोच के कारण कुछ कह नहीं पा रहे थे वरना जिद करते हुए कहते थोड़ा और रुक जाइए न, फिर कब आएँगे हमें बताइए वरना हम तो जाने नहीं देते। वे तो बस अविश्वास भरी नजरों से हाथ हिला रहे थे, नमस्कार कर रहे थे। हम में से भी कोई बहुत देर तक आपस में कोई बात नहीं कर पाया बल्कि सच कहूँ तो हम एक-दूजे से अपनी उदास आँखें छुपा रहे थे और अपने दिलों को फिर जल्दी ही सिंधियों की ढाणी विद्यालय जाने का आश्वासन दे रहे थे।

सृजना-सचिव
घर-गली सं -2, चौपासनी ग्राम,
जोधपुर 342014
मो: 9414295336

जिला स्तरीय

स्काउट गाइड प्रतियोगिता रैली, बीकानेर

❒ विकास चन्द्र

'सहयोग के साथ प्रतियोगिता' का विचित्र संयोग साकार होता दिखाई दिया, मौका था मण्डल प्रशिक्षण केन्द्र रिड़मलसर, बीकानेर में दिनांक : 05 से 09 फरवरी, 19 तक आयोजित जिला स्तरीय स्काउट व गाइड प्रतियोगिता रैली शिविर का। जी, हाँ... सुनने में भले ही अजीब लग रहा हो लेकिन यह सत्य है। राजस्थान राज्य भारत स्काउट एवं गाइड के तत्वावधान में बीकानेर जिला स्तरीय प्रतियोगिता रैली का आयोजन किया गया। रैली आयोजन का उद्देश्य स्काउट गाइड कलाओं का प्रायोगिक प्रदर्शन एवं जीवन शैली से जन साधारण को अवगत करवाना था। रैली में जिले के 9 स्थानीय संघों के माध्यम से लगभग 700 प्रतिभागियों ने भाग लिया तथा 5 दिनों तक समायोजन, सहयोग, सेवा के साथ प्रतियोगिता में जीतने का अनुभव प्राप्त किया।

रैली हेतु पूर्व तैयारी के समय में जिले के जुझारू एवं समर्पित सीओ स्काउट श्री जसवंत राजपुरोहित की अस्वस्थता के कारण रैली के सम्पूर्ण प्रबन्ध की जिम्मेदारी सीओ गाइड ज्योति रानी महात्मा के कंधों पर आ गई थी। लेकिन इसी दौरान मण्डल के सहायक राज्य संगठन आयुक्त स्काउट के पद पर दिलीप माथुर एवं सहायक राज्य संगठन आयुक्त गाइड के पद पर संतोष निर्वाण की नियुक्ति ने राहत प्रदान की। उक्त पदाधिकारियों के मार्गदर्शन में जिले की टीम ने रैली के सफल आयोजन की ओर कदम बढ़ाए।

सभी समर्पित स्काउटर एवं गाइडर ने सीओ गाइड ज्योति रानी महात्मा के सहयोग से अपने-अपने दायित्वों के निर्वहन हेतु प्रयासों को अमलीजामा पहनाना प्रारम्भ कर दिया। मुझे भी इस पावन यज्ञ में आहुति देने का मौका मिला जिसके तहत ट्रेनिंग सेन्टर में एडवेंचर बैस बनाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैंने मेरे सहयोगी डॉ. विनोद चौधरी एवं भूपसिंह के साथ मिलकर सर्विस रावर्स की मदद से लगभग 15 एडवेंचर बैस तैयार किए। जिसमें मंकी ब्रिज, कमाण्डो ब्रिज, टायर चिमनी, तैरता झूला, टायर वॉल, कैव कॉसिंग, बैलेसिंग बार, हैंगिंग टायर आदि प्रमुख थे। हमारा प्रयास रहा कि उपलब्ध संसाधनों के माध्यम से हम आने वाले प्रत्येक स्काउट व गाइड को अधिकतम रोमांच का अनुभव करवा सकें। हमारी तरह ही अन्य सभी भी अपने-अपने कार्य को निपुणता के साथ अंजाम तक पहुँचा रहे थे। दूसरी ओर सीओ गाइड ज्योति रानी महात्मा भी रैली के दौरान आयोजित होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों हेतु अतिथियों को आमंत्रित करने, दैनिक कार्यक्रम एवं प्रतियोगिताओं का निर्धारण तथा अन्य आवश्यक संसाधनों के प्रबन्ध करने में दिन-रात जुटी हुई थी। उन्होंने ही रैली के लिए लोगो फाइनल किया, जिसमें थीम लाइन रखी गई 'जाग्रति से सामर्थ्य तक।'

आखिर 5 फरवरी को सुदूर कौने-कौने से सैकड़ों स्काउट्स एवं गाइड्स राजस्थान राज्य भारत स्काउट एवं गाइड के मण्डल प्रशिक्षण केन्द्र, रिड़मलसर, बीकानेर में जुटने लगे। सभी आगन्तुक दलों को व्यवस्थानुसार निर्धारित हट्स एवं अस्थाई टेन्ट आवंटित कर दिए गए। शिविर के प्रथम दिन एक परिचय एवं जानकारी सत्र आयोजित कर सभी को शिविर का परिचय दिया गया तथा दैनिक कार्यक्रम एवं शिविर के दौरान आवास, भोजन व सैनिटेशन व्यवस्थाओं की जानकारी प्रदान की गई। साथ ही यह भी जानकारी दी गई कि जिले के सीओ स्काउट श्री जसवंत सिंह राजपुरोहित भी पूर्ण रूप से स्वस्थ होकर शिविर का हिस्सा बनने एवं सबका मार्गदर्शन करने हेतु हमारे बीच पधार चुके हैं।

सभी आए हुए दल प्राप्त जानकारियों के आधार पर समय प्रबन्ध के साथ प्रतियोगिताओं की तैयारियों में जुट गए। शिविर में प्रदर्शनी, फूड प्लाजा, पायनियरिंग प्रोजेक्ट, गेट, झाँकी, मार्च पास्ट, करल पार्टी, लोकनृत्य, लोकगीत, यूथ फॉरम, स्किल-ओ-रामा, कैम्प क्राफ्ट, ग्रुप अभिलेख जैसी लगभग 15 से अधिक प्रतियोगिताओं को शामिल किया गया।

दिनांक 6 फरवरी को शिविर का विधिवत उद्घाटन जिला प्रमुख श्रीमती सुशीला सिंवर के मुख्य आतिथ्य में किया गया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में भारत स्काउट व गाइड की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष प्रो. विमला मेघवाल, सहायक राज्य संगठन आयुक्त स्काउट श्री दिलीप कुमार माथुर, सहायक राज्य संगठन आयुक्त गाइड संतोष निर्वाण उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता मण्डल चीफ कमिश्नर श्री विजयशंकर आचार्य ने की। व अवसर पर जिला प्रमुख श्रीमती सुशीला सिंवर ने अपने उद्बोधन में कहा कि इस प्रकार की गतिविधियों से बालकों का चारित्रिक विकास होता है। उन्होंने सभी को नशे से दूर रहकर समाज विकास में योगदान देने का आह्वान किया। उन्होंने शिविर केन्द्र पर आवास व्यवस्था के तहत स्थायी हट्स में सुधार हेतु 5 लाख रुपये देने की भी घोषणा की। डॉ. विजय शंकर आचार्य ने अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए कहा कि सब युवा मिलकर देश का सुदृढ़ निर्माण कर सकते हैं। डॉ. विमला मेघवाल ने कहा कि रैली के दौरान सभी स्काउट गाइड को विभिन्न प्रतियोगिताओं के माध्यम से अपने स्काउट कौशल में अभिवृद्धि करने के सुअवसर का भरपूर फायदा उठाना चाहिए।

सभी प्रतियोगियों ने स्थानीय संघवार तथा ग्रुपवार अपने-अपने कौशल एवं योग्यतानुसार प्रदर्शन किया। मैंने भी विभिन्न प्रतियोगिताओं में श्रीमती संतोष शेखावत के साथ श्री डूँगरगढ़ स्थानीय संघ का एवं मेरे ग्रुप राउमावि. ऊपनी का प्रतिनिधित्व किया। दूसरी ओर प्रतियोगिताओं में भी प्रतिभागियों के प्रदर्शन को निरीक्षक सूक्ष्म नजर से जाँच कर रहे थे। यह दिन एक और दृष्टि से भी प्रतिभागी स्काउट्स एवं गाइड्स के लिए बेहद रोमांचकारी रहा। मंकी ब्रिज, कैव क्रॉसिंग, टायर चिमनी, कमाण्डों ब्रिज सहित सभी बैस को पूर्ण करने हेतु सभी स्काउट व गाइड में विशेष जोश एवं उत्साह का संचार दिखाई पड़ रहा था। सायंकालीन सांस्कृतिक संध्या में लोकगीत एवं लोकनृत्य प्रतियोगिताओं ने सभी का मन मोह लिया।

07 फरवरी को प्रातःकालीन प्रार्थना सभा में पूर्व गृह राज्य मंत्री श्रीमान वीरेन्द्र बेनीवाल, सीईओ प्रतिभा देवठिया, उपनिदेशक सामाजिक

न्याय एवं अधिकारिता विभाग, श्री एल.डी. पंवार द्वारा झण्डारोहण किया गया। श्री बेनीवाल ने स्वयं को भी एक स्काउट बताते हुए कहा कि यह छात्र जीवन का कभी न भूलने वाला क्षण है और इससे हमारे भीतर सेवा, सहयोग तथा राष्ट्रीयता के गुणों का विकास होता है। प्रतिभागियों द्वारा उनके समक्ष सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दी। उन्होंने शिविर का निरीक्षण भी किया तथा बनाए गए गैजेट्स एवं ले-आउट की सराहना की। इसी दिन यूथ फॉरम के तहत 'मैसेन्जर ऑफ पीस' (MoP) की विभिन्न गतिविधियों से प्रतिभागियों को रूबरू करवाया गया। जिसमें MoP रोवर व रेंजर लीडर्स द्वारा सात विभिन्न प्रकार की गतिविधियों के माध्यम से शान्ति एवं सौहार्द्र फैलाने का संदेश दिया। MoP के माध्यम से स्काउट व गाइड में इस भावना को विकसित करने का प्रयास किया गया कि इस प्रकार मिल-जुलकर एवं अपने सोच व विचारों से हम इस समाज में शान्ति स्थापित करने के दूत बन सकते हैं। इसी दिन शाम को सड़क सुरक्षा सप्ताह के मद्देनजर जन-जागरूकता हेतु जयपुर रोड पर एक मानव श्रृंखला का निर्माण किया गया। इसके माध्यम से लोगों को सुरक्षित वाहन संचालन एवं ट्रेफिक नियमों के पालन करने का संदेश दिया गया।

08 फरवरी को फूड प्लाजा, पायनियरिंग प्रोजेक्ट, स्किल-ओ-रामा, कैम्प क्राफ्ट, झाँकी प्रदर्शन जैसी महत्त्वपूर्ण प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जिसमें प्रतिभागियों ने अपनी कला, कौशल, स्काउटिंग ज्ञान एवं पाक विद्या का बेहतर प्रदर्शन किया। स्थानीय संघ श्रीडूँगरगढ़ द्वारा फूड प्लाजा में हमारी हट में ही बाजरे का चूरमा, गुड़ की लापसी, मूँगफली की गजक, बाजरे की रोटी, आलू-प्याज की सब्जी एवं ग्वारफली की सब्जी जैसे देशी व्यंजन तैयार किए जो सम्पूर्ण रैली के लिए आकर्षण का विषय बने। यह भी रैली का सौभाग्य था कि इसी दिन पौलेण्ड के नागरिकों का एक दल हमारे शिविर की विजिट करने आया और उसने भी बनाए गए देशी व्यंजनों का लुत्फ उठाया। इसी दिन शाम को शिविर का औपचारिक समापन समारोह आयोजित किया गया जिसमें श्रीमती नूतन बाला कपिला संयुक्त निदेशक (कार्मिक), मा.शि. राजस्थान, माध्यमिक शिक्षा मुख्य अतिथि तथा प्रो. सहायक संगठन आयुक्त स्काउट श्री दिलीप कुमार माथुर एवं सहायक संगठन आयुक्त गाइड संतोष निर्वाण विशिष्ट अतिथि के रूप में शामिल हुए। श्रीमती नूतन बाला कपिला ने कहा कि उन्हें यह जानकर बहुत अच्छा लगा कि जिले के इतनी संख्या में छात्र-छात्राएँ यहाँ पर एक साथ रहकर सहयोग के साथ स्काउटिंग विधाओं को प्रतियोगिता के माध्यम से सीख रहे हैं। उन्होंने कहा कि यहाँ की शिविर कला तथा आयोजन को देखकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। उन्होंने विद्यार्थियों से यहाँ सीखे गुणों एवं कौशल को जीवन में उतारने की अपील की।

09 फरवरी को रैली के पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन श्रीमान कुमार पाल गौतम जिला कलक्टर बीकानेर के मुख्य आतिथ्य में किया गया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि उपनिदेशक जन सम्पर्क श्री विकास हर्ष, व्यास कॉलोनी थानाधिकारी श्री मनोज माचरा सहित गणमान्य लोग उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ. विमला मेघवाल ने की। जिला कलक्टर ने ध्वजारोहण कर अपने संदेश में कहा कि यहाँ पर टीम में रहकर कार्य करना और टीम भावना से मदद करने की प्रेरणा मिलती है साथ ही स्काउट व गाइड नैतिकता का पाठ पढ़कर समाज सेवा हेतु तैयार होते हैं। उन्होंने कहा कि स्वयं को छात्र जीवन में इस प्रकार की गतिविधियों में शामिल

होने का सौभाग्य प्राप्त न हुआ परन्तु आज यहाँ आकर मेरी वह कमी भी पूरी हो गई। समापन अवसर पर स्काउट गाइड ने लोकनृत्य व लोकगीत कार्यक्रम की प्रस्तुति दी। डॉ. विमला मेघवाल ने कहा कि इन शिविरों के माध्यम से स्काउट गाइड को चरित्र निर्माण, सामाजिक सोच में बदलाव व स्वच्छता और पर्यावरण के प्रति जाग्रति होती है। कार्यक्रम के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं में अव्वल रहने वाले स्काउट-गाइड ग्रुप एवं संघों को जिला कलक्टर ने ट्रॉफी एवं प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया।

मुझे भी मेरे स्थानीय संघ एवं ग्रुप द्वारा प्रतियोगिताओं में किए गए बेहतर प्रदर्शन की बदौलत जिला कलक्टर से सम्मानित होने का सुअवसर प्राप्त हुआ। स्थानीय संघ श्रीडूँगरगढ़ ने 15 विभिन्न प्रतियोगिताओं में श्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए क्लस्टर शील्ड पर कब्जा जमाया जो कि संघ समस्त पदाधिकारियों एवं प्रतिभागियों के लिए एक यादगार क्षण था। जिला कलक्टर महोदय एवं अतिथियों द्वारा हमें क्लस्टर शील्ड देकर सम्मानित किया तथा हमेशा बेहतर प्रदर्शन करने हेतु शुभकामनाएँ दी।

रैली के दौरान सभी पधारे हुए अतिथियों एवं भामाशाहों को स्मृति चिह्न भेंट किए गए। सम्पूर्ण रैली के दौरान सहायक राज्य संगठन आयुक्त स्काउट श्री दिलीप कुमार माथुर, सहायक राज्य संगठन आयुक्त गाइड संतोष निर्वाण के मार्गदर्शन में सीओ गाइड ज्योति रानी महात्मा का कुशल प्रबंधन, आवास एवं भोजन व्यवस्था, सीओ स्काउट श्री जसवंत राजपुरोहित के बेहतर कार्यक्रम संयोजन एवं शानदार मंच संचालन तथा स्थानीय संघ सचिव सर्वश्री रेवन्तमल स्वामी, बृजमोहन राजपुरोहित, किशनाराम कांटिया, सुरेश कुमार, ओमप्रकाश विश्नोई, सुगनाराम चौधरी, भूपसिंह, प्रताप सिंह, सुखरामजी आदि के प्रयासों ने रैली को सफलता के मुकाम तक पहुँचाया तथा चार वर्ष बाद आयोजित होने वाली प्रतियोगिता रैली के लिए एक चुनौती छोड़ते हुए 'जाग्रति से सामर्थ्य तक' पहुँचने हेतु एक नए सफर पर चलने हेतु अलविदा कहा।

प्राध्यापक (वाणिज्य)
राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय,
ऊपनी, बीकानेर
मो: 9414540337

विज्ञान मॉडल प्रदर्शनी एवं क्विज प्रतियोगिता 2018-19

राज्य स्तरीय विज्ञान मेले में बाल वैज्ञानिकों ने दिखाया अपना कौशल

❒ डॉ. महावीर कुमार शर्मा

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय राजेन्द्र मार्ग, भीलवाड़ा में 29 जनवरी से 01 फरवरी तक राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् उदयपुर के तत्वावधान में राज्य स्तरीय विज्ञान मेला (विज्ञान, गणित, पर्यावरण मॉडल प्रदर्शनी एवं क्विज प्रतियोगिता 2018-19) का आयोजन हुआ। मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी श्री अरुण कुमार दशोरा को विज्ञान मेले का नोडल अधिकारी, डॉ. महावीर कुमार शर्मा, प्रधानाचार्य, राउमावि. राजेन्द्र मार्ग भीलवाड़ा मेले के संयोजक एवं श्री राजेश कुमार वैष्णव, प्राध्यापक मेला सचिव नियुक्त किए गए।

विज्ञान मेले का उद्घाटन 29 जनवरी को हुआ, उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि श्री कैलाश त्रिवेदी, विधायक सहाड़ा-रायपुर, अध्यक्ष श्री महेशचन्द्र शर्मा, न्यायाधिपति एवं सदस्य मानवाधिकार आयोग तथा विशिष्ट अतिथि श्री रामपाल शर्मा, जिलाध्यक्ष कांग्रेस व श्री अनिल डांगी थे। अतिथियों का आयोजक संस्था द्वारा साफा पहनाकर बुके भेंट कर व स्मृति चिह्न प्रदान कर स्वागत किया गया। छात्रा आशी शर्मा का भवाई विधा पर किए गए एकल नृत्य ने सभी का मन मोह लिया। समारोह को राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् उदयपुर के उपनिदेशक श्री सुभाष शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर आशा माण्डावत ने भी संबोधित किया।

विज्ञान मेले में राजस्थान के विभिन्न जिलों के विजेता विद्यार्थियों ने भाग लिया एवं विज्ञान, गणित व पर्यावरण सम्बन्धी मॉडल का प्रदर्शन एवं क्विज प्रतियोगिता व विद्यार्थी सेमिनार का आयोजन किया गया। मेले में कुल 212 प्रतिभागियों का पंजीकरण किया गया। विज्ञान मेले में प्रतिभागियों ने स्वास्थ्य एवं स्वच्छता, संसाधन प्रबंधन, अपशिष्ट प्रबंधन, परिवहन एवं संचार, कृषि और जैविक खेती, गणितीय प्रतिरूपण एवं दिव्यांगों से सम्बन्धित 180 मॉडल विभिन्न कक्षों में प्रदर्शित किए गए जिनका प्रदर्शनी अवलोकन समय प्रातः 09:30 से 01:00 बजे एवं 03:00 से 05:00 रखा गया। मेले का भीलवाड़ा जिले के विभिन्न स्कूलों के लगभग 10,000 से अधिक विद्यार्थियों, विज्ञान प्रेमियों व आमजन ने भ्रमण करते हुए मॉडल्स का अवलोकन किया एवं उनकी कार्यप्रणाली से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त की।

बाहर से आने वाले विद्यार्थियों के लिए आयोजक संस्था द्वारा रेल्वे स्टेशन, बस स्टैण्ड, होटल लैण्डमार्क आदि स्थानों पर हेल्प डेस्क की व्यवस्था की गई तथा साथ ही आवागमन हेतु साधन भी उपलब्ध कराए गए। आसपास की स्कूलों एवं केशरमल सोनी धर्मशाला में ठहरने हेतु उत्तम आवास की व्यवस्था की गई। सर्दी को देखते हुए प्रतिभागियों के नहाने के लिए गर्म पानी उपलब्ध कराया गया। प्रतिभागियों व मेहमानों के लिए प्रतिदिन नाश्ते व दोनों समय भोजन की उत्तम व्यवस्था की गई, भोजन में विभिन्न प्रकार के व्यंजन परोसे गए।

मेले में आयोजित हुई विभिन्न प्रतियोगिताओं के परिणामः- क्विज प्रतियोगिता में श्रीराम-बीकानेर ने प्रथम, पलक गोयनका-सवाईमाधोपुर ने द्वितीय एवं मानसी सेन-अजमेर ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। विद्यार्थी सेमिनार प्रतियोगिता में हनुमानगढ़ की ऋद्धिबाला ने प्रथम, भीलवाड़ा की बरकत बानू ने द्वितीय एवं चित्तौड़गढ़ की महिमा सोलंकी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

विज्ञान से सम्बन्धित मॉडल प्रतियोगिता के सीनियर वर्ग में स्वास्थ्य एवं स्वच्छता में भीलवाड़ा की आशा माली, संसाधन प्रबंध में जोधपुर के राजू, अपशिष्ट प्रबंधन में अजमेर के सौरभ देवल, परिवहन एवं संचार में बाँसवाड़ा के ध्रुव जैन, कृषि एवं जैविक खेती में जोधपुर के श्रवण राम, गणितीय प्रतिरूपण में कोटा के जतिन वर्मा, दिव्यांगों से सम्बन्धित मॉडल में धौलपुर के शहवान खान ने प्रथम स्थान प्राप्त किए।

इसी प्रकार मॉडल प्रतियोगिता के जूनियर वर्ग में स्वास्थ्य एवं स्वच्छता में बीकानेर के वीनस विश्नोई एवं डूंगरपुर की अंशिका भट्ट, संसाधन प्रबंध में बाँसवाड़ा के हित पांचाल, अपशिष्ट प्रबंधन में जोधपुर के कुलदीप सिंह, परिवहन एवं संचार में राजसमन्द के कृपा सनाढ्य, कृषि एवं जैविक खेती में श्रीगंगानगर के पंकज कुमार, गणितीय प्रतिरूपण में अजमेर के बुसरा, दिव्यांगों से सम्बन्धित मॉडल में धौलपुर के धानी दूबे ने प्रथम स्थान प्राप्त किए।

मेले के दूसरे दिन रात्रि में सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया, जिसमें आयोजक विद्यालय एवं बाहर से आए प्रतिभागियों ने नृत्य एवं गायन द्वारा अपनी कला की मनमोहक प्रस्तुतियाँ दी। मेले में प्रतिभागी विद्यार्थियों का भीलवाड़ा डेयरी में शैक्षिक भ्रमण कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें बाल वैज्ञानिकों ने भीलवाड़ा डेयरी का अवलोकन करते हुए कार्यप्रणाली सम्बन्धित जानकारी प्राप्त की।

इस विज्ञान मेले का समापन 01 फरवरी को हुआ, समापन समारोह के मुख्य अतिथि श्री विट्ठल शंकर अवस्थी विधायक भीलवाड़ा, अध्यक्ष श्री लक्ष्मीनारायण डाड, जिलाध्यक्ष, भाजपा भीलवाड़ा एवं विशिष्ठ अतिथि मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी श्री अरुण कुमार दशोरा, राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् उदयपुर के उपनिदेशक श्री सुभाष शर्मा थे। अतिथियों द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पारितोषिक एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किए। इस अवसर पर आयोजक संस्था राउमावि. राजेन्द्र मार्ग भीलवाड़ा द्वारा प्रकाशित एक स्मारिका **SCINITY 2019** का विमोचन अतिथियों द्वारा किया गया।

संयोजक (विज्ञान मेला) एवं
प्रधानाचार्य रा.उ.मा.वि.
राजेन्द्र मार्ग, भीलवाड़ा
मो. 9414615855

नवाचार

डिफेंस विद स्कूल

❒ रजनीश दाधीच

राजस्थान के झुंझुनूं जिले में एक ऐसा गाँव है जहाँ लगभग प्रत्येक घर में सेना का जवान मिलेगा। चाहे तो वो कार्यरत सिपाही हो या फिर पैंशनर हो। इस गाँव का नाम धनूरी है जो जिला मुख्यालय से 17 कि.मी. दूर झुंझुनूं राजगढ़ राजमार्ग पर अलसीसर ब्लॉक में स्थित है। इस गाँव में मुस्लिम समुदाय के कायमखानी जाति का बाहुल्य है। कायमखानियों की वीरता किसी के परिचय की मोहताज नहीं। इस गाँव में लगभग 150 की संख्या में भारतीय सेना के कार्यरत फौजी है व लगभग 300 की संख्या में सेवानिवृत्त फौजी है जो सेना के विभिन्न पदों से सेवानिवृत्त हुए है। जिसमें जवान से लेकर कर्नल तक के पद है। इस गाँव के लोगों का देश भक्ति का जज्बा अनूठा है। देश की सीमाओं पर दिन-रात प्रहरी बन कर इस राष्ट्र की सुरक्षा में अपने प्राण न्यौछावर करने को आतुर रहते हैं। इस बात का इतना ही प्रमाण पर्याप्त है कि यह गाँव उन 15 शहीदों की यादें अपने अन्दर छुपाए बैठा है। जिन्होंने सन् 1948, 1962, 1965, 1971, 1999 के युद्धों में सीमा पर दुश्मनों से देश की आन-बान-शान के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी। राजस्थान में शायद ही कोई दूसरा गाँव होगा जहाँ की 15 माताओं ने अपने बेटों को देश के लिए बलिदान कर दिया।

इन्हीं शहीदों की वीरांगनाओं में सबसे उम्रदराज 102 वर्षीय श्रीमती सायरा बानो पत्नी शहीद ताज मोहम्मद खान का सम्मान करने के लिए रा. आ. उ.मा.वि. धनूरी में रखे गए कार्यक्रम में शिरकत करने के लिए सेना के आला अधिकारी बिग्रेडियर अजीत सिंह स्वयं पधारे। श्रीमती सायरा बानो ऐसी शख्सियत है जिन्होंने अपने पति को देखा भी नहीं। जिस दिन उनकी शादी थी उसी दिन युद्ध में लड़ाई लड़ने का आदेश हैड क्वार्टर से उनके पति को मिलता है और वो तुरन्त रवाना होकर लड़ाई में शामिल हुए और युद्ध में शहीद हो गए। तब से अब तक की उम्र का सफर सायरा बानो ने केवल अपने पति की याद में तय किया। बिग्रेडियर अजीत

सिंह वर्तमान में गुजरात के राजकोट में एन.सी.सी. ग्रुप कमाण्डर के पद पर कार्यरत है। जिनको कारगिल हीरो कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। क्योंकि उन्होंने कारगिल युद्ध के दौरान ऑपरेशन विजय का नेतृत्व किया। बिग्रेडियर अजीत सिंह रा.आ.उ. मा.वि. धनूरी में डिफेंस विद स्कूल के तहत आयोजित कार्यक्रम में दिनांक 07.02.2019 को अपनी पत्नी और पुत्र के साथ पधारें। बिग्रेडियर अजीत सिंह ने शहीद वीरांगना को शॉल ओढ़ाकर सम्मान किया और वीरांगना के चरण स्पर्श कर कारगिल विजय का वृतान्त सुनाया। बिग्रेडियर अजीत सिंह ने विद्यालय के छात्र/छात्राओं को देशभक्ति की भावना जाग्रत करने के लिए और सेना में भर्ती होने का दृढ़ निश्चय बनाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने बताया कि जब वे 22 ग्रेनेडियर में चार्ली कम्पनी के कम्पनी कमाण्डर थे तब उन्हें अपनी कम्पनी के साथ कारगिल में दुश्मनों से लड़ने का आदेश मिला। बिग्रेडियर अजीत सिंह चार्ली कम्पनी जो कि मुसलमान जवानों की कम्पनी थी, के 100 जवानों के साथ कारगिल में 5287 मीटर की ऊँचाई पर दुर्गम रास्तों से विपरीत प्राकृतिक परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए खालुबर रिज की जुबेर दिल पर फतेह हासिल की। इस युद्ध में दुश्मन ऊँचाई पर था और हमारी सेना के जवान नीचे। ऊपर से हो रही फायरिंग के बीच दुश्मन से मुकाबला करना बहुत मुश्किल था। लेकिन बिग्रेडियर अजीत सिंह व उनकी कम्पनी के जवानों ने अदम्य साहस का परिचय देते हुए फतेह हासिल की। अजीत सिंह के अनुसार इस युद्ध में इस कम्पनी के 10 जवान शहीद हुए इसके साथ 20-25 जवान और बिग्रेडियर अजीत सिंह स्वयं भी इंटेलीजेंस यूनिट के टीपू सूल्तान खान जो की इसी गाँव के वाशींदे है वो भी युद्ध के समय इस कम्पनी को असीस्ट कर रहे थे। उन्होंने भी छात्र/छात्राओं को वतन परस्ती की बातें बतायी। कार्यक्रम के अन्त में संस्थाप्रधान श्री रजनीश दाधीच ने छात्र/छात्राओं, गाँव से पधारे गणमान्य व्यक्तियों को स्कूल विद डिफेंस कार्यक्रम में बारे में बताया। उन्होंने गाँव को वीरधरा बताया। उन्होंने अपने उद्‌बोधन में विद्यालय में पुनः एन.सी.सी. खुलवाने के प्रयासों और खेल मैदान में डिफेंस विद एकेडमी की रूपरेखा तैयार करने के उद्देश्य निर्धारित करने की बात कही। अन्त में उन्होंने आगुन्तकों का आभार व्यक्त किया।

प्रधानाचार्य
रा.आ.उ.मा.वि., धूनरी, जिला-झुंझुनूं
मो: 9461413448

प्रतिभा सम्मान

राष्ट्रीय मास्टर एथलेटिक्स चैम्पियनशिप में गोल्ड मैडल

❒ हरीराम मीणा

राष्ट्रीय मास्टर एथलेटिक्स चैम्पियनशिप दिनांक 01.02.2019 से 04.02.2019 तक चार दिन सवाई मानसिंह स्टेडियम जयपुर में आयोजित हुई। प्रतियोगिता का उद्घाटन खेल राज्य मंत्री श्रीमान अशोक चांदना द्वारा किया गया। प्रतियोगिता में राजस्थान राज्य का प्रतिनिधित्व करते हुए शिक्षा विभाग के निम्न कार्मिकों ने अपने आयु वर्ग में भाग लिया-

1. श्रीमती सरला यादव, शा.शि., रा.उ.मा.वि. सरदार सिंह की ढाणी (जैसलमेर) ने अपने आयु वर्ग 35+ में 5 किमी. वॉक व 400 मीटर हर्डल दौड़ में गोल्ड मैडल व 800 मीटर दौड़ में सिल्वर मैडल प्राप्त कर शिक्षा विभाग का नाम रोशन किया।
2. श्री हरीराम मीणा प्रशासनिक अधिकारी CDEO श्रीगंगानगर ने अपने आयु वर्ग 55+ में जैवलियन थ्रो में गोल्ड व 200 मीटर दौड़ व 400 मीटर दौड़ में क्रमश सिल्वर व ब्रॉंज मैडल प्राप्त कर शिक्षा विभाग का नाम रोशन किया।

जिले में पहुँचने पर यादव व मीणा का प्रशासनिक अधिकारियों व कार्यालय स्टाफ द्वारा हार्दिक स्वागत किया। ज्ञात रहे गत वर्ष सरला यादव व हरीराम मीणा द्वारा नई दिल्ली में इण्डो बांग्लादेश अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में भी गोल्ड व सिल्वर मैडल प्राप्त किए थे। श्रीमती सरला यादव द्वारा जून 2018 में अन्तर्राष्ट्रीय मलेशिया में भी 400 मीटर हर्डल में गोल्ड मैडल प्राप्त करने पर जिला कलक्टर जैसलमेर द्वारा पन्द्रह अगस्त 2018 को सम्मानित किया जा चुका है।

प्रशासनिक अधिकारी,
कार्यालय मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, श्रीगंगानगर
मो: 9982407399

15 प्रतिभाओं को मैडल व प्रतीक चिह्न देकर सम्मानित किया

❒ फूल सिंह भास्कर

राजकीय माध्यमिक विद्यालय सांवलोदा लाड़खानी (सीकर) में सामान्य ज्ञान प्रतियोगी परीक्षा का आयोजन किया गया। प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पर रहने वाले 15 प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं को भामाशाह रोहिताश थालोड़ (व.अ.) द्वारा प्रतीक चिह्न व मैडल देकर सम्मानित किया गया। प्रधानाध्यापक फूलसिंह भास्कर ने बताया कि पूरे विद्यालय में कक्षा 8 की छात्रा मोनिका थालोड़ प्रथम रही। द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर निकिता, ज्योति जांगिड़, प्रियंका कुमावत, मनीषा कँवर, प्रवीण, वैदिका कँवर, नरेन्द्र, सुरेन्द्र थालोड़, लोकेश भूकर, रिंकू, कमलेश, प्रेमसुख, निकिता ढाका, रीतिक व खुशबू जाँगिड़ रही। शारीरिक शिक्षक श्री भँवर सिंह ने बताया कि प्रतिवर्ष सभी कक्षाओं को सामान्य ज्ञान के हजारों प्रश्न तैयार करवाकर फरवरी माह में इस प्रतियोगी परीक्षा का आयोजन किया जाता है तथा कक्षा 6 से 10 तक के विद्यार्थियों को इसमें सम्मिलित किया जाता है। इस अवसर पर प्रवीण तेतरवाल, रोहिताश थालोड़, राजेश पूनियाँ, सरिता, बनवारी लाल शर्मा, रेणुका, रामलाल गोदारा, हरीराम, जुगल किशोर, संतोष, इन्दिरा, रामकुमार भामू व चिरंजीलाल शर्मा सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

प्रधानाध्यापक, शारीरिक शिक्षक
रा.मा.वि. सांवलोदा, लाडखानी (सीकर)

आवश्यक सूचना

रचनाएँ आमंत्रित

'शिक्षक दिवस' के उपलक्ष्य में प्रकाशनार्थ विविध विषयों व विधाओं पर शिक्षकवृंद व सुधी पाठकों से रचनाएँ दिनांक 31 मई, 2019 तक आमंत्रित की जाती हैं। अतः अपने शैक्षिक चिंतन-अनुभव, कहानी, संस्मरण, एकांकी, बाल साहित्य, कविता एवं राजस्थानी साहित्य (गद्य-पद्य) आदि मौलिक रचनाएँ 'वरिष्ठ संपादक, शिविरा प्रकाशन, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर' के नाम से प्रेषित करें। रचना के अंत में मौलिकता की घोषणा एवं हस्ताक्षर भी आवश्यक है। साथ ही बैंक डायरी के प्रथम पृष्ठ की छायाप्रति प्रत्येक रचनानुसार अलग-अलग संलग्न करें। निर्धारित तिथि पश्चात प्राप्त रचनाओं पर विचार नहीं किया जा सकेगा।

-वरिष्ठ संपादक

इंस्पायर अवार्ड-मानक

7वीं राष्ट्र स्तरीय प्रदर्शनी एवं प्रोजेक्ट प्रतियोगिता : 2018-19

❒ कमल कान्त स्वामी

स्कूली बच्चों में नव प्रवर्तन (इनोवेशन) और रचनात्मक सोच की संस्कृति को बढ़ावा देने के साथ-साथ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के माध्यम से सामाजिक जरूरतों को पूरा करने की दिशा में एक पहल 'इंस्पायर अवार्ड-मानक' की 7वीं राष्ट्र स्तरीय प्रदर्शनी एवं प्रोजेक्ट प्रतियोगिता (एनएलपीसी.) का आयोजन दिनांक 14-15 फरवरी, 2019 को भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आइआइटी), नई दिल्ली में किया गया।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार और राष्ट्रीय नव प्रवर्तन प्रतिष्ठान-भारत (NIF) के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस प्रतियोगिता में राज्य दल प्रभारी कमल कान्त स्वामी, उप जिला शिक्षा अधिकारी, स्कूल शिक्षा, बीकानेर के नेतृत्व में राजस्थान के 16 बाल वैज्ञानिकों के दल ने अपने नवाचारों की प्रोजेक्ट के माध्यम से प्रस्तुति दी। प्रदर्शनी में सम्पूर्ण भारत से 860 बाल वैज्ञानिकों ने अपने नवाचारों का प्रदर्शन किया।

दो दिवसीय प्रदर्शनी का उदघाट्न प्रो. आशुतोष शर्मा सचिव, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार द्वारा किया गया। राष्ट्रीय नव प्रवर्तन प्रतिष्ठान द्वारा नियुक्त जूरी सदस्यों ने 60 सर्वश्रेष्ठ नवाचारों का चयन किया जिनका प्रदर्शन राष्ट्रपति भवन ने होने वाली विशेष प्रदर्शनी में किया जाएगा। राजस्थान से भी तीन बाल वैज्ञानिकों के प्रोजेक्ट चयनित हुए जिनमें जालोर के जितेन्द्र कुमार का प्रोजेक्ट 'सेंसर युक्त झूला', टोंक के इन्द्र प्रसाद गोठवाल का प्रोजेक्ट 'इलेक्ट्रिक स्टिक फॉर ब्लाइंडस' एवं उदयपुर के शैलेन्द्र सिंह का प्रोजेक्ट 'फ्लोर क्लिनिंग मशीन' शामिल हैं। समापन समारोह में अमिताभ कांत, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, नीति आयोग, भारत सरकार द्वारा चयनित बाल वैज्ञानिकों को सम्मानित किया गया। राज्यदल के साथ स्टेट नॉडल अधिकारी के रूप में डॉ. अशोक कुमार शर्मा सहायक निदेशक मा.शि. राजस्थान एवं दुर्गा राम मांझू, सहायक नॉडल अधिकारी के रूप में साथ रहे। दल के साथ व्यवस्थाओं में सहयोग के लिए दीपक मिश्रा, नरेश कंवर एवं मनीषा चौहान ने भी अपना योगदान दिया।

उप जिला शिक्षा अधिकारी
स्कूल शिक्षा, बीकानेर संभाग, बीकानेर

रपट

'सखा संगम' का आयोजन

❒ सुनिता यादव

सेठ हरनारायणदास ईश्वरदास काजड़िया राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय में दिनांक 10 फरवरी, 2019 को शिक्षा विभाग द्वारा प्रायोजित पूर्व छात्रों का कार्यक्रम 'सखा संगम' का आयोजन किया गया। वसंत पंचमी के शुभ अवसर पर आयोजित इस कार्यक्रम में माँ सरस्वती की प्रतिमा की स्थापना की गई जिसकी सम्पूर्ण लागत 70,000 रुपये श्री सुशील कुमार काजड़िया परिवार द्वारा वहन की गई। 'सखा संगम' कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पिलानी विधायक श्री जे.पी. चन्देलिया तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता सूरजगढ़ के पूर्व विधायक श्री श्रवण कुमार ने की। प्रधानाचार्या श्रीमती सुनिता यादव ने अतिथियों का स्वागत किया तथा पूर्व छात्रों का सम्मान किया। कार्यक्रम में पूर्व डी.ई.ओ. (निदेशालय बीकानेर) श्री मांगेलाल बुड़ानिया, पूर्व प्रधान, सूरजगढ़ श्री शेरसिंह नेहरा, प्रधानाचार्य केहरपुरा श्री ओमप्रकाश, मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी श्री ओमपाल सिंह सहित अनेक गणमान्य लोगों ने भाग लिया। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि श्री चन्देलिया जी ने विद्यालय के खेल मैदान को मिनि स्टेडियम में बदलने हेतु आवश्यक कार्यवाही करने का भरोसा दिलाया।

विद्यालय में सत्र 2018-19 में विशिष्ट दान देने वाले भामाशाह- **1.** कजारिया सिरेमिक्स, नई दिल्ली, पानी का टैंक 1,33,618 रुपये (प्रेरितकर्ता डॉ. महेश यादव)। **2.** श्री धर्मपाल सिंह, पूर्व प्रधानाचार्य, 25 सैट टेबल एवं स्टूल 28,000 रुपये। **3.** श्रीमती अरुणा शर्मा, विद्यार्थी गणवेश, टाई, बेल्ट, स्वेटर एवं पंखे 1,40,780 रुपये। **4.** श्री महेश यादव नकद राशि 21,000 रुपये। **5.** श्री सुशील काजड़िया, माँ सरस्वती प्रतिमा स्थापना एवं मुख्य गेट 1,09,861 रुपये। **6.** श्री मातादीन यादव नकद राशि 11,000 रुपये। **7.** श्री हनुमान प्रसाद स्वामी, 5 पंखे 7,500 रुपये। **8.** कीस्टॉन कॉलेज, नकद राशि 11,000 रुपये। **9.** श्री रमेश कुमार शर्मा, नकद राशि 5,100 रुपये। **10.** श्री सांवरमल प्रजापत, 20 कुर्सियाँ 12,000 रुपये। **11.** श्री भगवती प्रसाद केडिया, पुरस्कार 4,900 रुपये। **12.** श्री महेश जांगिड़, नकद राशि, 5,100 रुपये। **13.** समाज सेवा संघ काजड़ा, नकद राशि 5,100 रुपये। **14.** श्री बसंतराम Ex Navy नकद राशि 5,100 रुपये। **15.** हनुमान प्रसाद नेताजी, चैरिटेबल ट्रस्ट, नकद राशि 51,000 रुपये।

-प्रधानाचार्य,
सेठ ह.ई.का. राज. उ.मा. विद्यालय, काजड़ा (झुंझुनूं)
मो. 9460010600

पुस्तक समीक्षा

बड़ा अस्पताल और अन्य कहानियाँ (कहानी संग्रह)

कहानीकार : डॉ. रवीन्द्र कुमार यादव, **प्रकाशक :** विकास प्रकाशन, जुबली नागरी भंडार, स्टेशन रोड, बीकानेर (राज.) **संस्करण :** 2018 **पृष्ठ :** 134 **मूल्य :** ₹ 300

साहित्य की सर्वाधिक लोकप्रिय विधा कहानी अपने अनेक दौरों से गुजरती हुई अब भी अनेक संभावनाओं के द्वार खुले किए हुए हैं। इन्हीं बाकी संभावनाओं की तलाश में पाठक कहानियों से जुड़ा हुआ है। कहानी के व्यापक और विशद परिदृश्य में अनेक नाम जुड़ते चले जा रहे हैं, इन्हीं नामों में एक नाम डॉ. रवीन्द्र कुमार यादव का है। यह स्वभाविक है कि पेशे से चिकित्सक डॉ. यादव जब कहानियाँ लिखते हैं तो उसमें सर्वाधिक कहानियों के विषय चिकित्सा जगत से जुड़े होते हैं। अतः यह अकारण नहीं कि कहानी संग्रह का शीर्षक भी 'बड़ा अस्पताल और अन्य कहानियाँ' है। शीर्षक कहानी 'बड़ा-अस्पताल' में अस्पताल बड़ा होते हुए भी सुविधाओं और चिकित्सा व्यवस्थाओं में जनता के लिए कैसे छोटा और गैर सरकारी हो जाता है का मार्मिक चित्रण हुआ है। डॉ. यादव के कहानीकार की विशेषता है कि वह ठेठ ग्रामीण अंचल से गहरा सरोकार लिए हैं तो स्थितियों-घटनाओं को तह तक जाकर टटोलने में यकीन रखता है। किसी भी ग्रामीण क्षेत्र में विकास और सुविधाओं के नाम पर देश के कोने-कोने में कैसे सरकारें चिकित्सा जैसी आवश्यक सुविधाओं के साथ छेड़छाड़ करती है, इसका प्रमाण यह कहानी है।

शीर्षक कहानी का आरंभिक अंश देखें- 'सरकार अपनी चरम अवस्था पर थी... मेरा मतलब लोकतंत्र के हिसाब से आखिरी साल, यही विकास की चरम अवस्था होती है। तीन साल तो पिछली सरकारों को खजाना खाली करने के आरोप से ही कट जाते हैं बीच का एक साल विकास योजनाओं का, जो जाती-जाती सरकार अक्सर गिनाती हैं!! और अंतिम वर्ष में फ्री की योजनाएँ... फ्री का अनाज... फ्री की लाइट... फ्री स्कूटी भी... और सरकार की मर्जी पर है कुछ भी फ्री कर सकती है! जो कार्यकर्त्ता चार साल से फ्यूज बल्ब की तरह पड़े रहते हैं अचानक वो सक्रिय हो जाते हैं।' कहानी के आरंभ में राजनीति बोध में आम जनता की व्यथा-कथा के साथ तंज का स्वर प्रभावित करने वाला है।

बड़ा अस्पताल केवल एक कहानी नहीं वरन् लोकतंत्र की एक सच्चाई है कि जिसमें एक सी.एच.सी. (सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र) को विधायक महोदय ने उप स्वास्थ्य केन्द्र से तीस बेड का सी.एच.सी. तो बना दिया किंतु चार कमरों का भवन पर्याप्त सुविधाओं के अभाव में 'बड़ा अस्पताल' से पुनः डिग्रेड कर प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र कर दिया गया। कहानीकार का संवेदनशील होना और जनता के साथ एक चिकित्सक-कहानीकार के रूप में स्वस्थ भारत का सपना साकार करने के पक्ष में खड़े होना प्रभावित करता है।

प्रेमचंद जी ने साहित्य को समाज के आगे जिस मशाल के रूप में चलने का परामर्श दिया था, उसका यह और संग्रह की अन्य ऐसी कहानियाँ अंगीकार है। एक मरीज को हमारे देश में चिकित्सा के नाम पर पर्याप्त सुविधाएँ मिलनी चाहिए, इससे भला किसका विरोध होगा, फिर ऐसी रचनाएँ ही हमारी संवेदनशीलता को द्विगुणित करती है और हम जनता और सरकार के साथ मिलकर कुछ जमीनी बदलाव की भूमिका के वाहक बनते हैं।

संग्रह की कहानी 'सब स्पष्ट' में स्वास्थ्य महकमे में व्याप्त भ्रष्टाचार को व्यंग्य के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है वहीं 'लपका गिरोह' में डॉक्टर और मरीज के बीच जन्मी 'मध्यस्थ' व्यवस्थाओं पर प्रकाश डाला गया है। कहानीकार का मानना है कि विश्व स्तरीय सुविधाओं की बात करने वाले हमारे जनप्रतिनिधियों का बिना तैयारी और व्यवस्थाओं की घोषणाओं द्वारा चिकित्सकों को और पूरी व्यवस्थाओं को हतोत्साहित करने जैसा है। 'आराधना' और 'कहानीकार की कहानी' भी ऐसी ही कहानियाँ हैं जिन में चिकित्सा जगत के मार्मिक चित्र व्यंजित हुए हैं। संग्रह में चिकित्सा जगत के साथ हमारा पूरा घर परिवार और समाज भी चित्रित हुआ है। नारी शक्ति का स्वर 'शक्ति का दावानल' और 'फतेह' जैसी रचनाओं में तो 'शहीद का दर्जा' में देश के लिए सर्वस्व त्यागने वाले सैनिकों की गाथा है जिस पर हमारी श्रद्धा और देश भक्ति की भावनाएँ संवेदित होती है। कदमपुर का पहलवान, रोते घरौंदे, अनंत प्रेम, सबूत सबूत खेलें आदि कहानियाँ भी प्रभावित करने वाली है।

कहानीकार रवीन्द्र कुमार यादव के सामाजिक सरोकार इतने गहरे और सघन है कि इन कहानियों में हमारा समय बोलता है। वे चिकित्सा जगत में समाज के जन-जन को सुखी और स्वस्थ रहने की परिकल्पना को साकार करते हैं तो कथा-साहित्य के माध्यम से अपनी इसी परिकल्पना को फिर फिर दोहराते हैं। निसंदेह स्थितियों से मुठभेड़ करते पात्र इन कहानियों में अपने समाज को आदर्श समाज के निर्माण के लिए प्रेरित प्रोत्साहित करते हैं। वे थक-हार कर बैठने वाले पात्र नहीं वरन् खुद कुछ करते हुए अपने पाठकों को भी प्रेरित करते हैं। इन कहानियों से गुजरते हुए कहीं भी ऐसा प्रतीत नहीं होता है कि हम किसी कहानीकार के पहले कहानी संग्रह को पढ़ रहे हैं। कहानीकार के जीवनानुभवों से जुड़ी इन कहानियों में यह शक्ति है कि वे हमारे अनुभव को जैसे साझा करती हुई हमें एक दिशा देती है।

किसी कहानीकार के लिए अपने निजी जीवन और आसपास घटित घटनाओं को कहानी में ढालना एक कौशल होता है। कहानी विभिन्न घटनाक्रमों और अनेक सच्चाइयों के बीच छिपी रहती है। एक मर्म बिंदु को समझते हुए अपने परिवेश के साथ कहानी को चरम तक ले जाने की कला इस संग्रह के कहानीकार में सायास और सहजता से देख सकते हैं। बिना किसी शोर और विषयांतर के संग्रह की कहानियाँ हमारे भीतर स्थितियों से मुठभेड़ करते हुए परिवर्तन के वाहक बनने का जज्बा पैदा करने वाली हैं।

सर्वाधिक प्रभावशाली तथ्य यहाँ यह भी है कि बेशक संग्रह की कहानियाँ चिकित्सा जगत में व्याप्त न्यूनता-अधिकताओं के साथ उनके

द्वंद्वों को उजागर करती हो, किंतु इसे व्यापक परिदृश्य में देखा जाए तो कमोबेश यही स्थितियाँ अन्य क्षेत्रों में भी दिखाई देती हैं। अस्तु इस संग्रह की कहानियाँ वर्तमान दौर के बदलते समय और समाज को केन्द्र में रखते हुए एक युवा चिकित्सक-कहानीकार द्वारा किया गया जरूरी हस्तक्षेप है, जिसमें कुछ कर गुजरने की बेचैनी के साथ अदम्य उत्साह है। जीवन की जिजीविषा और संघर्ष से भरे इस कहानी संग्रह को सुधि पाठकों का भरपूर प्यार मिलेगा ऐसा मुझे विश्वास है।

समीक्षक : **डॉ. नीरज दइया**
सी-107, वल्लभ गार्डन, पवनपुरी,
बीकानेर-334003 (राजस्थान)
मो: 9461375668

वो कौन शख्स था जो भर गया मुझमें
(स्मृति आख्यान)

लेखक : दीप्ति कुलश्रेष्ठ **प्रकाशक :** मिनर्वा पब्लिकेशन, सेक्टर डी, प्लॉट नं. 2 एफ, भगवती कॉलोनी, पी.डब्ल्यू.डी. सर्किल, जोधपुर **संस्करण :** 2017 **पृष्ठ :** 528 **मूल्य :** ₹ 900

Lives of great men all remind us,
We can make our lives sublime,
And departing, leaves behind us,
Foot prints on the sand of time
-LONG FELLOW

(महापुरुषों की जीवनियाँ हमें याद दिलाती हैं कि हम भी अपना जीवन महान बना सकते हैं और मरते समय अपने पद चिह्न समय की रेत पर छोड़ सकते हैं।)

प्रख्यात चिंतक मि. लाँगफ़ेलो के उपर्युक्त कथन को सार्थक किया है साहित्यानुरागी शिक्षक दीप्ति कुलश्रेष्ठ ने तथा माध्यम बनी है उनकी सृजनगाथा 'वो कौन शख़्स था जो भर गया मुझमें...।' वस्तुतः बड़े शीर्षक की यह बड़ी पुस्तक एक पुत्री द्वारा अपने पिता के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को केन्द्र में रखकर लिखी गई है। यह तो एक वृहत् ग्रंथ है। वे स्मृतियाँ, वे संस्मरण जो स्वयं सृजक ने भोगे, के अलावा सैकड़ों संस्मरण एवं अनुभव तो उन महानुभावों के हैं जिन्होंने 'वो कौन शख्स था' के शख़्स के साथ जीते हुए उकेरे। यह बहुत कठिन एवं श्रम साध्य कार्य है जिसे बिना सच्ची लगन और असीम निष्ठा के हासिल नहीं किया जा सकता। बहरहाल इस सृजन से रू-ब-रू होते हैं।

समीक्ष्य सृजन 'वो कौन शख़्स था जो भर गया मुझमें...' महान शिक्षाविद् एवं शिक्षा प्रशासक श्रद्धेय सुधीन्द्र कुमार जी कुलश्रेष्ठ के जीवनवृत्त पर प्रकाश डालने वाला अद्भुत ग्रंथ है। श्री सुधीन्द्र कुमार राजस्थान शिक्षा विभाग के नौवें विभागाध्यक्ष रहे-निदेशक, प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर। उन्होंने इस महत्त्वपूर्ण पद पर दिनांक 01 जून, 1970 को कार्यग्रहण किया तथा मृत्युपर्यन्त (दिनांक 04 मई, 1971) कार्यरत रहे।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् राज्यों के गठन की शृंखला में राजस्थान का उदय 30 मार्च, 1949 को हुआ। तत्पश्चात् प्रशासनिक ताना बाना रचाव के क्रम में शिक्षा विभाग का मुख्यालय बीकानेर में रखा गया। विभाग के अध्यक्ष निदेशक/आयुक्त होते हैं। इस पद पर भा.प्र.से. के अधिकारी ही पदस्थापित होते रहे हैं; मगर विगत सात दशक के इतिहास में एक अपवाद है जब एक शिक्षक-शिक्षाविद्-शिक्षा अधिकारी को यह कमान सौंपी गई। ये अपवाद पुरुष थे श्री सुधीन्द्र कुमार कुलश्रेष्ठ जिनके बारे में यह ग्रंथ लिखा गया है।

वेद व्यास कृत महाभारत की तरह समीक्ष्य ग्रंथ को भी दस खण्डों में बांटा गया है। शुरू में आशीर्वचन, प्राक्कथन एवं लेखकीय वक्तव्य तथा खण्डों के पश्चात् समाहार में परिशिष्ट हैं। ये चार परिशिष्ट क्रमशः अनुक्त, अमूल्य धरोहर, जीवनवृत्त एवं चित्र मंजूषा के रूप में हैं।

प्रथम खण्ड (1922-42) श्री कुमार के जन्म, बाल्यकाल, स्कूली एवं महाविद्यालयी शिक्षा तथा प्रारम्भिक लेखन-चिन्तन की यात्रा पाठकों को करवाता है। उनका जन्म 15 अक्टूबर, 1922 को कोटा शहर में हुआ था। स्पष्ट है कि वे जन्मजात राजस्थानी थे। राजस्थान की आबोहवा में जन्मे, पले और शिक्षित-दीक्षित हुए। उनके पुरखे उत्तर प्रदेश में रहने वाले थे। दसवीं के पश्चात् वे कमाते हुए पढ़े। उनका विद्यार्थी जीवन Earn while you learn का जीवन्त उदाहरण है। कॉलेज के दिनों में उन्होंने एक डिपो में भण्डारी की नौकरी करते हुए अपनी पढ़ाई तथा रहने-खाने का खर्च निकाला। आत्मनिर्भरता एवं माँ-बाप के प्रति आदर भाव का यह श्रेष्ठ उदाहरण है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान 1942 के आंदोलन 'करो या मरो' के समय वे इलाहाबाद विश्वविद्यालय में पढ़ते थे और बतौर विद्यार्थी आन्दोलन में भाग लेते हुए अंग्रेजों की बर्बरता को झेला। यह उनकी देशभक्ति एवं स्वतंत्रता प्रेम का द्योतक है। अगस्त क्रान्ति के समय उनकी कविताओं ने धमाल मचा दिया। वे प्रखर वक्ता एवं ओजस्वी मंचीय कवि के रूप में उभर कर सामने आए। तीन पंक्तियाँ देखिए-

उठी बेड़ियों की झंकार!
जाग! जाग!! ओ सोने वाले,
रणभेरी यह रही पुकार!!

द्वितीय खण्ड (1943-46) मुख्यतः श्री कुमार के विवाह, शुरूआती रोजगार, उच्च शिक्षा एवं माँ के परलोकगमन तथा पुत्ररत्न की प्राप्ति को लेकर है। वस्तुतः यह उनके पारिवारिक एवं गृहस्थ जीवन का प्रारम्भिक सोपान है। खास बात यह है कि इस झंझावती दौर में उन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से एम.ए. (अंग्रेजी) पूर्वार्द्ध एवं उतरार्द्ध के नियत आठों प्रश्न पत्रों को एक ही वर्ष में पास कर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया। इन सबका सांगोपांग विवेचन बेटी दीप्ति ने ग्रंथ में किया है जिसे विस्तार से पढ़कर ही जाना जा सकता है। समीक्षा की तो आखिर एक हद होती है।

तृतीय खण्ड (1947-57) के प्रारम्भ में वे राजकीय महाविद्यालय, कोटा में बतौर अंग्रेजी व्याख्याता कार्य करते हैं। उनका शिक्षण बहुत सरस था। फलतः शीघ्र ही वे विद्यार्थियों में लोकप्रिय हो गए। सन् 1953 में राजस्थान पब्लिक सर्विस कमीशन द्वारा चयनोपरान्त राज्य सेवा में प्रवेश कर कॉलेज प्रिंसिपल के रूप में उन्होंने श्री गंगानगर, भीलवाड़ा, झालावाड़, दौसा एवं जोबनेर महाविद्यालयों में उल्लेखनीय सेवाएँ प्रदान की। उन्हें हमेशा चुनौती भरे कार्यों में लगाया जाता। उनका प्रशासन एवं संगठन क्षमता गजब की थी जिससे इन चुनौतियों का वे सफलतापूर्वक सामना कर सके।

अपनी उच्च शैक्षणिक योग्यता के बल पर कुमार साहब भले ही उच्च शिक्षा में प्रिंसिपल जैसे प्रतिष्ठित पद पर रहे लेकिन उनका मन स्कूल शिक्षा में रमता था जिसका श्रीगणेश चतुर्थ

खण्ड (1958) से होता है और जिसका विस्तार अन्तिम दशम् खण्ड (1971) तक चलता है। सन् 1958 में कॉलेज शिक्षा के प्रिंसिपलों को स्कूल शिक्षा में विद्यालय निरीक्षक (Inspector of schools) के पद का विकल्प मिलने पर वे स्कूल शिक्षा में आ जाते हैं। उनका पदस्थापन बाड़मेर में होता है। साठ वर्ष पहले के बाड़मेर की कल्पना ही पर्याप्त है, मगर धुन के धनी कुमार द्वारा यहाँ नामांकन, ठहराव एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए किए गए प्रयास आज भी रेत के धोरों पर मंडे हुए हैं। (देखिए आरम्भ में लाँगफेलो का कथन) इस दौरान बाड़मेर में नवपदस्थापित जिला कलेक्टर श्री दिनेशचन्द्र गुप्ता, आई.ए.एस. द्वारा एक समारोह में कुमार साहब के चरण स्पर्श करने तथा भीलवाड़ा में उनके शिष्य रहे होने का भावपूर्ण उल्लेख अपने उद्बोधन में करने का अद्भुत विवेचन ग्रंथ में मिलता है। 'शिक्षकों की ज्ञानशाला में ही कलेक्टर बनते हैं' का यह उदाहरण गुरुजन का गौरव बढ़ाने वाला है।

बाड़मेर के पश्चात् जयपुर, बीकानेर तथा सहायक निदेशक (समाज शिक्षा) के पदों पर कार्य करने के पश्चात् उनकी अगली पदोन्नति उप निदेशक के पद पर होती है। वे तत्कालीन जोधपुर-बीकानेर मण्डल (JB Range) के डिप्टी डायरेक्टर, एस.आइ.ई.आर.टी. उदयपुर में उप निदेशक, प्रधानाचार्य, शार्दुल पब्लिक स्कूल, बीकानेर (अब स्पोर्ट्स स्कूल) के पदों पर सेवाएँ देते हैं। इस बीच ढाई वर्ष तक जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर के कुल सचिव (Registrar) के रूप में कार्य करने का सौभाग्य भी उन्हें मिलता है। उप निदेशक से संयुक्त निदेशक के पद पर पदोन्नति होने पर उनका पदस्थापन निदेशालय में होता है। नौकरी को उन्होंने सदैव साधना मानकर किया। उनके द्वारा विभिन्न पदों पर कार्यरत रहते हुए जो नवाचार किए गए तथा जो उपलब्धियाँ दर्ज करवाई, का झिलमिल वर्णन ग्रंथ में किया गया है। वर्णन इतना सहज एवं प्रभावशाली है कि पाठक बिना थके और बिना उकताए सतत पढ़ने को मजबूर हो जाता है। यह सृजन की खूबसूरती है। साहित्य के विद्यार्थियों को यह ग्रंथ कई विधाएँ सीखने का अवसर प्रदान करता है।

योग्यता एवं क्षमता के बल पर कैसे राज्य सरकार ने कुमार साहब को शिक्षा निदेशक के पद पर पदोन्नत किया...आइ.ए.एस. के स्थान पर एक शिक्षा अधिकारी के होने का बहुत सुन्दर विवेचन ग्रंथकार ने दसवें और अन्तिम खण्ड में किया है, शिविरा के लिए अपना पृष्ठ 'दिशाकल्प' वे स्वयं लिखते थे। उनके समय के दिशाकल्प बड़े पठनीय हैं जिन्हें ग्रंथ में उद्धृत किया गया है, यह अच्छी बात है। शिक्षा निदेशक के पद पर कार्यरत रहते किसी असाध्य बीमारी ने उन्हें घेर लिया और 4 मई 1971 को बीकानेर में उनका असामयिक निधन हो गया। वे मात्र 48 वर्ष के थे।

कुमार साहब की नियोजन एवं क्रियान्वयन क्षमता अद्भुत थी जिसकी झलक उनके निदेशक काल में देखने को मिली। ग्रंथकार उनकी बेटी है। वह शिक्षक व संस्था प्रधान रही है। नामचीन साहित्यकार है। उनकी लेखनी तो जबरदस्त है सो है, मगर उनका जज्बा एवं जुनून गजब का है। तब ही तो वह पिता की मृत्यु के 40-45 वर्षों बाद यादों के वातायन में झांककर स्मृति आख्यान का इतना सुन्दर गुलदस्ता बुन सकी है। यायावर की भाँति भिन्न-भिन्न स्थानों पर संपर्क करते और एक-एक बात को गौर से सुनते-लिखते मैंने उन्हें देखा है। सैकड़ों पुस्तकें मैंने पढ़ी है लेकिन समीक्ष्य ग्रंथ का कोई मुकाबला नहीं है। यह एक बेटी द्वारा बाप का श्राद्ध है-साहित्यानुरागी बेटी एवं कर्मयोगी बाप इससे श्रेष्ठ श्रद्धांजलि कोई और हो ही नहीं सकती। ग्रंथ में कुमार साहब की डायरी में उनके कॉलेज के दिनों में लिखी शेरो-शायरी, संस्मरण व कविताएँ हू-ब-हू स्केन करके प्रस्तुत की गई है। (32 पृष्ठ) उत्तम क्वालिटी के आर्ट पेपर पर 64 साफ सुथरे फोटो का एलबम इस जीवनी ग्रंथ को पूर्णता प्रदान करता है।

ग्रंथ का मुद्रण सुन्दर एवं त्रुटिमुक्त है। प्रयुक्त कागज एवं जिल्द उत्तम है। प्रकाशन के स्तर एवं ग्रंथ के कलेवर को देखते हुए मूल्य को युक्तियुक्त तो ठहराया जा सकता है मगर सामान्य पाठक की क्षमता से ज्यादा है। अधिक से अधिक पाठक इसमें अवगाहन कर सकें, इस हेतु कम मूल्य का संस्करण निकालने तथा इंटरनेट पर उपलब्ध करवाए जाने पर विचार किया जाना चाहिए। यद्यपि सोशल मीडिया (व्हाट्सअप) के इस क्लेशकारी युग में पुस्तक पढ़ना दुष्कर हो गया है तथापि ऐसी प्रेरणादायी रचनाएं तो कम से कम पढ़ी जानी चाहिए ही। यह समीक्षा चाबी बनकर पढ़ने पर लगे ताले को खोल सके, यही भावना और यही शुभकामना है। इति शुभम!

समीक्षक : **ओम प्रकाश सारस्वत**
सेवानिवृत्त संयुक्त निदेशक
ए-विनायक लोक, बाबा रामदेव रोड,
गंगाशहर (बीकानेर)
मो. 9414060038

गुल्लू री गुल्लक
(राजस्थानी बाल उपन्यास)

लेखक : मधु आचार्य 'आशावादी' **प्रकाशक :** गायत्री प्रकाशन, बेणीसर बारी के बाहर, सूर्य कॉलोनी, बीकानेर-334004 **संस्करण** : 2018 **पृष्ठ :** 48 **मूल्य :** ₹ 50

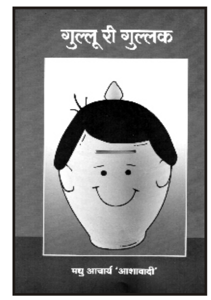

मधु आचार्य 'आशावादी' राजस्थानी और हिन्दी के बड़े ही ख्यातनाम और ऊर्जावान रचयिता हैं। पिछले कई वर्षों से वे हिन्दी और राजस्थानी में पचास से ज्यादा पुस्तकें लिख चुके हैं।

मधु आचार्य 'आशावादी' को साहित्य अकादमी दिल्ली व राजस्थानी के उपन्यास 'गवाड़' पर सर्वोच्च पुरस्कार अर्पित किया जो राजस्थानी का पहला उत्तर आधुनिक उपन्यास माना गया है। इस उपन्यास पर आपने खूब नाम कमाया है। हिन्दी और राजस्थानी की लगभग सभी विधाओं पर आपने लेखनी चलाई है। अनेक विधाओं में नित नवीन सृजन किया है। आपने बड़ों के लिए तो सृजन किया ही है साथ-ही-साथ बच्चों के लिए भी सरस भाषा में सृजन किया है। राजस्थानी बाल उपन्यास 'गुल्लू री गुल्लक' बच्चों के अन्दर बचत की भावना को उत्पन्न करने वाला एक प्रेरणादायी उपन्यास कहा जा सकता है। इस उपन्यास में यह सन्देश दिया गया है कि समय पर की गई बचत कब काम आ जाए इस बात का किसी को भी अन्दाजा नहीं होता। इस उपन्यास में उपन्यासकार केवल उपदेश ही नहीं देता बल्कि गुल्लू जैसे पात्रों से सच्ची दोस्ती, भाई-चारा और एक-दूसरे की

मदद करने की हिम्मत रखने वाले पात्रों का मनोवैज्ञानिक चित्रण करता है। गुल्लू पढ़ने में होशियार है साथ-ही-साथ वह अपने मित्रों से प्रेम रखने वाला है। उसको यह पता है कि बचत का क्या महत्त्व है। इस उपन्यास में गुल्लू एक आदर्शवादी पात्र है। जो यह सन्देश देता है कि अभी बचत नहीं करोगे तो आगे अपने काम कैसे करोगे। इस पुस्तक में मधु आचार्य 'आशावादी' ने नाट्कीय क्षमता का भरपूर प्रयोग किया है। छोटे-छोटे संवादों और छोटी-छोटी घटनाओं के माध्यम से बड़ी-बड़ी सीख दी है। गुल्लू में बचपना होते हुए भी अपनी माँ, अपने खेत और अपने दोस्तों आदि से बहुत लगाव तो है ही, साथ-ही-साथ कर्ज में डूबे हुए अपने परिवार के बारे में भी सोच है। गुल्लू अपनी बचत के बलबूते पर अपने गिरवी रखे हुए खेत को छुड़वाने की बात सोचता है। यहाँ पर अपने दोस्तों की सच्ची दोस्ती का उसे पता चलता है।

उसके गिरवी रखे हुए खेत को छुड़वाने के लिए उसके साथ उसका दोस्त रामू ही नहीं उस सेठ का बेटा भी साथ हो जाता है जिसके पास गुल्लू के खेत गिरवी पड़े हैं। लेकिन उनके गुल्लक में इतने पैसे नहीं निकले जिनसे सेठजी का कर्जा उतर सके। परन्तु सेठ जी उदारता का परिचय देते हैं। बच्चों के इस अपनत्व से उनका दिल पसीज जाता है और सेठजी पैसे लिए बिना ही गुल्लू को खेत के कागज वापस दे देता है। जिससे गुल्लू के घर की हालत बहुत अच्छी हो जाती है। उसके घर वाले गुल्लू की इतनी बड़ी सोच के आगे नतमस्तक हो जाते हैं।

इस उपन्यास में बालकों की भावनाओं के साथ-साथ सेठ की मानवता और छोटे बालकों की बड़ी सोच का पता चलता है। बच्चों के लिए लिखा गया यह उपन्यास बहुत कुछ सीख देने वाला है। इस उपन्यास में हम एक छोटे से बच्चे को सम्पूर्ण मनुष्य के रूप में बदलते हुए देख सकते हैं।

मधु आचार्य 'आशावादी' का यह उपन्यास समाज में समरसता का सन्देश देता है। साधारण बोलचाल की भाषा में लिखा हुआ यह सचित्र उपन्यास अपनी भाषा और शैली की दृष्टि से काफी प्रभावी है और हृदय की आंतरिक गहराई तक असर देने वाला उपन्यास है। ऐसा लगता है कि इस उपन्यास को लिखते समय मधु आचार्य 'आशावादी' स्वयं बाल रूप में ढल गए हैं।

इस प्रेरणादायी पुस्तक को लिखने के लिए लेखक को हृदय तल से बधाई।

समीक्षक : **नगेन्द्र नारायण किराडू**
चम्पा बाई बगीची के सामने,
नया शहर, बीकानेर-334004
मो. 9460890205

कद आवैला खरूंट
राजस्थानी कविता संग्रह

लेखक : राजेन्द्र जोशी आवरण : चेतन औदिच्य
प्रकाशक : ऋचा (इण्डिया) पब्लिशर्स, बीकानेर
संस्करण : 2018 **पृष्ठ :** 96 **मूल्य :** ₹ 200

हिन्दी और राजस्थानी के कवि राजेन्द्र जोशी की सृजन-यात्रा के कई पड़ाव हमारे सामने आते रहे हैं। वे साहित्य की विभिन्न विधाओं में लिखते रहे हैं और तक सृजनात्मक लेखन के लिए कई संस्थाओं से समाहत हैं। इसलिए उनके लेखन का एक विराट पाठक वर्ग भी है।

कवि लेखक राजेन्द्र जोशी की सद्य प्रकाशित राजस्थानी काव्य कृति 'कद आवैला खरूंट' मानवीय मूल्यों और मान्यताओं से जुड़ी कविताओं का संग्रह है जो एक तरह से पाठक से सीधा संवाद करती हैं और उन्हें जीवन जगत के तमाम रिश्तों की महत्ता से रूबरू कराती है। ऐसे ही रिश्तों से जिन पर आज समय की धुंध लगातार छा रही है।

यह 58 राजस्थानी कविताओं का संग्रह है जिसमें कहीं माँ के प्रति एक आग्रही भाव-बोध है तो कहीं इष्ट देव की अभ्यर्थना के बहाने जीवन के रिश्तों की सार्थक पड़ताल की गई है। वे एक कविता में लिखते हैं-

सुरग-सो दरसाव
जद मां घर मांय बिराजै
मां जद नीसरै घर सूं
घर खाली लखावै
घर, घर नीं रैवे
भाटां रौ ढीगो लागै घर।

उल्लेखनीय है कि राजेन्द्र जोशी ऐसी कविताएं उस दौर में लिख रहे हैं जब परिवार टूट रहे हैं और संख्यातीत माता-पिता वृद्धाश्रमों में रह रहे हैं। एक कविता में कहा गया है-

सूरज चानणै रै सागै
चरणां सीस निवावै है
मां री चमक लेय'र चांदो
रात चानणी गावै है।

कवि का मन जीवन के घावों से लहूलुहान है। जीवन का यह सारा संकट कवि अपने परिवेश में देखता और महसूसता है। इसलिए वह आहत होता है। वह ऐसे घावों पर 'खरूंट' लाने के लिए न केवल सोचता है बल्कि इस हेतु अपने समस्त संभव उपक्रम भी करता है।

इन कविताओं में भाव के स्तर की गहन अनुभूतियां हैं। तथापि मुख्य बात है ऐसी कविताओं की संप्रेषणीयता। संग्रह की 'छोटी रो सुपनो', 'हेत रो घर', 'कोटगेट रो मामलो' तथा 'पतझड़' जैसी कविताएं ऐसे बिम्ब उकेरती हैं जो कवि के जीवन मूल्यों को हमारे सामने रखते हुए भाव-संप्रेषण का कार्य बखूबी करती हैं।

अपनी एक कविता 'अेक जुध और' में कवि राजेन्द्र जोशी ने काल के भाल से सवाल खड़े करते हुए लिखा है-

नीं समझे किसन अर अर्जुन
आज रै जुध री भासा
फगत जुध रौ मैदान कठै
नाजोगा होवता थकां ई
नाजोगा कठै ?

कवि के लिए जीवन के प्रश्नों की पड़ताल सबसे अहम है। इसलिए कवि राजेन्द्र जोशी 'नीं मांडणो अड़ो', 'नीं विक्या सबद', 'काल रा काळा हाथ' और अंत में 'कूंची राज कनै' जैसी कविताएं रचते हुए पड़ताल की अपनी पहल करते हैं। यह स्तुत्य है।

'हेत', 'रेत', 'चेत' शीर्षक के तीन खण्डों में विभक्त इन कविताओं में हमारे परिवेश के कई-कई रंगों के दृश्य सामने आते हैं। खास और से राजस्थान की धरती के विध-विध रूप उभरते हैं। इन रंगों और रूपों को सहेजने का आग्रह करती इन कविताओं के सृजन के लिए कवि राजेन्द्र जोशी साधुवाद के पात्र हैं।

समीक्षक : **सत्यदेव संवितेन्द्र**
उदभव, 45, अनिवाश नगर,
पीपली सर्किल, जोधपुर-342014

शाला प्रांगण से

अपने शाला परिसर में आयोजित समस्त प्रकार की बालोपयोगी एवं शैक्षिक गतिविधियों को पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है अतः आयोजित कार्यक्रमों का प्रतिवेदन बनाकर **shalaprangan.shivira@gmail.com** पर भिजवाकर सहयोग करें।

-व. संपादक

70वाँ गणतंत्र दिवस धूमधाम से समारोहपूर्वक मनाया

चूरू। राजकीय माध्यमिक विद्यालय दांदू (चूरू) में 70वाँ गणतंत्र दिवस धूमधाम से समारोह पूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री लखेन्द्र सिंह राठौड़ उपसरपंच ग्राम पंचायत थे। कार्यक्रम में झंडारोहण विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री मोहन लाल शर्मा ने किया। इस अवसर पर शा.शि. श्री रामचंद्र ढाका के निर्देशन में विद्यार्थियों ने सामूहिक पी.टी. परेड का शानदार प्रदर्शन किया गया। बच्चों ने देश भक्ति से ओत-प्रोत शानदार सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। प्रधानाध्यापक श्री मोहन लाल शर्मा ने विद्यालय के पिछले दो वर्ष के 100% परीक्षा परिणाम के लिए विद्यालय स्टाफ को सम्मानित किया और उपस्थित ग्रामवासियों को आगे भी इसी तरह का परीक्षा परिणाम देने का भरोसा दिलाते हुए कहा कि हम विद्यालय के बच्चों में अच्छी शिक्षा व संस्कार देने के लिए प्रतिबद्ध हैं। विद्यालय में परीक्षा परिणाम सुधार के लिए चलाए जा रहे 'मिशन हैट्रिक' अभियान की ग्रामवासियों ने प्रशंसा की इस अवसर पर गाँव के सर्वश्री हनुमानसिंह सांखला, कानाराम मीणा, भंवरसिंह झाझडिया, विजेंद्रसिंह राठौड़, अर्जुनराम बाबल, गोरधनराम, पूर्णाराम प्रजापत, विद्यालय के शिक्षक सुलतान सिंह, विनोद बुगालिया, रणजीत सिंह, राजेश कुमार, बजरंग लाल आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन श्री राजेन्द्र सुंडा ने किया।

भाटी स्मृति संस्थान द्वारा ₹ 51000 का चेक हदाँ शाला को

बीकानेर। प्रधानाचार्य, राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय, हदाँ (बीकानेर) में भामाशाह सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सरपंच श्रीमती डिम्पल कंवर भाटी ने कहा कि सामाजिक संगठनों के सरोकार से ही ग्रामीण विद्यालयों का बेहतर शैक्षिक उन्नयन हो सकता है। कार्यक्रम में श्रीमती चंद्रा देवी- चाँद सिंह भाटी स्मृति संस्थान

की ओर से पूर्व सी.ओ. श्री कानसिंह भाटी, सामाजिक कार्यकर्ता श्री नरेंद्र सिंह भाटी एवं सरपंच श्रीमती डिम्पल कंवर ने शाला के विज्ञान संकाय की लैब हेतु आवश्यक सामग्री क्रय करने के लिए अखरे रुपए इक्यावन हजार (₹ 51000) का चेक संस्थाप्रधान को प्रदान किया। प्रधानाचार्य श्री कमलेश कुमार मेहरा ने भाटी स्मृति संस्थान का आभार व्यक्त करते हुए बताया कि संस्थान का यह कार्य अनुकरणीय व प्रशंसनीय है। संस्थान की ओर से श्री नरेंद्र सिंह भाटी ने संस्थान का परिचय देते हुए शैक्षिक विकास के लिए निरंतर सहयोग का आश्वासन दिया। कार्यक्रम में शाला परिवार के कार्मिक और गाँव के प्रबुद्धजनों के साथ विद्यालय के बालक-बालिकाएँ उपस्थित रहे।

कोटड़ा स्कूल में पर्यावरण पर बन रही है विप्रो की डॉक्यूमेंट्री फ़िल्म

बीकानेर। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कोटड़ा, तहसील कोलायत, बीकानेर में 'विप्रो फाउंडेशन' के सहयोग से 'बेटर इंडिया' मीडिया ग्रुप द्वारा एक डॉक्यूमेंट्री फ़िल्म बन रही है। 28 से 31 जनवरी 2019 तक विद्यालय परिसर में व कोटड़ा गाँव में इसकी शूटिंग की गई। 'बेटर इंडिया' बैंगलोर से इस डॉक्यूमेंट्री फ़िल्म के निदेशक श्री तौसीफ़ रज़ा

व मुम्बई से फ़ोटोग्राफी डायरेक्टर श्री शानू राज सहित 6 सदस्यों की टीम कोटड़ा गाँव पहुँची। जिसमें एक डायरेक्टर, 3 कैमरा मेन, एक साउंड रिकॉर्डिस्ट व एक स्पॉटबॉय शामिल हैं। जल प्रबंधन, जैवविविधता व कचरा प्रबंधन पर आधारित यह फ़िल्म 'विप्रो फाउंडेशन' द्वारा बनाई जा रही है। 'विप्रो फाउंडेशन' द्वारा देश भर से एक मात्र कोटड़ा विद्यालय को ही डॉक्यूमेंट्री फ़िल्म हेतु चयन किया गया है। यह कोटड़ा गाँव व राजकीय विद्यालय के लिए गौरव का विषय है। 2016 में विप्रो द्वारा कोटड़ा विद्यालय को प्रस्ताव प्राप्त हुआ था। जिसमें 1 लाख रुपये का चेक व ट्राफी विद्यालय को प्राप्त हुईं थीं। प्रधानाचार्य श्री अवधेश शर्मा, दल प्रभारी श्री नरेन्द्र सिंह रावत व स्काउट गाइड सहित समस्त विद्यालय परिवार इस फिल्मांकन से बहुत रोमांचित व प्रसन्न हैं। कोटड़ा के ग्रामवासियों ने भी इस फिल्मांकन में भाग लिया है। गाँव की गलियों, घरों व चौपाल पर भी कुछ दृश्य फिल्माए गए।

भित्ति पत्रिका 'कुरजां' के वसन्त पंचमी अंक का लोकार्पण

बीकानेर। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रामबाग, (लूणकरणसर) की भित्ति पत्रिका 'कुरजां' के वसंत पंचमी अंक के लोकार्पण समारोह में उरमूल सेतु संस्थान के सचिव श्री रामेश्वर लाल गोदारा ने कहा कि विद्यार्थी जीवन में रचनात्मकता के विकास में भित्ति पत्रिका की अहम भूमिका है। बाल मन के रचनात्मक विकास के लिए

विद्यालय स्तर पर इस तरह की गतिविधियाँ अत्यंत उपादेय है। उरमूल के स्वास्थ्य कार्यक्रम प्रभारी श्री मुखराम ने कहा कि पाठ्यक्रम की पुस्तकों के अध्ययन के साथ सहशैक्षिक गतिविधियों में निरंतर सहभागिता बेहद ज़रूरी है। पत्रिका के संयोजक श्री रामवीर रैबारी ने कहा कि ग्रामीण अंचल के विद्यार्थियों में बहुत प्रतिभा है, उसे उचित मार्गदर्शन व मंच प्रदान करने की आवश्यकता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रधानाचार्य डॉ. मदन गोपाल लढ़ा ने कहा कि तकनीक के इस युग में बाल मन को सर्जनात्मकता की ओर उन्मुख करना एक बड़ी चुनौती है। कार्यक्रम में व्याख्याता श्री उमराव सिंह यादव, शारीरिक शिक्षक श्री राधेश्याम मीणा, राउप्रावि. घेसूरा के प्रधानाध्यापक श्री राजेंद्र सिंह ढाका, शिक्षक श्री राजेंद्र कुमार भादू आदि ने विचार प्रकट किए। इस अवसर पर भित्ति पत्रिका में योगदान करने वाले रचनाधर्मी विद्यार्थियों का सम्मान भी किया गया।

गणतंत्र दिवस समारोह में भामाशाहों का सम्मान

चूरू। राजकीय माध्यमिक विद्यालय डूँगरास अगूणा में 70 वें गणतंत्र दिवस समारोह में विद्यालय में मौलिक संसाधन उपलब्ध कराने वाले भामाशाहों को सम्मानित किया गया। जिनमें भामाशाह सर्वश्री झूमरमल खिलेरी, खेतान परिवार, डूंगरास अगूणा, रतनलाल सुण्डा, लिछमनराम खिलेरी, श्रीराम भांभू, मूलाराम खिलेरी, पदमाराम श्योराण, लालूराम कालरा, कुन्दनमल मण्डार, रामनिवास खिलेरी, किशनाराम सुण्डा, हीराराम मोडसरा, बाघाराम मोडसरा, आशाराम बिस्सू व नवयुवक मण्डल सेवा समिति के पदाधिकारियों का माल्यार्पण कर एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान कर संस्थाप्रधान श्री विरेन्द्र कुमार मीना ने सम्मानित किया। उपस्थित भामाशाहों ने विद्यालय के खेल मैदान की चार दीवारी निर्माण हेतु आर्थिक सहयोग प्रदान किया । संस्थाप्रधान ने बताया कि 11,000 रुपये श्री गुलाराम जी सुण्डा, 11,000 रुपये श्री बंशीलाल सूण्डा व ब्रदर्स, 11,000 रुपये श्री गिरधारी लाल जी प्रजापत व ब्रदर्स, 11,000 रुपये श्री मांगीलाल प्रजापत, 11,000 रुपये श्री फेफाराम जी भांभू, 5,100 रुपये श्री मानसिंह खीची व ब्रदर्स, 5,100 रुपये श्री पदमाराम जी श्योराण, 5,100 रुपये श्री मोहनसिंह जी राठौड़ व ब्रदर्स, 5,100 रुपये श्री हनुमानसिंह राजपुरोहित, 5,100 रुपये श्री मूलराम जी खिलेरी व 2,100 रुपये श्री पदमाराम जी प्रजापत से प्राप्त हुए। इस अवसर पर श्रीमती कमलादेवी, श्रीमती धन्नीदेवी पत्नीश्री मघाराम जी प्रजापत ने खेल मैदान के गेट निर्माण मय पिलर व साइन बोर्ड निर्माण की घोषणा की। संस्थाप्रधान ने सभी भामाशाहों एवं आगन्तुकों का शाला परिवार की ओर से आभार व्यक्त किया।

कापरेन के स्टेशन स्कूल में भामाशाह की आलमारी भेंट

बूंदी। राजकीय माध्यमिक विद्यालय, कापरेन में भामाशाह सम्मान समारोह आयोजित किया गया । इस अवसर पर विद्यालय परिवार के द्वारा

भामाशाह एवं पूर्व शिक्षक श्री भँवरलाल शर्मा ने विद्यालय को आलमारी भेंट करने पर शाला परिवार की ओर से संस्थाप्रधान ने सम्मानित किया । आयोजित सम्मान समारोह के मुख्य अतिथि राजस्थान शिक्षक संघ (राष्ट्रीय) के प्रदेश संरक्षक श्री चौथमल सनाढ्य ने इसे अनुकरणीय बताते हुए कहा कि इससे हम सभी को प्रेरणा लेकर राजकीय शालाओं में भौतिक सुविधाओं को बढ़ाने में यथाशक्ति सहयोग करना चाहिए। विद्यालय के संस्थाप्रधान श्री विष्णुप्रकाश शृंगी ने भामाशाह श्री शर्मा का बहुमान किया। इस अवसर पर सर्वश्री मोहनलाल शर्मा, महावीर प्रसाद गौतम, रामकेश गोचर, केदारलाल मीना, घनश्याम सिंह, धनकरण मीना, बाबूलाल कारपेन्टर, परमानंद मेहरा, मीनाक्षी श्रृंगी, कृष्णा गोचर, लेखराज बैरागी, अकरम हुसैन, रुकमणी गोचर सहित स्टाफ सदस्यों ने भामाशाह का आभार व्यक्त किया।

ऐपगुरु इमरान खान का पुरस्कृत शिक्षक फोरम बाड़मेर द्वारा स्वागत

बाड़मेर। मानव संसाधन विकास मंत्रालय को 50 निःशुल्क ऐप समर्पित करने वाले ऐपगुरु श्री इमरान खान का रेलवे स्टेशन बालोतरा पहुँचने पर पुरस्कृत शिक्षक फोरम बाड़मेर द्वारा स्वागत किया गया।

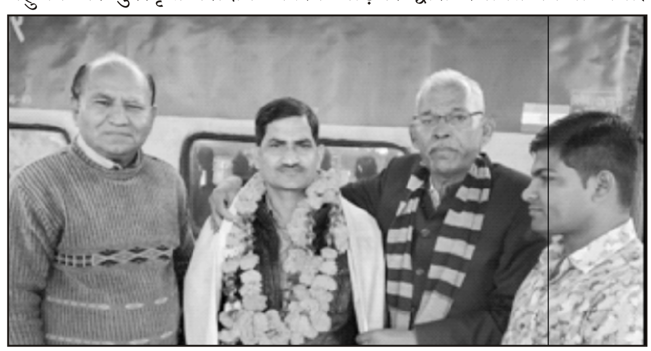

पुरस्कृत शिक्षक फोरम के जिलाध्यक्ष श्री सालगराम परिहार एवं महासचिव श्री दत्ताराम खारवाल ने शॉल ओढ़ाकर एवं इंजीनियर श्री चेतन बोस ने माला पहनाकर ऐपगुरु श्री इमरान खान का बहुमान किया। इस अवसर पर श्री इमरान खान ने कहा कि 'दिशारी ऐप' युवाओं की प्रतियोगी परीक्षा में मदद करने वाला 'ऐप' है। राजस्थान के लाखों छात्रों ने ऐप का उपयोग कर

प्रामाणिकता सिद्ध की है। श्री परिहार ने कहा कि नवीन तकनीक से युवाओं को सीखने का अवसर मिलता है तथा प्रतियोगी परीक्षा में सफलता प्राप्त करने की राह आसान होती है। आधुनिक तकनीक से राजस्थान का गौरव अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी बढ़ा है।

निर्भीक होकर शत प्रतिशत मतदान कर लोकतंत्र को बनाएं मजबूत..

बीकानेर। राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय शिवनगर में राष्ट्रीय मतदाता दिवस मनाया व बच्चों को शपथ दिलवाई गई। कार्यक्रम अधिकारी श्री मोहरसिंह सलावद ने बच्चों को संबोधित करते हुए कहा कि

जो आपके परिवार का कोई सदस्य व आसपास रहने वाले पड़ोसी 18 वर्ष की आयु पूरी कर चुका है वो अपना नाम मतदाता सूची में जुड़वाएं व आगामी लोकसभा चुनावों में अपने मताधिकार का प्रयोग करें, व्याख्याता श्री गोवर्धन लाल गोदारा ने मतदान के महत्त्व के बारे में विस्तार से बताया।

इसी विद्यालय में एक अन्य कार्यक्रम के तहत सड़क सुरक्षा सप्ताह मनाया गया। जिसके तहत बिना लाईसेंस गाड़ी नहीं चलाने की बच्चों को शपथ दिलाई गई। इस कार्यक्रम में श्री मोहरसिंह सलावद ने कहा कि इस बार सड़क परिवहन एवं राज मार्ग मंत्रालय की सड़क सुरक्षा सप्ताह की थीम 'सड़क सुरक्षा जीवन रक्षा' है इसके अनुसार हमें गाड़ी चलाते समय विभाग के नियमों का पालन करना चाहिए और दो पहिया वाहन चालकों को हमेशा हेलमेट का प्रयोग करना चाहिए साथ ही बिना लाईसेंस गाड़ी नहीं चलाना चाहिए। कार्यवाहक प्रधानाचार्य श्री सुभाष चन्द्र न्योल ने सभी स्टाफ और बच्चों को शपथ दिलवाई की आज के बाद ना तो हम, ना ही परिवार के सदस्य परिवहन विभाग के नियमों का उल्लंघन नहीं करेंगे, इस अवसर पर सर्व श्री गोवर्धन लाल, मोहरसिंह सलावद, सुजानसिंह, रणछोड़ सिंह,तेजपाल, दयाराम, बहादुर सिंह, प्रेमसिंह, गणेशराम, भंवर सिंह,प्रभु सिंह, हरिशपाल आदि मौजूद थे।

भामाशाह की ओर से जूते-मोजे वितरण

भीलवाड़ा। राजकीय प्राथमिक विद्यालय करणपुरा में अध्ययनरत सभी छात्रों को जूते एवं मोजे वितरित किए। कार्यक्रम के दौरान श्रीमान त्रिलोक चन्द मीना उपखंड अधिकारी महोदय मांडलगढ़ एवं विशिष्ट अतिथि श्रीमान बनवारी लाल जीनगर पीईईओ बलदरखा उपस्थित रहे। श्रीमती शांति देवी जीनगर निवासी काछोला (मांडलगढ़) एल.एच.बी. श्यामपुरा, भीलवाड़ा ने अपने पति स्व. श्री रमेश चन्द्र जीनगर की पुण्य स्मृति में विद्यालय में अध्ययनरत 30 छात्र-छात्राओं को अपनी ओर से हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी जूते एवं मोजे उपलब्ध कराए, जिन्हें अतिथिगणों द्वारा समारोहपूर्वक वितरित किया गया। इस अवसर पर शाला की

संस्थाप्रधान श्रीमती सुमन जीनगर ने भामाशाह श्रीमती शान्ति देवी जीनगर का आभार व्यक्त किया।

विशेष शिक्षिका स्नेहलता शर्मा एशिया प्राइड अवार्ड-2018 से सम्मानित

भरतपुर। राजकीय प्राथमिक विघालय, बाजीतपुरा, की विशेष शिक्षिका श्रीमती स्नेहलता शर्मा को गत 10 वर्षो से विशेष शिक्षा, दिव्यांग जन सेवा क्षेत्र की उत्कृष्ट सेवाओं एवं सामाजिक सेवा क्षेत्र के लिए एंटीकरप्शन फाउंडेशन ऑफ इण्डिया द्वारा एशिया प्राइड अवार्ड-2018 से देश-विदेश की हस्तियों के साथ फिल्म अभिनेता रजामुराद, कतर देश की अन्तर्राष्ट्रीय डायरेक्टर रश्मि अग्रवाल एवं कतर देश के एम. एस. भुखारी द्वारा हरियाणा के करनाल विवान होटल में 16 दिसम्बर 2018 को सम्मानित किया गया।श्रीमती शर्मा ने बताया कि मुझे 4 राष्ट्रीय, 2 राजकीय राज्य स्तरीय एवं 9 राज्य स्तरीय अवार्ड विभिन्न प्रतिष्ठित सामाजिक संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया जा चुका है।

इलेक्ट्रिकल सोसायटी ने गुपड़ी स्कूल में किया फर्नीचर भेंट

उदयपुर। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, गुपड़ी में भामाशाह सम्मान समारोह आयोजित हुआ। जिसकी अध्यक्षता प्रधानाचार्य श्रीमती मोनिका जोशी, मुख्य अतिथि उदयपुर इलेक्ट्रिकल सोसायटी के अध्यक्ष श्री हेमंत ओसवाल, अति विशिष्ट अतिथि सोसायटी के सचिव श्री विनोद जैन, सेवा प्रकल्प के संयोजक श्री अनिल जैन, सुरेश व श्री गजेन्द्र जैन थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में सोसायटी सदस्य सर्वश्री मनीष जैन, रोहित जारोली, आशीष कोठारी, कमलेश कोठारी, पंकज भाणावत, पुष्पेंद्र जैन व हरीश भाई थे। उदयपुर इलेक्ट्रिकल सोसायटी के द्वारा राउमावि गुपड़ी को 51 टेबल-स्टूल भेंट की। इस अवसर पर अतिथियों का स्वागत तिलक, माला मोठड़ा और ऊपरणा पहनाकर किया गया । मुख्य अतिथि श्री जैन ने अपने जन्मदिन के अवसर पर अल्पाहार की व्यवस्था की। संस्थाप्रधान के अलावा श्री हरिश भाई व आशीष कोठारी ने समारोह को संबोधित किया जिसमें अतिथियों ने सही-गलत को निर्णय में शिक्षा को महत्त्वपूर्ण बताते हुए कहा कि कार्य का चयन, दोस्तों का चयन आदि में सही-गलत के आधार पर चयन करें न की लाभ-हानि या सरल-कठिन के आधार पर। सही समय पर सही काम सही ढंग से किया जाए तो अवश्य ही सफलता मिलती है। भामाशाह श्री आशीष कोठारी ने कक्षा 10 की प्रतिभावान छात्र देवीलाल गायरी को ₹ 500 का नकद पुरस्कार दिया। संचालन श्री मंगलकुमार जैन वरि.अध्यापक ने किया। प्रभारी श्री रईस मौहम्मद खान ने सभी आगुन्तकों व अतिथियो को शाला परिवार की ओर से धन्यवाद ज्ञापित किया।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

अलवर

रा.उ.मा.वि., भूलेरी-रेणी में श्री नन्द लाल मीना द्वारा विद्यालय परिसर की पुताई, समोसम कलर, पेन्टकार्य एवं सीनेरी कार्य में सहयोग जिसकी लागत 21,000 रुपये, श्री बाबूलाल मीना से 5,100 रुपये प्राप्त, सर्व श्री वीरचन्द मीना, ओम प्रकाश मीना प्रत्येक से 3,100-3,100 रुपये प्राप्त, श्री सुल्तान, श्री योगेन्द्र, श्री केदार से अर्थात् तीनों ने मिलकर विद्यालय की पुताई, पेन्टकार्य, सीनेरी कार्य में सहयोग हेतु 3,100 रुपये प्राप्त, सर्वश्री कान्त सैदावत, अर्जुन लाल मीना (सरपंच), अमर चन्द (फौजी), नानगराम (प्रधानाचार्य), सुरेश चन्द सैनी प्रत्येक से 2,100-2,100 रुपये विद्यालय परिसर की पुताई, पेन्ट कार्य, सीनेरी कार्य में सहयोग हेतु प्राप्त, श्री जगन प्रसाद मीना से 1,600 रुपये विद्यालय परिसर की पुताई, समोसम कलर पेन्ट कार्य एवं सीनेरी कार्य में सहयोग हेतु प्राप्त, सर्व श्री रोशन लाल मीना, नारायण सिंह मीना, रमेश चन्द मीना, बबलीराम मीना, योगेश कुमार मीना, राजेश कुमार मीना से 1,100-1,100 रुपये विद्यालय परिसर की पुताई, समोसम कलर, पेन्ट कार्य एवं सीनेरी कार्य में सहयोग हेतु प्राप्त, सर्व श्री मूलचन्द सैनी, पोलाराम मीना प्रत्येक से 500-500 रुपये विद्यालय परिसर में पुताई, समोसम कलर, पेन्टकार्य एवं सीनेरी कार्य में सहयोग हेतु प्राप्त, समस्त स्टाफ सदस्य भुलेरी एवं समस्त ग्रामवासी भूलेरी से 5,900 रुपये विद्यालय परिसर में पुताई, समोसम कलर, पेन्ट कार्य एवं सीनेरी कार्य में सहयोग हेतु प्राप्त।

दौसा

रा.आ.मा.वि., मेहन्दीपुर बालाजी तह. सिकराय को श्री ज्योति नागपाल, पूर्व सरपंच श्रीमती ममता सिंह द्वारा विद्यालय में नलकूप एवं कमरे की मरम्मत हेतु 1,00,000 (एक लाख रुपये) विद्यालय को दिए गए।

सीकर

रा.आ.उ.मा.वि., साँगलिया को वैद्य श्री केशरमल सैन द्वारा विद्यालय के कक्षा 1 से 5 तक व आंगनबाड़ी केन्द्र के 70 छात्र-छात्राओं को गरम कोट दिए गए जिसकी लागत 15,800 रुपये। **रा.मा.वि., भींचरी, फतेहपुर** को श्री इकबाल खान उर्फ मोतीखान गाँव-राजास, तहसील-लक्ष्मणगढ़ द्वारा विद्यालय विकास में 51,000 रुपये (इक्यावन हजार रुपये) का दान दिया, श्री मनुद्दीन खान गाँव भींचरी हाल निवास जयपुर से 50,000 रुपये (पचास हजार रुपये) विद्यालय विकास में दान दिया।

जालोर

रा.आ.उ.मा.वि., मिठूड़ा तह. आहोर में सर्व श्री भंवरलाल धाँची, रमेश कुमार धाँची, मूलगिरी से कक्षा-कक्ष का निर्माण हेतु प्रत्येक से 04-04 लाख रुपये प्राप्त हुए, श्री महेन्द्र सिंह से एक माईक सेट मय स्पीकर प्राप्त हुआ जिसकी लागत 24,000 रुपये।

हमारे भामाशाह

भामाशाहों के अवदान का वर्णन प्रतिमाह इस कॉलम में कर पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है। आइये, आप भी इसमें सहभागी बनें। **-व. संपादक**

भीलवाड़ा

रा.मा.वि. बड़ाछ (रतनपुरा) तह. आसीन्द को स्थानीय ग्रामीण भामाशाहों से आटा चक्की प्राप्त हुई जिसकी लागत अनुमानित 14,500 रुपये तथा एक अलमारी प्राप्त जिसकी लागत 7,500 रु., 25 लीटर का एक प्रेशर कुकर, एक गैस टंकी प्राप्त, श्री अरुण कुमार शर्मा द्वारा सेवानिवृत्ति के अवसर पर एक एलईडी. टीवी. विद्यालय को भेंट जिसकी लागत 11,265 रुपये तथा 5,800 रुपये की लागत के स्वेटर क्रमशः श्रीमान लोढ़ा साहब व गुप्त दान द्वारा प्राप्त, 5,000 रुपये के स्कूल बेग मेजर सिटी सोल्यूशन भीलवाड़ा की तरफ से वितरित किए गए। **रा.उ.मा.वि., रूपाहेली खुर्द, पं.स. बनेड़ा** में शारीरिक शिक्षक श्री जितेन्द्र सिंह राठौड़ द्वारा 51,000 रुपये की राशि स्टेज निर्माण हेतु दी तथा विद्यालय परिवार एवं ग्राम वासियों द्वारा विद्यालय विकास के लिए अक्षय पेटिका में कुल 25,810 रुपये का सहयोग दिया गया।

चूरू

रा.मा.वि., डूंगरास अगूणा, तह. सुजानगढ़ में विद्यालय के खेल मैदान की चार दिवारी निर्माण हेतु निम्न भामाशाहों का योगदान इस प्रकार है-सर्वश्री गुलाराम सुण्डा, बंशीलाल सुण्डा एण्ड ब्रदर्स, गिरधारी लाल प्रजापत एण्ड ब्रदर्स, मांगीलाल प्रजापत प्रत्येक से 11,000-11,000 रुपये प्राप्त, सर्वश्री मानसिंह खिंची एण्ड ब्रदर्स, पदमा राम श्योराण, मोहनसिंह राठौड़ एण्ड ब्रदर्स, हनुमान सिंह राजपुरोहित, मूलाराम खिलेरी प्रत्येक से 5,100-5,100 रुपये प्राप्त, श्री पदमाराम प्रजापत से 2,100 रुपये प्राप्त हुए।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

घोषणा-पत्र
(फार्म नं. 4)

शिविरा पत्रिका के स्वामित्व और अन्य विवरण, जो केन्द्रीय धारा 1956 के अन्तर्गत समाचार-पत्र के रजिस्ट्रेशन के लिए प्रकाशित करने आवश्यक हैं।

1. प्रकाशन संस्थान	:	निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
2. प्रकाशन अवधि	:	मासिक
3. मुद्रक	:	नथमल डिडेल
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
4. प्रकाशक	:	नथमल डिडेल
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
5. प्रधान सम्पादक	:	नथमल डिडेल
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

मैं, नथमल डिडेल घोषित करता हूँ कि उपर्युक्त विवरण मेरी जानकारी में एवं विश्वास के साथ सत्य और वास्तविकता पर आधारित है।

(नथमल डिडेल) आई.ए.एस
निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान,
बीकानेर

शिविरा पत्रिका (मासिक) : मार्च, 2019 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित। वरिष्ठ सम्पादकः संतोष शर्मा, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

चित्रवीथिका : माह मार्च, 2019

गणतंत्र दिवस समारोह-2019 : निदेशालय माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर में झण्डारोहण के पश्चात उद्‌बोधन देते हुए निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान श्रीमान नथमल डिडेल एवं निदेशक प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान श्रीमान ओम प्रकाश कसेरा। सम्मानित कर्मचारियों के साथ उपस्थित अधिकारीगण व कर्मचारीगण।

माननीय शिक्षा मंत्री (स्वतन्त्र प्रभार) श्रीमान गोविन्द सिंह डोटासरा एवं अतिथिगण पुरस्कृत शिक्षक फोरम राजस्थान द्वारा प्रकाशित सैकण्डरी बोर्ड परीक्षा तैयारी टिप्स फॉर टॉप मार्क्स-2019 का विमोचन करते हुए।

माननीय शिक्षा मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमान गोविन्द सिंह डोटासरा व अतिथिगण बोर्ड परीक्षा 2019 की तैयारी हेतु संयोजक जिला समान परीक्षा योजना, चूरू द्वारा तैयार किए गए प्रश्न बैंक का विमोचन करते हुए।

राजकीय नेत्रहीन छात्रावासित उच्च माध्यमिक विद्यालय, बीकानेर में सीएसआर. से 15 लाख की लागत से बनने वाले रसोईघर व डाइनिंग हॉल के शिलान्यास समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि माननीय शिक्षा मंत्री (स्वतन्त्र प्रभार) श्रीमान गोविन्द सिंह डोटासरा, माननीय उच्च शिक्षा मंत्री श्रीमान भंवर सिंह भाटी, NLCIL के प्रोजेक्ट हैड श्री ई. ईसाइकमुथु व अतिथिगण साथ हैं विद्यालय स्टाफ एवं विद्यार्थीगण।

स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल स्कूल, ऊपनी (श्री डूंगरगढ़) बीकानेर में प्री-प्राइमरी स्कूल एवं बालिका छात्रावास के शिलान्यास समारोह में मुख्य अतिथि माननीय शिक्षा मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमान् गोविन्द सिंह डोटासरा; विशिष्ट अतिथि माननीय उच्च शिक्षा मंत्री श्रीमान भंवरसिंह भाटी; विधायक (खाजूवाला) श्रीमान गोविन्दराम मेघवाल; पूर्व गृह राज्य मंत्री श्रीमान वीरेन्द्र बेनीवाल; पूर्व विधायक (श्री डूंगरगढ़) श्रीमान मंगलाराम गोदारा; निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान श्रीमान नथमल डिडेल; मुख्य जिशिअ. बीकानेर श्री महावीर सिंह पूनिया; अतिथिगण; विद्यालय स्टाफ, छात्र-छात्राओं व अभिभावकों को सम्बोधित करते हुए।